यूनियन धारा
Union Dhara

जिल्द. 48, सं. 2 VOL.XXXXVIII NO. 2, मुंबई अप्रैल-जून, 2022

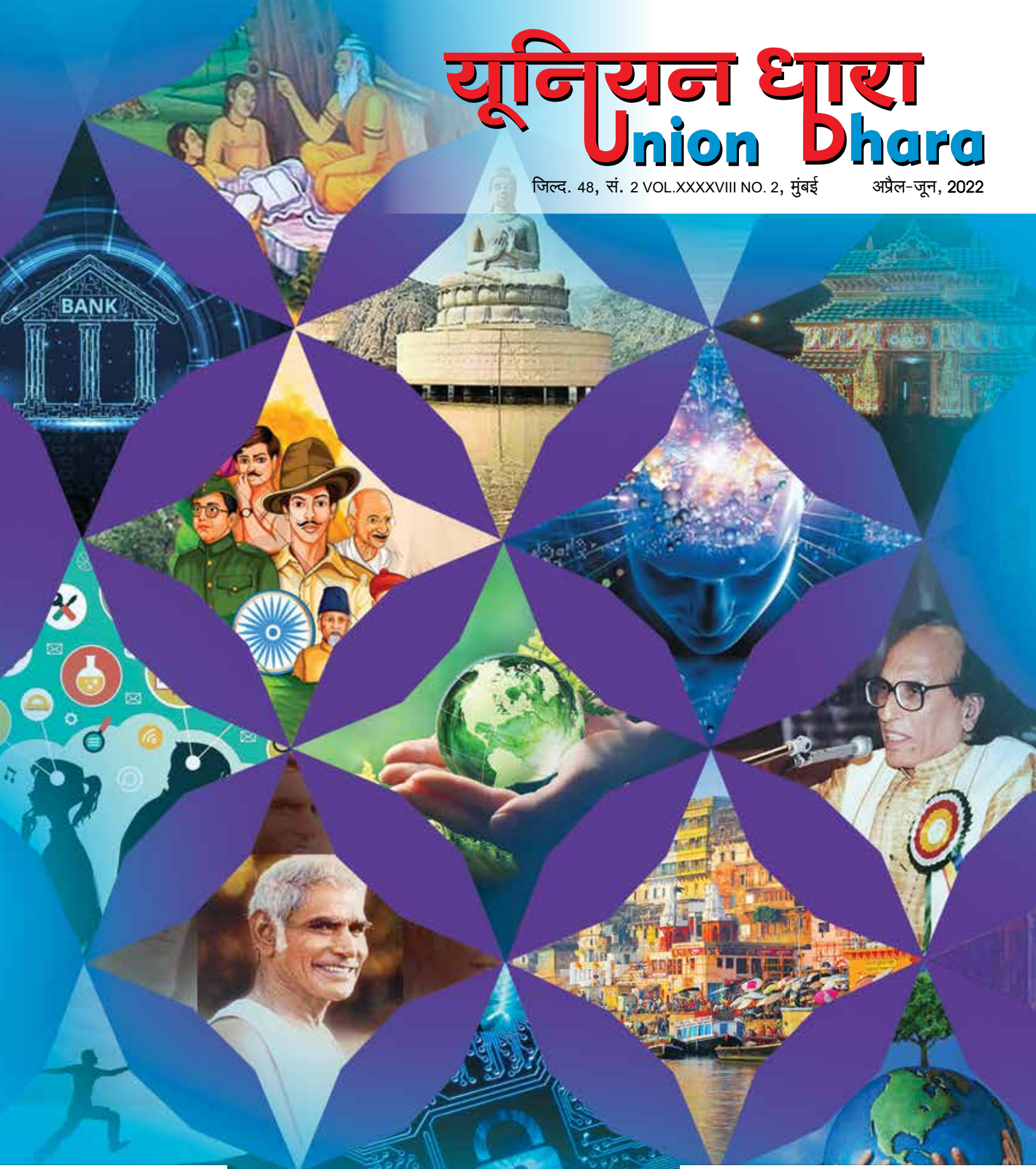

आज़ादी का अमृत महोत्सव

गृहपत्रिका • HOUSE MAGAZINE OF

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India

भारत सरकार का उपक्रम A Government of India Undertaking

आन्ध्रा Andhra कार्पोरेशन Corporation

अनुक्रमणिका Contents

मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन)
लाल सिंह

Chief General Manager (HR)
Lal Singh

संपादक
डॉ. सुलभा कोरे

Editor
Dr. Sulabha Kore

संपादकीय सलाहकार
ए. के. विनोद
शैलेश कुमार सिंह
एम. वेंकटेश

Editorial Advisors
A. K. Vinod
Shailesh Kumar Singh
M. Venkatesh

Printed and published by **Dr. Sulabha Kore** on behalf of Union Bank of India and printed at **UCHITHA GRAPHIC PRINTER PVT. LTD.** 65, Ideal Ind. Estate, Mathuradas Mill Compound, S. B. Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013. and published at Union Bank Bhavan, Nariman Point, Mumbai-400021.

Editor - **Dr. Sulabha Kore**
E-mail : sulabhakore@unionbankofindia.bank
Our Address : Union Dhara,
Ground Floor, Union Bank Bhavan,
239, Vidhan Bhavan Marg,
Nariman Point, Mumbai - 400 021.
E-mail : uniondhara@unionbankofindia.bank
Mob. No. 9820468919
Tel.: 022-22896517

इस पत्रिका में व्यक्त विचारों से प्रबंधन का सहमत होना अनिवार्य नहीं है.

Designed and Printed at
UCHITHA GRAPHIC PRINTERS PVT. LTD.,
Mumbai-400 013

यूनियन धारा UNION DHARA

अप्रैल-जून, 2022 April-June, 2022

प्रकाशन तिथि : 13.08.2022

- परिदृश्य 3
- संपादकीय 4
- डिजिटल लर्निंग जरूरत एवं महत्व 5
- साहित्य जगत से : बशीर बद्र 6-7
- काव्य धारा 8-9
- What's New - Demystifying Neo Banks 10
- Learning & Development under the' New Normal' - significant strategies 11-12
- ओएनडीसी : ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स 13
- Guruvayur Shree Krishna Temple - A Unique Experience 14-15
- Retail Lending : An Ever Changing Landscape in India 16-17
- खुबसूरत एवं ऐतिहासिक नगर : राजगीर 18-19
- Cyber security awareness & challenges in banking sector 20
- What is Cess & Surcharge ? 21
- आजादी के 75 वर्ष - सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता 22
- Monday Motivation 23
- शकुन-अपशकुन: अंधविश्वास या वैज्ञानिक तर्क 24
- वाराणसी - अलौकिकता और लौकिकता का व्यतिरेक 25-26
- 6 ways to promote ESG initiatives in bank 27
- दोस्ती 28
- A letter to life 29
- ईमानदारी एक जीवन शैली 30
- Emotional Intelligence 31
- बाबा आमटे- एक जन सेवक 32-33
- रहिमन पानी राखिये / कार्टून कोना 34-35
- साइबर क्राइम- प्रकार एवं बचाव 36-37
- सेंटर स्प्रेड - बाली 38-39
- कहानी - सर्किट काका 40-42
- हमें गर्व है / The song of the God 43
- डिजिटल लेन देन और डिजिटल करेंसी अब डाकघरों में भी 44
- जीवन की असली सफलता 45-46
- रैनसेमवेअर हमला 47-49
- Ancient vedic education system of India 50-51
- शिखर की ओर 52
- शुभमस्तु 53
- Face in UBI Crowd 54-55
- सेवानिवृत्त जीवन से 56-57
- यूनिवन 58-59
- नयी प्रतियोगिता / परिणाम 60
- पुरस्कार और सम्मान 61
- समाचार दर्शन 62-73
- हेल्थ टिप्स / व्यंजन 74
- आपकी पाती 75
- बैक कवर 76

परिदृश्य
PERSPECTIVE

प्रिय यूनियनाइट्स ,

नमस्कार! आशा है, आप सभी सुरक्षित एवं स्वस्थ होंगे.

बैंक की द्विभाषी गृह पत्रिका 'यूनियन धारा' के माध्यम से मुझे यूनियन बैंक परिवार को संबोधित करने का अवसर प्राप्त हुआ है. इस वित्तीय पावरहाउस का प्रबंध निदेशक एवं सीईओ के रूप में नेतृत्व करने का अवसर प्राप्त होना मुझे गर्व का अनुभव कराता है. आप सभी से मिले प्यार और स्नेह से मैं इतनी अभिभूत हूं कि ऐसा लगता है कि मैं हमेशा से आप के साथ रही हूं. इसके लिए आप सभी का ह्रदय से धन्यवाद.

वर्तमान समय चुनौतियों से भरा है. जैसा कि हम सब जानते हैं, इस दशक में बैंकिंग जगत में बड़े बदलाव आ रहे हैं- चाहे वह उत्पाद, सेवाएं, सिस्टम, प्रौद्योगिकी या ग्राहक आदि हों. आवश्यकता है हम चुनौतियों का सामना करते हुए अपनी ताकत को पहचान कर इन्हें अवसरों में परिवर्तित कर उनका लाभ उठाएं. हमारा लक्ष्य है ग्राहक केंद्रित, प्रौद्योगिकी लाभ, चुनिंदा उत्पादों में बाजार नेतृत्व और हर एक कर्मचारी के समग्र योगदान से प्राप्त विकास के माध्यम से सार्वजनिक क्षेत्र के शीर्ष 3 बैंकों में शामिल होना.

तदनुसार इस दिशा में हम कई पहल कर रहे हैं जैसे नई पीढ़ी के साथ जुडने का कार्यक्रम, फ्रंटलाइन स्टाफ के लिए सौम्य व्यवहार प्रशिक्षण, अग्रिम एवं जमा का वर्टिकलाइजेशन आदि. हम अगले 3 वर्षों में 50₹ डिजिटल ऑनबोर्डिंग की आशा करते हैं. इस दिशा में हमने हैदराबाद में फिनटेक इनोवेशन सेंटर स्थापित किया है. ग्राहक सेवा अनुभव को और उन्नत करने की दिशा में हमने मेटावर्स जैसी पहल भी की है. इसी प्रकार शीघ्र ही नेक्स्ट-जेन कॉल सेंटर भी प्रारंभ किया जाएगा. बाजार नेतृत्व में बने रहते हुए हमने बैंक में कॉर्पोरेट संबंध प्रबंधन कक्ष के साथ-साथ स्वर्ण ऋण, शिक्षा ऋण और बैंक में सह-उधार जैसी कारोबारी विशेषताओं को समर्पित विशेष कक्ष भी स्थापित किए हैं.

इस प्रतिस्पर्धी माहौल में विजेता बनने हेतु, हर स्टाफ सदस्य को चाहिए कि वह बैंक के लिए मूल्य सृजक बनें. मैंने सभी यूनियनाइट्स से खुदरा ऋणों के साथ-साथ कासा जमा प्रत्येक के लिए दो ग्राहक लाने का आह्वान किया था जिसके परिणामस्वरूप और स्टाफ और उनके परिवार के सदस्यों द्वारा लायी गयी अनेक लीड्स के साथ उनकी सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ देखकर मुझे प्रसन्नता हो रही है. आगामी त्योहारी मौसम में हमें मार्च, 2023 तक के अपने 19 ट्रिलियन रुपये के कारोबारी लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में इस गति को कायम रखना होगा. यह यूनियनाइट्स को चालू वित्त वर्ष के लिए सर्वाधिक कार्यनिष्पादन संबंधित प्रोत्साहन (पीएलआई) प्राप्त करने में सक्षम बनाएगा.

आपको और आपके परिजनों को भविष्य के लिए अनेक शुभकामनाएं. अपने लिए हमने जो लक्ष्य निर्धारित किए हैं, उन्हें प्राप्त करने में हम पूर्ण प्रतिबध्दता के साथ सफल रहें.

(ए. मणिमेखलै)
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

Dear Unionites,

Greetings! Trust you are all keeping safe and healthy.

I have the pleasure of reaching out to the Union Bank family through our in-house bi-lingual journal 'Union Dhara'. I am honoured to lead this financial powerhouse as the MD & CEO. I am truly humbled by the love and affection received, making me feel that I have always been one of you. Thank you.

These are challenging times. Banking, as we know today, will undergo a sea change this decade - be it products, services, systems, technology, clientele, etc. We need to rise to the challenges and leverage our strengths to convert these into opportunities. Our vision is to be among the Top 3 Public Sector Banks through customer centricity, leveraging technology, market leadership in select products and growth through a holistic contribution from each staff member.

We have accordingly been taking many initiatives like connect program with millennials, hospitality training to frontline staff, verticalization of credit and deposits etc. We aspire for 50% Digital Onboarding in the next 3 years. In this direction, we have already established a Fintech Innovation Centre in Hyderabad. We have also taken initiatives like Metaverse for upgrading the customer service experience. Likewise the Next-Gen Call Centre will also be launched shortly. Pursuing market leadership, we have setup a Corporate Relationship Management Cell as well as business specific dedicated cells for Gold Loan, Education Loan, and Co-Lending in the Bank.

To be a winner in this competitive environment, each staff member needs to be value creator for the Bank. I had called upon all Unionites to bring in two customers each for retail loans as well as CASA deposits and I am glad to see a positive response with several leads brought by staff and their family members. We have to build on this momentum with the festive season ahead to realise our Rs 19 trillion business goal by March, 2023. It will enable Unionites get the highest performance linked incentives (PLIs) for the current financial year.

Wishing you and your family the very best in the days ahead. May we achieve the objective we have set for ourselves with total commitment.

(A. Manimekhalai)
Managing Director & CEO

संपादकीय
EDITORIAL

साथियो,

इस वर्ष हम अपने देश की आजादी की 75वीं वर्षगांठ यानी आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं. यह भारतीय स्वतंत्रता के 75 वर्ष को एवं इसके लोगों, संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास का उत्सव मनाने के लिए भारत सरकार की एक पहल है. हमारी कॉर्पोरेट गृहपत्रिका 'यूनियन धारा' ने अपने इस अंक में भारत की इस गौरवपूर्ण यात्रा को प्रमुखता से कवर किया है.

यह एक सामान्य अंक भी है जिसमें कई बैंकिंग गतिविधियों, सफलताओं और समाचारों के साथ-साथ हमारे नियमित कॉलम्स और कुछ बहुत ही रोचक, प्रेरक और प्रेरणादायक लेख जैसे ओएनडीसी, डेमिस्टिफाइंग नियो बैंक एवं गुरुवायूर मंदिर, राजगीर और वाराणसी जैसे दर्शनीय स्थल भी शामिल हैं.

एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व 'बाबा आमटे' को समाहित करने वाली एक रचना को भी हमने इस अंक में सम्मिलित किया है. साथ में इस अंक में आपके लिए पढ़ने हेतु, खुशी पाने एवं अपना ज्ञान बढ़ाने हेतु बहुत कुछ है.

हमारे सेवानिवृत्त, पदोन्नत और विशेष उपलब्धि हासिल करने वाले कर्मचारियों को भी हमने इस अंक में शामिल किया है जो हमारे लिए गर्व का विषय है.

कुछ जानकारी, समाचार, लेख और आपकी रचनात्मकता जैसे कहानियाँ, कविताएँ और तस्वीरें भी इस अंक का हिस्सा बनी हुई हैं.

हमारे नए एवं ओजस्वी नेतृत्व, आदरणीय एमडी और सीईओ, सुश्री ए. मणिमेखलै के साथ हमने नए बेंचमार्क और नए क्षितिज स्थापित करने का कार्य शुरू कर दिया है. हम निश्चित रूप से रूपांतरण और परिवर्तन से भरे एक शानदार भविष्य की आशा करते हैं.

इस अंक को पढ़िए और आनंद लीजिए और खुद को सदैव अपडेटेड रखिए. हमारी सामग्री और गुणवत्ता में सुधार के लिए आपकी प्रतिक्रिया का हरदम स्वागत रहेगा.

धन्यवाद.

आपको आगामी त्योहारों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं.

आपकी,

डॉ. सुलभा कोरे

Friends,

This year we are celebrating the 75th anniversary of our country's Independence i.e. Azadi Ka Amrit Mahotsav. This is an initiative of Government of India to celebrate & commemorate 75 years of independence and the glorious history of its people, culture and achievements. Our Corporate magazine 'Union Dhara' will be covering the proud journey of India in this issue prominently.

This is also a general issue, covering many banking activities, successes and news along with our regular columns and some very interesting, motivational and inspirational articles such as ONDC, Demystifying Neo Banks, and places of visit like the Guruvayur Temple, Rajgir and Varanasi.

We are also focusing on an important personality 'Baba Amte' with a lot more to read, enjoy and enhance our knowledge.

Our retired, promoted and achiever employees are also included to give us a lot to be proud of.

Some information, news, articles and your creativity such as stories, poetries and clicks are also a part of this feature.

Under the dynamic new Leadership of our respected MD & CEO, Ms. A. Manimekhalai, we have already begun setting new benchmarks and horizons and are eagerly looking forward to a brilliant future full of transformation and change.

Do enjoy reading this issue and keep yourself updated. Any feedback will be welcome to improve our content and quality.

Thanking you.

Wishing you a Happy festive season.

Yours truly,

Dr. Sulabha Kore

डिजिटल लर्निंग
जरूरत एवं महत्व

शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है, आधुनिक शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य संस्कारी और कौशल युक्त नागरिक बनाना है. इस अर्थ में शिक्षा संस्कार और रोजगार प्राप्ति की सर्वाधिक विश्वसनीय प्रक्रिया है. शिक्षा चरित्र निर्माण एवं कौशल विकास की कुंजी है. शिक्षा बच्चों का समाजीकरण भी करती है एवं वह व्यक्ति में स्वतंत्रता, भाईचारे एवं समानता जैसे जीवन परक मूल्यों का भी सृजन करती है. शिक्षा बच्चों को तमाम सीमाओं और संकीर्णताओं से मुक्त करके उसके अंदर मनुष्य भाव का बीजारोपण करती है. शिक्षा के माध्यम से ही संस्कार, सामूहिकता, सहकार, समरसता की पृष्ठभूमि तैयार होती है. शिक्षा के इन लक्ष्यों की प्राप्ति में कक्षा शिक्षण की अपरिहार्य भूमिका होती है. सीखना अधिगम की एक प्रक्रिया है, जो जीवन पर्यंत सतत रूप से चलती है और मनुष्य विभिन्न क्षेत्रों में इसे अपनाता भी है. व्यक्ति का सीखना किसी उम्र का मोहताज नहीं होता, व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ ना कुछ सीखता ही रहता है. चाहे वह किसी व्यक्ति या अपने वातावरण से सीखे, विद्यालय में साथियों एवं शिक्षकों के संपर्क में आकर वह जीवन के विभिन्न आयाम और तौर-तरीके सीखता है. फिर वह तकनीकी जीवन के अगले पड़ाव में आजीविका के साधन जुटाने के तरीके सीखता है. इनमें सबसे महत्वपूर्ण होता है नवाचारों से सीखना क्योंकि नवाचार को रुचिपूर्ण तरीके से सीखने में बहुत उपयोगी माना जाता है.

1. **नवाचार की आवश्यकता** :- हमें यह तो पता है कि सीखना व्यक्ति में निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है लेकिन मानव का स्वभाव है कि वह किसी भी एक व्यक्ति या वस्तु के साथ निरंतर नहीं बना रह सकता. उसे हमेशा कुछ नवोन्मेष चाहिए होते हैं, जिससे उसका सीखना रुचिपूर्ण बना रहे. वैसे विद्वानों ने कहा है कि यदि परिवर्तनशीलता नहीं होगी तो सीखने में जड़त्व आ जाएगा और यह बहुत विनाशकारी है इसलिए परिवर्तनशीलता बहुत आवश्यक है और इसी परिवर्तनशीलता को नवाचार कहा गया है.

2. **डिजिटल लर्निंग के फायदे** :- शिक्षा का उद्देश्य यह भी है कि बच्चों का सर्वांगीण विकास हो तथा इसके साथ ही बच्चों का बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक, मानसिक एवं संवेगात्मक विकास हो, जिसके लिए शिक्षकों को ऐसे अवसर छात्रों को प्रदान करवाने चाहिए, जिनसे उनमें छिपी हुई प्रतिभा उजागर हो सके. न जाने किस क्षेत्र में वैज्ञानिक, सामाजिक कार्यकर्ता, साहित्यकार एवं नेतृत्व क्षमता के गुण विद्यमान हों लेकिन प्रतिकूल सामाजिक परिवेश के कारण वह विकसित नहीं हो पा रहा हो. ऐसे बालकों को उचित अवसर प्रदान करना हमारा दायित्व बनता है. उन्हें ऐसा शैक्षिक वातावरण उपलब्ध करवाना जिससे उनकी प्रतिभा खुलकर सामने आ सके, और उनमें एक विश्लेषणात्मक समझ विकसित हो सके. इसके लिए पारंपरिक शिक्षा पद्धति से हटकर डिजिटल लर्निंग पर बल दिया जाना चाहिए. इससे कक्षा में शिक्षण अत्यधिक रुचिकर व संवादात्मक हो जाएगा. सक्रिय रूप से सीखने, सकारात्मक शिक्षण वातावरण विकसित करने, बच्चों को शिक्षण तकनीक के द्वारा उनकी शैक्षिक एवं बौद्धिक गुणवत्ता में बढ़ोतरी करने एवं बोझ रहित शिक्षा प्रदान करने हेतु इसे प्राथमिक कक्षाओं में लागू किया जाना चाहिए .

3. **डिजिटल शिक्षा के उद्देश्य** :- डिजिटल शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बच्चों के सीखने की गति में वृद्धि करना है. बच्चों में आधुनिक प्रौद्योगिकी के विकास से शैक्षणिक कौशल में अभिवृद्धि होगी क्योंकि बच्चा श्रव्य व दृश्य सामग्री के प्रयोग से अधिकाधिक शिक्षण ग्रहण कर पाएगा. वह शिक्षण रुचिकर होने के साथ-साथ चिरस्थाई भी होगा. संक्षेप में कहें तो तकनीक की जानकारी शिक्षण व समाज का एकीकरण है. इसके द्वारा बच्चों का सर्वांगीण विकास तो होगा ही, साथ ही बच्चों के रचनात्मक कार्यों में भी अभिवृद्धि होगी. वर्तमान में शिक्षा संक्रमण काल से गुजर रही है. शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा तक सीमित न रह कर केवल प्रमाणन तक रह गया है. जब पूरी दुनिया अपने घरों की चारदीवारी तक सिमट कर रह गई है, ऐसे में ई-लर्निंग के अनेक संसाधन हमारे पास मौजूद हैं और इनका प्रयोग करके शिक्षा तंत्र को सजीव बनाया जा सकता है.

4. **शिक्षा में नवाचार** :- शिक्षा में नवाचार के सकारात्मक प्रभाव एवं परिणाम आप अपनी आंखों से देख सकते हैं. प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षक उस कारीगर की तरह होता है, जो आकर्षक बहुमंजिला इमारत की मजबूत नींव भरने का काम करता है और इसके लिए नवाचार रूपी ईंटों पर बल देता है. नवाचार के माध्यम से हम बच्चों को कल्पनाशील बना सकते हैं एवं बच्चा जब किसी कार्य को स्वयं करके सीखता है तो वह उसे भूलता नहीं है. बच्चा रुचिपूर्ण तरीके से सीख भी जाता है और खेल-खेल में तनाव मुक्त शिक्षण भी कर पाता है.

सुनिल अगरवाल
तेजपुर सी शाखा, गुवाहाटी

उर्दू के लफ्जों से सजा मुहब्बत की शमशीर हूँ, हाँ मैं बशीर हूँ....

उर्दू से परिचय तो मेरा पुराना था, पर उससे गुफ्तगू का मौका मिला अपने पोस्ट ग्रेजुएशन के दूसरे सेमेस्टर में, जब पूरा एक पेपर उर्दू को समर्पित था. यही वह समय था जब मुझे यह जानने को मिला कि उर्दू और उसकी सबसे लोकप्रिय विधा 'शायरी' सिर्फ इर्शाद और 'वाह-वाह' जैसे दो शब्दों से बहुत आगे तक की यात्रा है. इसका मर्म मात्र सतही न होकर आत्मा को छूने वाला है. यह विधा इसलिए भी मेरे अन्तर्मन को छूती है क्योंकि हिन्दी साहित्य में जैसे 'बिहारी' गागर में सागर भरते हुये अपना लोहा मनवाते हैं और सबके प्रिय हो जाते हैं वैसे ही शायरी विधा में कम लफ्जों में अभिव्यक्ति का असीम संसार सहज उपलब्ध हो जाता है.

वैसे तो शायरी के संसार में कई धुरंधर हुये, सब एक से बढ़कर एक, जिनकी आपस में तुलना करना भी मेरी क्षमता क्षेत्र से बाहर है, 'फैज', 'गालिब', 'इलाहाबादी', मीर, फाजली ऐसे कई नाम हैं जो उर्दू के आकाश में रोशन हैं और जिनकी रोशनी से हिन्दी या अन्य भाषाएं भी रोशन होती हैं. पर हाँ, मुझे व्यक्तिगत रूप से शायरी के जिन लफ्जों से मुहब्बत हुई और उन लफ्जों को जीवंतता दी थी बशीर बद्र साहब ने. उनका अंदाज-ए-आम ही उन्हें 'खास' की श्रेणी में सबसे आगे खड़ा करता है.

नई गजल में मुहब्बत के सबसे बड़े शायर बशीर बद्र जब लिखते हैं

"मैं कागज की तकदीर पहचानता हूँ, सिपाही को आता है तलवार पढ़ना"

तो चाहे अनचाहे ही उनके अंदर का या यूं कहें उनका अभिन्न हिस्सा 'उत्तर प्रदेश पुलिस' की वर्दी में सचित्र हो उठता है. चाहे इसे संयोग कहें, चाहे कोई योग पर गजल की सदाबहार दुनिया से 15 फरवरी, 1869 को रुखसत हुये बेताज बादशाह मिर्ज़ा गालिब और 15 फरवरी, 1935 में इस खालीपन को भरने के लिए आये बशीर बद्र. बद्र साहब की तरबियत की ही तरह उनकी कलम भी विविधता से भरी हुई है. यह इनके व्यक्तित्व का बहुआयामी होना ही माना जाएगा कि इन्होंने पाठ्यक्रम में अपनी ही किताब पढ़ी है और फिर बाद में प्रोफेसर के तौर पर बच्चों को पढ़ाया भी. ज्ञातव्य हो कि बद्र साहब ने 17 वर्षों तक प्राध्यापक के तौर पर मेरठ में कॉलेज में अपनी सेवाएँ दी हैं.

बद्र साहब ने शायरी में कभी लफ्जों का खेल नहीं खेला है और यही इनकी शायरी की सबसे बड़ी खासियत भी है कि वह आवाम की भाषा में लिखते रहे. इनकी शायद ही कोई शायरी हो जिसे समझने के लिए आपको शब्दकोश पर निर्भर होना पड़े. आवाम की भाषा में अपनी अनुभूतियों को उकेरने के पीछे का कारण अगर बशीर साहब के शब्दों में ही सुनें तो वो कहते हैं, "शुरुआती दौर में तो मैंने उर्दू,फारसी के कठिन शब्दों का प्रयोग किया वो सारे शेर किताबों में जिंदा रहे पर लोगों के जेहन में नहीं," इसी बात को बयां करते हुये वह लिखते हैं

"हज़ारों शेर मेरे सो गये काग़ज़ की क़ब्रों में, अजब माँ हूँ,
कोई बच्चा मेरा ज़िन्दा नहीं रहता"

बशीर साहब की शख्सियत उनकी लेखनी में झाँकती हुई मिलेगी. आपको चाहे अँग्रेजी के शब्दों का प्रयोग हो या मुहावरों पर कलम चलाना. बशीर साहब का सहज अंदाज उन्हें आम से खास तक का चहेता बनाता है. एक बार मैं न्यूयॉर्क के कवि सम्मेलन पर किसी पेपर का संपादकीय पढ़ रही थी, जिसमें पूर्व प्रधानमंत्री अटल जी के सरल व्यक्तित्व पर कोट करते हुए एक घटना का जिक्र किया गया था. इस कवि सम्मेलन में कविता पढ़ने वालों में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी भी थे. जैसा कि कवि सम्मेलनों का रिवाज़ है कि सबसे स्थापित कवि को सबसे आख़िर में पढ़वाया जाता है, उस कवि सम्मेलन में अटल जी का नाम सबसे आख़िर में था. लेकिन अटल जी ने अपना नाम काट कर बशीर साहब का नाम आख़िर में लिखा. निश्चय ही यह अटल जी के उदार व्यक्तित्व को उजागर करता है पर इसे हम बशीर साहब की शख्सियत और अटल जी की नजरों में उनकी कद्र और कद से भी जोड़कर देख सकते हैं.

वैसे भी राजनीतिज्ञों द्वारा गाहे-बगाहे बशीर साहब के शेरों को कोट किया गया जो उनकी लोकप्रियता के परिचायक हैं, आइये, देखें कुछ एक खास जगहों पर कैसे बशीर साहब के शेरों को प्रयोग में लाया गया;

2 जुलाई, 1972 को शिमला समझौते के बाद अख़बारों में पकिस्तान के वजीरे- आज़म ज़ुल्फ़िकार अली भुट्टो और तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी की हाथ मिलाते हुए तस्वीर छपी और नीचे एक शेर लिखा था जो कि भुट्टो साहब ने श्रीमती गाँधी को समझौते के वक़्त सुनाया था.

"दुश्मनी जम के करो लेकिन ये गुंजाईश रहे जब कभी हम दोस्त हो जाएँ तो शर्मिंदा न हों"

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जब लाहौर बस ले के गए, उस बस के पीछे एक शेर लिखा था :

"दुश्मनी का सफ़र एक कदम दो कदम,
तुम भी थक जाओगे हम भी थक जायेंगे"

ये शेर भी बशीर बद्र साहब ने कहे थे जो इस बस के एक मुसाफ़िर भी थे. इस बस यात्रा के बाद कारगिल का युद्ध हुआ और इसके बाद जब मुशर्रफ़ दिल्ली आए तो वाजपेयी साहब से उन्होंने सिर्फ हाथ मिलाया, गले नहीं मिले. उसी शाम एक मुशायरा भी रखा गया था और मुशर्रफ़ को ये शेर सुनाने वाले बशीर साहब ही थे:

"मुहब्बतों में दिखावे की दोस्ती न मिला,
अगर गले नहीं मिलता तो हाथ भी न मिला"

बशीर साहब की शायरी में प्रेम और उसके विरह का राग भी है जो उनके द्वारा कुछ यूं कलमबद्ध किया गया:

''वही लिखने पढ़ने का शौक था, वही लिखने पढ़ने का शौक है,
तिरा नाम लिखना किताब पर, तिरा नाम पढ़ना किताब में"

या फिर जब वो कहते हैं

"मैं जब सो जाऊं इन आँखों पे अपने होंठ रख देना,
यकीं आ जाएगा, पलकों तले भी दिल धड़कता है"

तब इन लफ्जों से अनायास ही एक नई दौड़ की आशिक़ी की खुशबू आती है और जब वही आशिक हताश या इश्क में निराश हो जाता है तो बद्र साहब उसे अपने लफ्जों में कुछ ऐसे पिरोते हैं:

"वो चाँदनी का बदन खुशबुओं का साया है,
बहुत अज़ीज हमें है मगर पराया है"

या फिर "तुम्हारे घर के सभी रास्तों को काट गई हमारे हाथ में कोई लकीर ऐसी थी"

जब ये नए दौर की आशिक़ी नीरस हो जाती है तो उसके लफ़्ज़ कैसे धारदार होते हैं ये इन शायरियों में देखने को मिलता है:

"अभी राह में कई मोड़ हैं कोई आयेगा, कोई जाएगा
तुम्हें जिसने दिल से भुला दिया उसे भूलने की दुआ करो"

या फिर *"अच्छा तुम्हारे शहर का दस्तूर हो गया, जिस को गले लगा लिया वो दूर हो गया"*

बशीर साहब की जिंदगी में 1984 का दौर मनहूसियत भरा रहा, यही वो दौर था जिसने मुशायरों की शान को इस हद तक तोड़ दिया कि उनकी सदाबहार कलम ये लिखने में जरा भी नहीं सकुचाती है कि

"लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में, तुम तरस नहीं खाते बस्तियाँ जलाने में"

इस दौर की उनकी रचनाएं किसी भी संवेदनशील व्यक्ति को गहराई तक मायूस कर देंगी, बशीर साहब तो वैसे भी सहृदय व्यक्ति थे. मेरठ के दंगों में अपना घर अपनी आँखों के सामने राख़ होते देखने के बाद मेरठ से इनकी नाराजगी लाज़मी थी और मेरठ से उनकी यह नाराजगी उनको भोपाल की सरजमीं पर ले आयी.

भोपाल की सरजमीं पर आने के बाद भी बशीर साहब की कलम लगातार चलती रही. किसी भी फ़नकार के लिए मौत से भी दुखदायी है उसके फन का चले जाना. बशीर साहब, जो मुशायरों की जान हुआ करते थे, गिरती सेहत की वजह से 2000 के पहले दशक के ख़त्म होते होते, अपना कलाम भूलने लगे और मुशायरों से दूर होते गए. आज वो अपना लिखा सारा कलाम भूल चुके हैं लेकिन आज भी जब कोई उनका शेर उनके आगे गुनगुनाता है तो उनकी आँखों में चमक आ जाती है.

सभी से इन दिनों रूठा हुआ सा लगता हूँ,
मैं अपने आपको अब बेवफ़ा सा लगता हूँ

मेरी हँसी से उदासी के फूल खिलते हैं,
मैं सब के साथ हूँ लेकिन जुदा सा लगता हूँ

अपूर्वा सिंह
क्षे.का. लखनऊ

राही

दीप जो जलते गए, दीप जो बुझते गए,
हारना सीखे नहीं, जो राह को रोशन किए.

रौशन न करें, वो दीप क्या
मोती न दे, वो सीप क्या,
चीरकर सागर को भी,
जो उभरे नहीं वो द्वीप क्या.
चल रहे निरंतर पग, काँटों से हैं छिल गए.
हारना सीखे नहीं, जो राह को रोशन किए.

रुक गया राही वो क्या, झुक गया अम्बर वो क्या,
दुश्मनों की भीड़ को, रोके नहीं पर्वत वो क्या.
पथरीली उस जमीन पर रास्ता बनाते चल दिए
हारना सीखे नहीं जो राह को रोशन किए.

है अगर हिम्मत तो अब फिर से बनाओ रास्ता,
दे गए जो पूर्वज हमें, दुहराओ न वही दास्तां.
खुद अपनी सरगम पिरो, गीतों से दो उसे वास्ता
धुन गम की हैं छेड़े कभी, कभी प्यार भी बरसा गए.
हारना सीखे नहीं जो राह को रोशन किए.

थक गए पाँव मगर, हारना गवारा नहीं,
मिल जाए मंजिल हमें, तब तक वो हमारा नहीं
है हौसला दिल में अगर मंजिल का पता बताएँगे
रुककर नहीं, झुककर नहीं,
उठाकर सर सफलता पाएंगे
गम भूलकर हैं चल दिए अपनों को खोकर चल दिए
हारना सीखे नहीं, जो राह को रोशन किए
इतिहास काल के पन्नों पर लिखता,
वो कलम की सुर्ख स्याही है,
द्वीप सा जल गया, वो राही है, वो राही है

उर्मिला अमिताभ
अजमेर मुख्य शाखा, जोधपुर

तलाश

मैं अपनी कविताओं में एक किरदार ढूंढ़ रहा हूँ
जो खरीद सके मेरी भावनाओं को
ऐसा एक खरीददार ढूंढ़ रहा हूँ.

रहने को छोटा पड़ता है मेरे अंदर का घर
तेरे दिल के कोने में
एक संसार ढूंढ़ रहा हूँ.

शब्दों के समंदर में एक जाल फेंका है
कुछ मोतियाँ हाथ लगी थीं मेरे
अब बूंदों का अंबार ढूंढ़ रहा हूँ.

जिन खबरों में इंसानों की आहट सुनाई दें
जिसमें न खोती हो अस्मत, न मौत की आहटें हों,
ऐसा एक अखबार ढूंढ़ रहा हूँ.

होना ही काफी हो जिस प्रेम में,
जहां न कुछ बिक सके न कोई खरीद सके कुछ
ऐसा एक व्यापार ढूंढ़ रहा हूँ.

एन वी अनिल कुमार
सनतनगर शाखा, पंजागुट्टा

प्रेम की परिभाषा

जब दिल की गीली मिट्टी पर,
एक गर्माहट सी जान पड़े,
जब अपनी खुशी से ज़्यादा किसी की,
चिंता मन पर आन पड़े,

जब दिल ही नहीं, धड़कन, सांसें,
सब किसी की सोच में चलती हों,
जब ज़िक्र किसी का आने पर,
सारी रात करवट बदलते हों,

जब एहसासों में उसके होने
का एहसास भी हो जाये,
जब खुद से ज़्यादा उसके भरोसे
का विश्वास ही हो जाये,

हिम्मत की परिभाषा में,
जब किसी का नाम आने लगे,
सारा दर्द, सारी चिंता,
बस उसकी सोच से जाने लगे,

जब अपनी फिक्र बेमानी और
उसकी फिक्र ज़रूरी लगे,
जब उसकी आवाज़ सुने बिना
दिनचर्या अधूरी लगे

जब खुली आँख में वो दिखे,
वहाँ जहां पर कोई नहीं,
जब आँसू आयें उन आँखों में,
जो बचपन से रोयी नहीं,

जब अपने आप न हिम्मत होती,
एक कदम भी चल जाएँ,
जब उसकी बस एक डांट से अपने,
गिरते कदम संभाल जाएँ,

जब लगे बंट गया है वजूद,
दो हिस्सों में लाचार है,
तो समझ लेना ये जो भी है,
इसी को कहते प्यार हैं ...

सुजीत कुमार विश्वकर्मा
सिंधिया नगर दुर्ग शाखा,
रायपुर

ख़ुद को बदलना पड़ता है!

मंज़िलें होती हैं हासिल,
पथ पर अथक चलना पड़ता है,
नई ज़िन्दगी की ख़ातिर,
नई आदतों में ढलना पड़ता है!
बदलना पड़ता है, ख़ुद को बदलना पड़ता है!

काली घनी रात का लम्बा पहर ख़त्म हो ही जाता है,
हर सुबह नई किरणों के साथ,
फ़िर निकलना पड़ता है!
बदलना पड़ता है, ख़ुद को बदलना पड़ता है!

हर सहारा खो जाता है एक दिन
दुनिया की धुंध में, ख़ुद पे रख यक़ीन,
गिरकर ख़ुद ही सँभलना पड़ता है!
बदलना पड़ता है, ख़ुद को बदलना पड़ता है!

मुश्किलों में रखना पड़ता है
हौसलों को चट्टान सा सख़्त,
क़ामयाबी में फ़ितरत को
मोम सा पिघलाना पड़ता है!
बदलना पड़ता है, ख़ुद को बदलना पड़ता है!

हज़ारों इम्तिहान आयेंगे राह में
जज़्बे को तोड़ने के लिए,
जीत के लिए ख़ौफ़ को
कदमों तले कुचलना पड़ता है!
बदलना पड़ता है, ख़ुद को बदलना पड़ता है!

रोशनी क़िस्मत की चौखट पर
यूँ ही दस्तक नहीं देती,
अपना मुक़द्दर चमकाने के लिए ख़ुद ही जलना पड़ता है!
बदलना पड़ता है, ख़ुद को बदलना पड़ता है!

अभिनंदन श्रीवास्तव
क्षे.का. गोवा

Live until you die

The nib of my pen speaks to me,
The ink is yet to dry
Draw or write that heart feels
No one's here to cry
Long ago you wept a lot
Ever they care your sigh?
World is what a world would be
Life is full of surprises
Design the way you want it be
Don't let your pen defy
The colour you choose the words you write
May raise you to the sky
Alone you start
And far you go
Limits you just deny
Sing your song
loud and clear
Don't let your soul die
Open your wings
Hold your breath
You are now ready to fly.

Sweta Sharma
R.O. Varanasi

Sometimes

Sometimes we should let go,
Let go the past
The bitterness should not last
Sometimes we should cherish
What we have
Sometimes we should believe
Believe in god's plan
The favorable plan of God
Sometimes giving one more chance
To yourself is necessary
Necessary for living contently
Sometimes forgiveness gives you relief
Relief from dejection
Relief from misery
Sometimes we should hold the hand,
Hold the hand of luminescence
Who can usher the path of tranquility?

Neha Das
R.O. Pune (West)

Demystifying Neo Banks

In this current age of information technology, our lives are becoming increasingly digital in the way we order food, apply for a job, book a cab and conduct all our financial transactions. In this era, people want to save their time by not visiting a bank waiting in a queue, as one can execute any task by just using an app. The latest technological disruption in the Banking sector is 'Neo Banks'. Neo Banks in India are a by-product of the ongoing evolution.

What is a Neo Bank ?

The word Neo comes from the Greek word 'Neos', which means "New". Thus, Neobanks are a new version of an old system. A Neobank is a digital bank that offers its services exclusively through a mobile app or online. These are 100% digital banks with no physical branches, offering many services compared to traditional banks. Neo Banks which operate entirely digitally could become the future of Banking.

Advantages of Neo Bank:-

- Operational cost is low since they need not invest in brick and mortar and infrastructure. Benefit is passed on to the customer in the form of low fees and high rates of interest.
- Offer a seamless and unique customer experience as opposed to the mainstream traditional netbanking interface.
- Provide loans with less or no paperwork. Customers can choose which loan they want and also get instant loans as soon as their credit scores are verified.
- Offer more innovative features then traditional Banks. For example some Neobanks offer customers the ability to automatically save money based on their spending habits. The innovation and modern approach to customer experience make Neo banks highly demanded.

Drawbacks of Neo Banks:-

- No physical branches. Customers do not have contact with a direct person. This also makes the relationship lacking a human touch.
- Do not offer all the benefits of traditional bank since they lack a banking license.
- They operate 100% digitally. This makes them susceptible to security breaches, cyberattacks, and similar online threats.

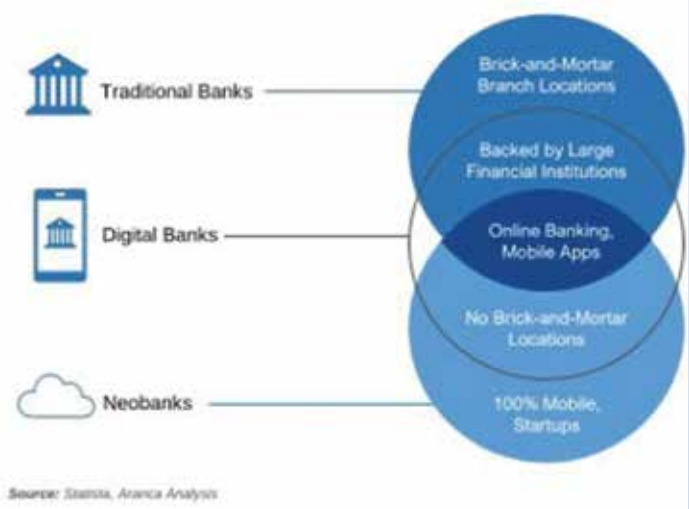

In India, Neo banks do not have a bank license of their own. They count on bank partners that are regulated to provide bank licensed services. The likes of Jupiter, FI, and Razor pay which are currently working in partnership with traditional Banks. Neobanking in India is introducing a new wave of banking. Its not only helping individuals and businesses leverage smart banking activities but manage finances and even grow their money with time. According to statistics, the global neobanking market size stood a $47.39 billion in 2021 and is estimated to grow at an astronomical rate (compounded annual growth rate) of 53.4 percent from 2022 to 2030. The outbreak of the global pandemic has further accelerated the adoption of neobanking. Also known as challenger banks, Neobanks are challenging the way traditional banks operate and serve their customers.

Sona Prahlad Satramani
Kalawad Road Branch, Rajkot

Employee Learning And Development under the 'New Normal':Significant Strategies in conducting online training sessions

Organizations need to transform and refine their knowledge base in accordance with the environmental conditions, and this is possible through a continuous learning process. The objective of any training can simply be put as to "Improve Performance". In essence, it is often recognized that organizations learn for two basic purposes: to explore new opportunities and to exploit existing ones.

"Training and Development is an attempt to improve current or future employee performance by increasing employees ability to perform through learning, usually by changing the employee's attitude or increasing his or her skills and knowledge."

In an ever-evolving and fast-paced world, employees must sharpen their skills and learn new ones. Professional skills such as technical know-how, soft and behavioral skills, domain and process related skills must be a part of the continuous learning and development efforts. Facilitating training programs for people across levels and skills within the organization can ensure an organizations' preparedness for the future. Organizations need to embrace digitization and create a continuous digital learning culture to survive in the new normal.

The pandemic surely took the world by surprise. Countries have shut down, social distancing became the norm, and suddenly the way we go about our lives changed dramatically. What we are experiencing is the 'new normal', where established practices are consigned to history, and companies are adapting to a new style of functioning. This present situation has brought out a instinct to reimagine alternatives through new initiatives using creativity and a forward-looking impact, it creates. It challenges us to redefine, repurpose, reposition and adapt to a new normal.

Learning has always been a key focus area for any organization, but most of their flagship offerings are traditionally driven through the Instructor-led method. However, looking at the current scenario, many organizations transitioned into alternate learning methods and the nationwide lockdown has leveraged as a catalyst & accelerator in this transition journey.

Many organizations have shown tremendous agility in using existing technology and digital platforms to plan & execute a series of learning interventions for their employees across the country. The learnings are now delivered through the medium of virtual sessions, webinars, online workshops & video-based learning. Sales teams are being trained on products, business analytics, technology and other related areas.

We can also initiate a curated learning experience where employees can utilize various video-based learnings and webinars to upskill & re-skill themselves. Employees will be encouraged to undertake such short-term skill-based courses. Twice a week, email communications should be shared with employees with a list of behavioral, functional and wellness courses which employees can go through as per their convenience without compromising on their work or family time.

In terms of purpose, trainers may be deployed to help communicate management direction and crisis management measures of the company in times of crisis and also guide on how to cope with the new normal. It will be better that organizations provide trainers with a detailed document containing frequently asked questions and their corresponding answers to respond accurately to trainees and participants' questions.

Organizations should approach trainees and participants as if they are its customers and become sensitive to their needs. Several factors make online learning challenging for trainees and participants. These are the physical environment, connectivity, familiarity with equipment and software, digital skills, learning

style, interest and motivation. Organization needs to be aware of the fact that trainees and participants may have different circumstances and this awareness will allow trainers to adjust their teaching methods and teaching style to support trainees and participants accordingly.

Training organizations can do the 4S of Learning and Development in the new normal in terms of content. This involves shortening, simplifying, sharpening and summarizing content. For online training along with the choice of software, content should also be discussed and revisited. Bad content will always be bad content.

Some of the tips for organizing better online training sessions are as below:

A. Role of Organization: Role of an organization is very important in defining the objective and scope of the program and design of a relevant and engaging training program.

1. Define or Refine Your Purpose.
2. Communicate Your Purpose to Your Employees, Clients, And Partners.
3. Engage Your Employees in Your Purpose.
4. Implement a Mentoring Program.
5. Revamp Learning Programs: L&D should focus on enabling knowledge, competencies, and skills to be built within the organization that can directly impact business performance. Moreover, L&D should consider that different people learn in different ways, so a variety of training materials and types is a must to make it relevant to the 'new normal' situation.
6. Choose The Right Learning Platform to Enable it: Technology can be adopted as a strategic partner for a better learning experience where we can include different sorts of learning activities like e-learning, articles, videos, gamifications, self-learning activities etc.

B. Role of Trainers: Once the deliverables related to L&D are finalized the onus lies on the trainer for effective implementation. Some of the suggested approaches that can be adopted are as follows:

1. When You Think You are about to Finish Something, Start Thinking About the New Beginning: L&D professionals need to be agile, well-informed about global trends (economy, markets, technology, new ways of learning, etc), and adaptable to the VUCA world.
2. Implement Virtual Icebreakers: Icebreakers help in building a human connection, and can be especially useful when you run online trainings.
3. Hold Breakout Groups: Breakout rooms are very valuable, especially in the formulation of ideas, and allow for true creativity and application of what is taught. Consider including 4-10 participants per "room" to maximize engagement. Once done, make sure to have all groups present back to the whole training class.
4. Utilize the Chat Window: Using the chat feature within your video tool is a convenient alternative to pausing for questions. You can also get attendees to respond to a question, especially participants who tend to be shy about speaking up.
5. Use a Whiteboard: Teaching your attendees through illustration which will bring great results online, as it does in person. A virtual whiteboard is a blank screen and it can be used to type, write, or draw upon with the available annotation tools on the program.
6. Create a Poll: Polls are a great way to ensure your attendees are involved and give feedback real time. You can create polls to quiz participants' knowledge and their understanding of a topic. It can also be a great way to create competitions or measure engagement.
7. Create Fun in-between Sessions: Try to create joy moments between each of your sessions to make sure your attendees are not bored or zoned out. This will also capture their attention and make the entire session fun and engaging.
8. Don't Use Too Much Text on the Slides: Try fewer words and more image-rich slides to help bring your story or learning elements to life. Watching relevant visuals while listening to a story helps participants process and retain the message.

Post Training Follow-up: Reflection is one of the most efficient way to cement knowledge, identify gaps in training, and identify the barriers to a strong transfer of learning. Sending follow-up emails to trainees immediately after the training is necessary. Then reinforce key learning points with a virtual exercise a week later, and arrange additional post-training follow-up sessions as needed to provide supplemental lessons. Or use these opportunities to allow trainees to apply their knowledge on the job to practice their skills or discuss their experiences by giving them a specific mock project to work on.

Feedback is a great source of development, so organizations should conduct surveys and social media polls to get their inputs by which they can improve their learning strategy and ensure that they are viable for the present situation. Create a monthly newsletter for your online learners can opt-in to as the final call to action in your training presentation where you can focus on a new topic in each edition for discussion. Organizations can create an e-learning podcast or video series that describe a new topic each month.

Conclusion: As long as the training is properly planned, informative, and engaging, it will ensure that employees get a great experience, which will increase the content retention. So it is time organizations are prepared to use the best tools and virtual technology to create successful online sessions, and translate the offline training experience into a memorable work-from-home experience. Done properly, the trainings will continue to inspire a culture of continuous learning for the development of the individual and the organization that goes beyond the usual classroom.

Geetanjali Sahoo
STC Bhubaneswar

ओएनडीसी : ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स

वर्तमान समय इंटरनेट का है. लोग खरीददारी करने के लिए बाजार जाने के अलावा घर से ही विभिन्न शापिंग साइट्स से आर्डर कर रहे हैं. अमेजन, फ्लिपकार्ट, मिंत्रा, मीशो जैसी अनेकों ई-कामर्स साइट्स हैं जो लोगों की खरीददारी एवं प्रोडक्ट्स की होम डिलीवरी कर रहे हैं. हालत यह है कि ई-कामर्स मार्केट पर अमेजन और फ्लिपकार्ट दोनों मिलकर राज कर रही हैं. मार्केट रिटेलर्स इन ई-कॉमर्स कंपनियों के खिलाफ रहते हैं. अब इन्हें चुनौती देने के लिए हमारी केंद्र सरकार एक नई पहल ONDC लेकर आ रही है. जिसे open network for digital commerce कहते हैं. यह ओपन प्रोटोकॉल पर आधारित एक तकनीकी नेटवर्क है. यह केंद्र सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग की एक पहल है. इसका उद्देश्य इलेक्ट्रॉनिक नेटवर्क के जरिए वस्तुओं एवं सेवाओं के लेन-देन के सभी पहलुओं के लिए एक खुले मंच को प्रोत्साहित करना है, ताकि सभी आनलाइन रिटेल विक्रेता इसका इस्तेमाल कर सकें. इसके साथ ही इसका उद्देश्य वस्तुओं एवं सेवाओं की ई-कॉमर्स कंपनियों की डिजिटल मोनोपोली को भी ख़त्म करना है. अब सवाल ये उठता है कि केंद्र सरकार ई-कॉमर्स कंपनियों की मोनोपॉली को खत्म क्यों करना चाहती है. ई-कॉमर्स रिटेलर इसका विरोध क्यों कर रहे हैं. इसकी एक बड़ी वजह यह है कि बड़ी ई-कॉमर्स कंपनियां अपने प्रभाव का गलत तरीके से इस्तेमाल करती हैं. अनुचित लाभ हासिल करने के लिए बड़ी छूट दे रही हैं. ऐसे में माना जा रहा है कि इस ओएनडीसी नेटवर्क से छोटे व्यापारियों को बहुत लाभ होगा एवं बड़ी ई-कॉमर्स कंपनियों की मोनोपोली भी खत्म हो जाएंगी.

ओएनडीसी आवश्यक क्यों है: वर्तमान में अमेजन, फ्लिपकार्ट जैसी अनेक ई-कॉमर्स कंपनियां हैं, जिनके पास डिस्काउंट एवं होम डिलीवरी जैसे अनेक विकल्प हैं, जिसे कंपनी ग्राहकों को लुभाने के लिए उपयोग कर रही है. यही वजह है कि 80 प्रतिशत ई-कॉमर्स मार्केट पर उन्होंने कब्जा कर लिया है. ग्राहकों ने भी डिस्काउंट और होम डिलीवरी के चक्कर में छोटे व्यापारियों से सामान लेना बहुत कम कर दिया है. यदि इसे कहीं से चुनौती नहीं मिली तो छोटे व्यापारियों के लिए आने वाला समय बेहद मुश्किल भरा हो जाएगा. उनकी इसी चिंता ने सरकार को अपना ई-कामर्स इकोसिस्टम विकसित करने के लिए विवश किया है. सरकार द्वारा तैयार किए जा रहे ई-कामर्स इकोसिस्टम ओएनडीसी के जरिए पान वाले, चाटवाले, छोटे किराना वाले, छोले-भटूरे वाले आदि अपने उत्पादों को आनलाइन बेच सकेंगे. कस्टमर उन्हें आनलाइन आर्डर और भुगतान कर सकेंगे और इसके लिए उन्हें अलग से व्यय करने की भी जरूरत नहीं होगी क्योंकि यह सरकार की एक 'नॉट फॉर प्रॉफ़िट' पहल है.

ओएनडीसी कैसे छोटे व्यापारियों की मदद कर सकता है: ओएनडीसी के बारे में जानने से पहले ओपन सोर्स एवं क्लोज्ड सोर्स को समझना जरूरी है. किसी सॉफ्टवेयर के ओपन सोर्स होने का मतलब यह है कि उसके कोड को दूसरों के इस्तेमाल, पुनर्वितरण एवं संशोधन के लिए स्वतंत्र रूप से उपलब्ध कराया जा सकता है. जैसे गूगल का एंड्रायड आपरेटिंग सिस्टम ओपन सोर्स है. इसलिए कई स्मार्ट फोन निर्माता कंपनियां इसे कुछ संशोधनों के साथ इस्तेमाल करती हैं. वहीं एपल के आईफोन का आपरेटिंग सिस्टम क्लोज्ड सोर्स है. क्योंकि इसे कानूनी रूप से संशोधित नहीं किया जा सकता, और इसमें कोई बदलाव नहीं किया जा सकता. ओएनडीसी एक ओपन सोर्स नेटवर्क है. यह एक नेटवर्क इनेबल्ड एप्लिकेशन है जिसके जरिए ग्रोसरी व फूड आर्डर एवं डिलीवरी, होटल बुकिंग एवं यात्रा आदि सेग्मेंट्स में अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचकर यह स्थानीय व्यापार को बढ़ावा देता है. ओएनडीसी असल में एक तरह की ओपन रजिस्ट्री होगी. छोटे से छोटा दुकानदार अपने आप को इस पर रजिस्टर कर सकेगा. इसका फायदा ये होगा कि किसी रिटेलर को ऑनलाइन मार्केट में सामान बेचने के लिए खुद को अलग-अलग ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर रजिस्टर नहीं करना होगा. ऐसे में अगर किसी ग्राहक को कुछ खरीदना होगा, तो वो अपने इलाके में इस ओपन रजिस्ट्री पर रजिस्टर रिटेलर को पहले चेक कर सकेगा. ओएनडीसी बिलकुल डिजिटल पेमेंट के लिए तैयार किए गए यूपीआई जैसा ही है. जैसे यूपीआई से छोटे दुकानदारों को काफी फायदा हुआ है, उसी तरह से ओएनडीसी से भी छोटे दुकानदारों को फायदा मिलेगा.

ओएनडीसी की वर्तमान स्थिति : ओएनडीसी की शुरूआत में इंफोसिस के सह-संस्थापक/गैर कार्यकारी अध्यक्ष एवं उद्योगपति नन्दन नीलकेणि की अहम भूमिका मानी जा रही है. वे इस ओपन नेटवर्क को अपनाने के लिए आवश्यक उपायों पर केंद्र सरकार को सलाह देने वाली नौ सदस्यीय सलाहकार परिषद का हिस्सा हैं. पहले चरण में यह नेटवर्क बतौर पायलट प्रोजेक्ट देश के पांच शहरों में लांच किया गया है. इन शहरों में दिल्ली एनसीआर, बेंगलूरु, भोपाल, शिलांग और कोयंबटूर शामिल हैं. पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर सफल रहने पर ओएनडीसी को देश के दूसरे शहरों में भी लांच किए जाने पर फैसला लिया जाएगा.

ओएनडीसी का भविष्य: ओएनडीसी को शुरू करने का मुख्य कारण छोटे व्यवसायियों और दुकानदारों की समस्याओं पर ध्यान देना है. ओएनडीसी के आ जाने से इन्हें अपना सामान बेचने में काफी सहूलियत हो जाएगी. इससे इनकी आय में भी वृद्धि होगी और बड़ी ई-कॉमर्स कंपनियों को भी प्रतिस्पर्धा मिलेगी, जिससे ग्राहक को भी क्वालिटी प्रोडक्ट मिलेंगे. अत: ऐसा लगता है कि आने वाला समय ओएनडीसी का होगा और जिस तरह से यूपीआई ने वर्तमान समय में पैसों के लेन-देन को सरल एवं सुगम बनाया है उसी तरह से आने वाले समय में ओएनडीसी से व्यापार में काफी सुगमता होगी.

अंकित सिंह
डोंबिवली (पश्चिम) शाखा, ठाणे

Guruvayur Sree Krishna Temple

A Unique Experience

MY MAIDEN DARSHAN : It was by no means a normal 200 plus mile drive that I did, during my adolescent age, with my beloved Mom and Dad, from Thiruvananthapuram to Guruvayur to have my maiden Darshan, It was an inexplicable experience. All along the drive, I was under the grip of a sense of impatience and restlessness apart from over excitement to see "My Unni Kannan" first time ever. So much was the load of amazing myths and incredible stories that had been stuffed into my little brain and young mind by Grandma about Guruvayurappan.

Words are grossly inadequate to narrate my First Darshan, rather my First Union with Kannan. Devotees had to stand in long queues awaiting entry into the Temple. It took over two hours to complete the Darshan that was unforgettable an experience, as we were fortunate to witness the evening "Deeparadhana". The sight of the Lord in the form of "Aalila Krishnan" (Baby Krishnan) decorated in chandan (Sandal) was amazing. The stimulating instrumental rhythm and the thick line of devotees, standing in discipline, spontaneously chanting "keerthans" before the Sanctum generated a rare atmosphere of absolute bhakthi, vibrating the whole body. It was a blessing to be inside. We came out of the Temple with satisfaction in fulfilment of a long chased dream and with memories to cherish. I realized, Guruvayur is a place not to be missed.

BHULOKA VAIKUNTA and GURUVAYURAPPAN : South India is home to a number of magnificent temples. Guruvayur Temple is one of Kerala's most visited temples. Built in the 14th century, this ancient Temple is dedicated to the worship of the most revered incarnations of Lord Vishnu – Krishna, with the reason, Guruvayur Temple is often referred to as "Bhuloka Vaikunta", the Holy Abode of Lord Vishnu on Earth and the Temple holds a special place in the hearts of the Hindus. The name Guruvayurappan originates from the words Guru, referring to Brihaspati, the Guru of the Devas and Vayu, the God of wind and Appan means "Father" in Malayalam. The Deity had been installed by both Guru and Vayu together, hence the name Guruvayur.

ORIGIN OF GURUVAYUR TEMPLE : The legends state, Lord Krishna before ending his incarnation in Dwapara Yuga asked two sages to take the idol from his Temple in Dwaraka while the city was being destroyed and to establish it in "Dakshina Dikke" (South India). The legends Brihaspati and Vayu took the idol from Dwaraka and travelled southwards through the sky looking for the blessed divine location. Suddenly they spotted a large beautiful lake on the western side of the Bhargav Kshetra, closer to the sea with lush greenery in the vicinity. Brihaspati and Vayu perceiving the sanctity of the place and realizing the presence of Divine Power landed there and were guided by Lord Parasurama. Soon they found themselves blessed with the appearance of Lord Shiva and Goddess Parvathi before them, dancing on the lakeshore and the Lord conveyed them that the most suitable location for installing the idol of Lord Vishnu was none other than the spot they were standing on. The Lord continued that it was exactly the place where 10 princes called "Prachetas" came for penance upon Lord Vishnu for attaining the status of Prajapathis and he disclosed "Rudrageetha" to them. At the instance of Brihaspati, the Divine Architect Vishwakarma constructed the Temple for the Idol with amazing vastu shilpa skills. Brihaspati and Vayu installed the Holy Deity with all Divine Rituals and Lord Shiva performed the First Pooja. Lord Shiva and Parvathi after witnessing the Divine Moments moved themselves to Mammiyoor, a place in the opposite side of the lake where they appeared as Swayamboolinga along with Ganesha, Karthikeya and Sastha. Thus, a darshan in Guruvayur is considered complete only after visit to Mammiyur Shiva Temple.

THE SHREEKRISHNA DIETY : It is believed that an over 5000 years old idol of Guruvayoorappan was worshipped by Vasudeva and Devaki, parents of Lord Krishna and represents full manifestation of Lord Vishnu and later was worshipped by Krishna himself, an avathar of Vishnu. The four feet standing Vishnu Deity has four arms carrying the Conch Panchajanya, Sudarshana Chakra, the mace Koumodhaki and a lotus with a holy basil garland. The Lord as seen in the Sanctum (Srikovil) is believed to have given Darshan in this particular form of Viswaroopa to Vasudeva & Devaki around the time of Krishna's birth. This precisely is the reason, how Guruvayur earned the Sobriquet "Dwaraka of South India"

TEMPLE ARCHITECTURE : The architectural style of the Temple elegantly represents the cultural heritage of the place. In the front and East side of the Nalambalam (a square shaped column) lies the pillars of light called Deepasthambam. There are a number of such light pillars in the Temple, each of them with 13 circular receptacles, offering a spectacular sight when the oil lamps are lit. The 70 ft tall Dwajastambha fully covered with gold metal, ie the flagstaff (Kodimaram) is another unique sight. The central shrine is believed to have been rebuilt several times following repeated attacks and loots by Europeans and Mughals since 1638 AD. It is miraculous that despite a disastrous fire that broke out in the year 1970, the Holy Deity, Sanctum Sanctorum and all the Sub Shrines remained intact.

NARAYANEEYAM - LEGENDS AND MYTHS : The tale relating to the sages Melpathur Bhattadiri and Poonthanam Namboodri, associated with the Temple, is quite interesting. Bhattadiri unable to see his Guru Achyutha Pisharadi's unbearable suffering from severe paralysis, by his yogic strength and by way of Gurudakshina had taken the disease upon himself and relieved his Guru. Crippled Bhattadiri on being carried to Guruvayoor Temple with absolute disability, met the Malayalam Scholarly Poet Thunchath Ezhuthachan who advised him that he could be cured if he began his treatment with fish. The learned Bhattadiri instantly grasped the hidden meaning of his advice and started his devotional composition glorifying the ten different incarnations of the Lord – beginning with "Matsya Avatar". Thus his amazing masterpiece and Poetic Sanskrit Text - "Narayaneeyam", in praise of Guruvayurappan, came into being. He recited one Dashakam, consisting of 10 verses every day, the last sloka of every Dashakam being a prayer to cure his ailment. On the 100th day while the last Dashakam of "Aayurarogya Sowkhyam" was composed, he was blessed with the Lord's Darshan following which he was completely cured of his ailment. It is believed that worship of Guruvayurappan is a sure remedy for all incurable diseases .

Poonthanam Namboodiri was a humble but ardent devotee who wrote Jnanappana in praise of Lord Guruvayurappan. Bhattadiri who lacked humility, once humiliated Poonthanam when the latter approached him seeking his help to revise Poonthanam's lyrics (Jnanappana). The displeased Guruvayurappan appeared before Bhattadiri in disguise and made him realise, the Lord is more pleased with the Bhakti of Poonthanam than the Vibhakti (Sanskrit Grammar) of the learned Bhattadiri. He then rushed to Poonthanam, sought forgiveness and found that Jnanappana's lyrical beauty was flawless.

DRESS CODE FOR ENTERING THE TEMPLE : For the Temple of 5000 years of history, there is so much to observe and much more to preserve. Strict Dress Code is enforced on devotees seeking entry inside the Temple. Men are disallowed to wear shirts and trousers. While men wear mundu (dothi) as per age old custom, boys wear either mundu or shorts. Both can wear a veshthi (small cloth) covering chest region. Women need to be dressed in sari or chooridar pyjamas, girls wear long skirts or chooridars. They cannot wear trousers or short skirts.

THULABHARAM AND CHOROONE : Usually, nobody returns from the Temple without making an offering to the Lord however small that might be. Udayasthamana Pooja, Prasadamootu, Thulabharam, Choroonu etc. are among the main offerings. Thulabharam is popular among devotees of all age to fulfil aspirations or for relief from distress. The ritual involves weighing the devotee in one side on a balance and the item offered by him, of equal or more weight, is placed on the other side. Through this ritual, the devotee is submitting himself to the Lord and in return he gets blessed. Choroonu is the first rice feeding ceremony of a child conducted before the Unni krishnan.

RUDRATHEERTHAM : The Temple Pond located on the northern side of the Temple is called Rudratheertham. The pond is named after Lord Shiva who is also known as Rudra, as according to legends, for thousands of years, the Lord used to bath on the southern bank of the pond.

LIFE TIME REMEMBRANCE : Guruvayur Temple occupies a special place in the hearts of Hindus across the world. Udayasthamana Pooja at the Temple is booked for the next 35 years speaks about the magnetic pull of the Holy Deity in the Sanctum. The Temple that opens @ 3.00 in the pre-dawn hours closes for the day @ 8.30 hours in the evening. A series of poojas and rituals are performed, one after the other, with clockwork precision and closures of the Sanctum in between. What makes our visit pleasantly memorable is not just the Temple but the whole serene atmosphere of true Bhakti and spiritual awakening surrounding it. No words can describe the sanctity. It's a unique experience to wait amongst the devotees and have Darshan. If we set out for the Nirmalyam @ 3.00 hours, we should never miss the Vagacharth an hour later at 4.00. For sure, Guruvayur is a Temple not to be missed.

Sreekala L.K.
SAMV, C.O.

Retail Lending : An Ever Changing Landscape in India

Retail lending refers, lending to individuals mostly small ticket loans in the form of Personal, Vehicle, Home, and Mortgage Loans etc. Banks in India are focusing more towards retail lending as the rate of delinquency is less in comparison to other loan segments and it is now becoming a good source of profit for Banks. Retail lending also creates scope for cross selling of other products and plays a vital role in customer retention. The demand for retail lending products are increasing which shows the importance of retail lending.

Digitisation of Retail Lending : Digitisation means acquisition of customer and lending through digital mode. As per the survey done by the Team Equifax in May 2021, 29% of executives and credit managers of financial institutions highlighted digital transformation as a core focus area. All financial institutions whether big or small suggested redefined KYC norms enabled through E2E video-KYC process, virtual sales assistance and contactless process for completing the customer-borrowing journey and machine learning (ML) based banking analysis to build a digital lending infrastructure. Players in the space of providing video-KYC tools have witnessed exponential growth owing to the focus on digitisation across the lending landscape. Banks are also adopting the process of virtual property valuations and analytics for further reducing manual intervention across the entire lending.

Thrust on Mobile Banking : In the ever changing environment of retail lending thrust on mobile banking plays a very important role and as per the research estimation India has reached the bench mark of 83 crore smartphone users. Customers are now accustomed to executing complex tasks and transactions using their mobile devices. Banks are also developing tailored products that match the expectation of the customers. A significant increase has been seen in unsecured small ticket loans through data transformation leveraging advance analytics and Fin Tech Partnership. Fin Tech NBFC source and disburse 45% of their personal loans through mobile channel.

Embedded Financing : Embedded financing is a seamless integration of financial services into a non traditionally financial service. Now businesses are increasingly collaborating with embedded finance companies to offer financial services like Embedded Payments, Embedded Credit, Embedded Insurance, Embedded Investment etc. Financial institutions take advantage and provide need based loans to vendors who are connected with e platforms based on their eligibility and for users also it is equally beneficial as they get customised offerings in affordable cost. It helps them improve their customer experience.

Making Tie-Up with DSA/CSA : Banks and other financial institutions are tying-up with direct selling agents and corporate selling agents to attract customers. DSAs connect borrowers to lenders and take care of all the primary documents which are required for loans. DSAs of a Bank or NBFC's work on a Direct selling model in which services to consumers are given for those who are away from the fixed branch outlet. Generally the customers are contacted by DSAs at their preferred location and time. They visit the place and demonstrate about the product and its features and help them in further processing.

In the model of direct selling through DSAs the banks use different type of software and artificial intelligence to create data of prospective customers for their products. Generally banks are taking the services of DSAs mostly in retail loan segment like in Housing loan, Vehicle loan, Mortgage loan, Personal loan etc. Banks extract the data and provide to DSAs for following up with the customer and meet the customers directly at their place of convenience. They deal not only with existing customers but also search for prospective customers.

Building Ecosystem : In a changing landscape of retail lending where the market is highly competitive and approximately 10,000 NBFCs and banks are present in the market. , FIs have recognised the need for providing collaborative ecosystem-

driven lending avenues and leveraging the network effects of players in the ecosystem for higher penetration of lending products by using the following two key mechanisms:-

- By making strategic partnerships with players in the lending ecosystem.
- Embedding NBFC financing in the overall ecosystem for product offering

Ecosystem players across lending products, namely payment partners, direct sales agents, property aggregators/brokers, real estate agents, builders, and acquisition and collections facilitators provide access to unique data-driven insights into FIs that can be leveraged for higher penetration, robust underwriting models and improved customer service for both existing and prospective borrowers.

Challenges of Retail lending in changing landscape : New technology, increased regulation and expansion of digital channels have become a new normal for retail lending. Many Fin Tech companies are partnering with e commerce giants like Amazon, Flip kart etc. and serve the customers for their retail needs. In this challenging environment banks are also partnering with e commerce, Fin-Tech companies pace to cater to the retail needs of the customers. Banks are facing the following challenges while delivering :-

- Banks and financial institutions face a tough competition among them as approx 10000 FI including banks and NBFCs are working in Indian market with more or less same types of products and services.
- Banks are changing themselves at very fast pace. Such changes are putting pressure on traditional banking as they are less efficient to change their product and processes compared to new entrants.
- Innovation and technology have become a new normal for retail lending. New Fin-Tech companies are introducing products which match the current reality and preferences of the customers, however banks especially the small retail lenders find it diffcult to compete with them due to heavy expendirure required in IT, Research and innovation.
- Banks face heavy regulatory pressure and due to this they are spending more of their budget for compliance and building more advanced information security systems.
- In the era of new banking the expectations and preference of the customers are changing rapidly. It is a big challenge to develop and deliver personalized services to customers based on their income, demography and life style.

- Bank requires a team of talented staff having expertise in various fields to cater to the need of retail lending. Retaining talented employees is also a challenge as recruitment is aggressively done by competitors.

Conclusion. : New age banking has brought many unprecedented business challenges, with significant changes in their modus operandi to deal with Retail customers in India. All financial institutions have been reeling under the impact of the pandemic for the past few quarters and it is expected to continue in coming quarters as well. Sourcing of businesses becomes very tough and thus the role of Direct Selling Agents, Digital Banking, and process transformation becomes more crucial for the Banks. In today's banking while customers accept digital channels and digital banking rapidly, banks must innovate and create solutions that fit into the customer context. Banks, while serving the customers through the different channels of Digital space, need to correctly identify the problems and address those to achieve human touch, personalization and service excellence for the customers that help them to grow further in this competitive and changing landscape of Retail Lending.

Md. Nasim Anwer
S.T.C. Vishakhapatnam

खुबसूरत एवं ऐतिहासिक नगर : राजगीर

राजगीर प्राचीन भारत में मगध की राजधानी रहा है. यह उत्तरवैदिक काल में सम्पूर्ण विश्व में तत्कालीन भारत के राजनीतिक, अध्यात्मिक एवं पारंपरिक केंद्र के रुप में जाना जाता है. राजगीर एक ऐसा नाम है जो बिहार की प्राचीनता को उजागर करता है. यह एक ऐसी धरोहर है जो बिहार की ऐतिहासिकता, आध्यात्मिकता, सांस्कृतिक एवं धार्मिक उत्कर्ष तथा इसके शिखर तक पहुंचने को स्मरण कराती है. राजगीर का नाम आते ही हमारे जेहन में प्राचीन मगध साम्राज्य तथा भारत के गौरवशाली अतीत की याद ताजा हो जाती है. प्राकृतिक, सांस्कृतिक तथा समृद्ध परंपराओं से परिपूर्ण यह नगर हर भारतीयों के लिए शासन, समृद्धि तथा बेहतर राज्य प्रशासन से परिचय कराता है. यह हम सब भारतीयों के लिए गौरव की बात है.

राजगीर नगर बिहार राज्य के नालंदा जिले में स्थित एक शहर है. इतिहास के पन्नों में देखें तो मौर्य साम्राज्य, गुप्त साम्राज्य सहित मगध के कई राजवंशों ने राजगीर को अपनी राजधानी बनाकर इसे दुल्हन की तरह संजाया-संवारा तथा अपने सपनों को पूरा किया.

यह नगर पटना से 100 किमी दक्षिण-पूर्व में पहाड़ियों और घने जंगलों के बीच बसा है. राजगीर न केवल एक प्रसिद्ध धार्मिक तीर्थस्थल है बल्कि एक सुन्दर रमणीय स्थल भी है जिसका प्राकृतिक सौंदर्य हमें मंत्रमुग्ध कर देता है. यहां हिन्दू, जैन और बौद्ध तीनों धर्मों के धार्मिक स्थल भी हैं. खासकर बौद्ध धर्म से इसका बहुत प्राचीन संबंध है. भगवान बुद्ध न केवल कई वर्षों तक यहां ठहरे थे बल्कि उन्होंने कई महत्वपूर्ण उपदेश भी यहाँ की धरती पर दिये थे.

वर्तमान राजगीर नगर का प्राचीन नाम राजगृह था. राजगृह अर्थात् राजा का घर. इस नगर का असीमित ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व है. यह नगर वसुमतिपुर, वृहद्रथपुर, गिरिब्रज और कुशाग्रपुर के नाम से भी प्रसिद्ध रहा है. पौराणिक साहित्य के अनुसार राजगीर ब्रह्मा की पवित्र यज्ञ भूमि, संस्कृति और वैभव का केन्द्र तथा जैन धर्म के 20वें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ स्वामी के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान कल्याणक एवं 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी का प्रथम देशना स्थली भी रहा है. साथ ही भगवान बुद्ध की साधनाभूमि राजगीर में ही है. महाभारत के मतानुसार राजगीर में ही भीम तथा जरासंध के बीच मल्ल युद्ध हुआ था जिसके पश्चात् भीम ने भगवान कृष्ण के इशारे पर जरासंध का वध किया था.

यह नगर प्राकृतिक सौंदर्य को समेटे विभिन्न पांच पहाड़ियों यथा रत्नागिरी, विपुलगिरि, उदयगिरि, सोनगिरि एवं वैभारगिरि से घिरा है. यह सभी पर्वत श्रृंखलाएं हम सभी को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं. बिहार में प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर प्राचीन आध्यात्मिक और ऐतिहासिक स्थलों की लंबी श्रृंखला है परंतु राजगीर और इसके आसपास के ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व के स्थलों को देखकर मन प्रसन्न हो जाता है. देवनगरी राजगीर कई धर्मों की संगमस्थली है. यह राजगीर जैन, बौद्ध और हिन्दू धर्मावलंबियों का तीर्थ है. भगवान महावीर ने ज्ञान प्राप्ति के बाद पहला उपदेश विपुलगिरि पर्वत पर दिया था. इसके अलावा राजगीर के आस-पास की पहाड़ियों पर कुल 26 जैन मंदिर बने हुए हैं, किन्तु वहां पहुंचना आसान नहीं है, क्योंकि वहां पहुंचने का रास्ता अत्यंत दुर्गम है.

यहाँ के दर्शनीय स्थल:

बौद्ध स्तूप: जापान बुद्ध संघ ने गृद्धकूट पर्वत की चोटी पर एक विशाल बौद्ध स्तूप का निर्माण करवाया है. इस पर्वत पर भगवान बुद्ध ने कई महत्वपूर्ण उपदेश दिए थे. पहले यहां पहुंचने के लिए कठिन रास्ते से होकर गुजरना पड़ता था परंतु अब रोप वे की व्यवस्था हो गई है. इससे यहां की यात्रा और अधिक रोमांचकारी हो गई है. स्तूप के चारो कोनों पर भगवान बुद्ध की चार प्रतिमाएं स्थापित हैं.

गृद्धकूट पर्वत: भगवान बुद्ध भी रत्नागिरि पर्वत के ठीक बगल में स्थित गृद्धकूट पहाड़ी पर उपदेश देते थे. इस पहाड़ी पर उस स्थल के अवशेष मौजूद हैं. बुद्ध के निर्वाण के बाद बौद्ध धर्मावलंबियों का पहला सम्मेलन वैभारगिरि पहाड़ी की गुफा में हुआ था. इसी सम्मेलन में पालि साहित्य का उम्दा ग्रंथ 'त्रिपिटक' तैयार हुआ था.

जरासंध का अखाड़ा: विपुलगिरि पर्वत जरासंध की राजधानी थी. भीम और जरासंध के बीच 18 दिनों का मल्लयुद्ध यहीं हुआ था. जरासंध इसमें भगवान श्रीकृष्ण की कूटनीति से मारा गया था. राजगीर में हर 3 साल के बाद मलमास मेला लगता है. देश-दुनिया के श्रद्धालु यहां प्रवास करते हैं और गर्म कुंडों में स्नान कर पाप से मुक्ति की कामना करते हैं.

सप्तकर्णी गुफाएं : सप्तकर्णी गुफा राजगीर की एक पहाड़ी में स्थित गुफा है. कुछ सूत्रों के अनुसार प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन इसी स्थान पर हुआ था. यहां गरम जल का एक स्त्रोत है जिसमें श्रद्धालुगण

स्नान करते हैं. सप्तकर्णी गुफा के स्थल पर ही पहला बौद्ध परिषद का गठन हुआ था जिसका नेतृत्व महाकस्साप ने किया था. भगवान बुद्ध कभी - कभार यहां रहा करते थे और यह अतिथि संन्यासियों के ठहरने के लिए प्रयोग में लाया जाता था.

बिम्बिसार का बंदीगृह : बिम्बिसार जेल गृद्धकूट पहाड़ी का एक सुंदर दृश्य प्रस्तुत करता है. भगवान बुद्ध के एक कट्टर अनुयायी, बिम्बिसार को उसके बेटे अजातशत्रु द्वारा यहाँ कैद किया गया था. अजातशत्रु ने अपने पिता से कारावास की जगह चयन करने के लिए पूछा था. राजा बिम्बिसार ने एक स्थान चुना, जहां से वे भगवान बुद्ध को देख सकें. इस बंदीगृह से वह गृद्धकूट और भगवान बुद्ध को खिड़की से देख सकते थे.

सोना भवन (स्वर्ण भंडार) : यह स्थान प्राचीन काल में जरासंध का सोने का खजाना था. कहा जाता है कि अब भी इस पर्वत की गुफा के अंदर काफी मात्रा में सोना छुपा है और पत्थर के दरवाजे पर उसे खोलने का रहस्य भी किसी गुप्त भाषा में खुदा हुआ है. वह किसी और भाषा में नहीं बल्कि शंख लिपि है और वह लिपि बिंदुसार के शासन काल में चला करती थी.

घोड़ा कटोरा झील : घोड़ा कटोरा झील राजगीर स्थित एक महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल है. यह झील अपने आप में दर्शनीय तो है ही साथ ही यहां भारत के कोने-कोने से विभिन्न प्रकार के पक्षी अपने प्रवास के लिए आते हैं. यहां पक्षियों का पूरे वर्ष आना-जाना लगा रहता है. पर्यटक यहां पहुंच कर आंखों के साथ-साथ दूरबीन से भी इन प्रवासी पक्षियों का अवलोकन करते हैं. इस क्षेत्र में अधिकांश पक्षी निर्भीक होकर इधर-उधर विचरण करते देखे जा सकते हैं. इसी झील में हाल ही में भगवान बुद्ध की 70 फीट ऊंची प्रतिमा का अनावरण किया गया है जिसने इस झील के आकर्षण में चार चांद लगा दिए हैं.

राजगीर का प्रसिद्ध गर्म कुंड : वैभव पर्वत की सीढ़ियों पर मंदिरों के बीच गर्म जल के कई झरने हैं, जहां सप्तकरणी गुफाओं से जल आता है. इन झरनों के पानी में कई चिकित्सीय गुण होने के प्रमाण मिले हैं. राजगीर में गर्म पानी का प्रसिद्ध कुंड आज भी इसके महत्व को दर्शाता है तथा हमें अपनी ओर आकर्षित करता है.

पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान ब्रह्मा के मानस पुत्र राजा बसु ने राजगीर ब्रह्मकुंड परिसर में एक यज्ञ का आयोजन कराया था. ऐसी मान्यता है कि इन पवित्र जलस्त्रोतों में स्नान करने से मनुष्य के सारे पाप धुल जाते हैं तथा चर्म रोग की बीमारियों से भी मुक्ति मिलती है.

इसके अलावा भी राजगीर में सैकड़ों दर्शनीय स्थल हैं जो अपने अंदर पूरा इतिहास समेटे हुए हैं. मणियार मठ, नौलखा मंदिर, जापानी मंदिर, बाबा सिद्धनाथ का मंदिर, तपोवन, जेठियन बुद्ध पथ, वेनुवन, वेनुवन विहार, जैन मंदिर, श्रीकृष्ण भगवान के रथ के चक्कों के निशान, सुरक्षा दीवार, सामस स्थित तालाब और तेल्हार आदि देखे जा सकते हैं.

इस पौराणिक नगरी राजगीर तीर्थ के बारे में भारतीय ग्रंथ 'वायु पुराण' के अनुसार मगध सम्राट बसु द्वारा राजगीर में 'वाजपेय यज्ञ' कराया गया था. उस यज्ञ में राजा बसु के पितामह ब्रह्मा सहित सभी देवी-देवता राजगीर पधारे थे. यज्ञ में पवित्र नदियों और तीर्थों के जल की जरूरत पड़ी थी. कहा जाता है कि ब्रह्मा के आह्वान पर ही अग्निकुंड से विभिन्न तीर्थों का जल प्रकट हुआ था. उस यज्ञ का अग्निकुंड ही आज का ब्रह्मकुंड है. पुरुषोत्तम मास, सर्वोत्तम मास में यहां धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति की महिमा है.

मलमास की संकल्पना तथा राजगीर का महत्व: ऐसी किंवदंती है कि भगवान ब्रह्मा से राजा हिरण्यकश्यप ने वरदान मांगा था कि रात-दिन, सुबह-शाम और उनके द्वारा बनाए गए 12 मास में से किसी भी मास में उसकी मौत न हो. इस वरदान को देने के बाद जब ब्रह्मा को अपनी भूल का अहसास हुआ, तब वे भगवान विष्णु के पास गए. भगवान विष्णु ने विचारोपरांत हिरण्यकश्यप के अंत के लिए 13वें महीने का निर्माण किया. धार्मिक मान्यता है कि इस अतिरिक्त 1 महीने को मलमास या अधिकमास कहा जाता है. वायु पुराण एवं अग्नि पुराण के अनुसार इस अवधि में सभी देवी-देवता यहां आकर वास करते हैं. इसी अधिकमास में मगध की पौराणिक नगरी राजगीर में प्रत्येक ढाई से तीन साल पर विराट मलमास मेला लगता है. यहां आने वाले लाखों श्रद्धालु पवित्र नदियों प्राची, सरस्वती और वैतरणी के अलावा गर्म जलकुंडों यथा ब्रह्मकुंड, सप्तधारा, न्यासकुंड, मार्कंडेय कुंड, गंगा-यमुना कुंड, काशीधारा कुंड, अनंत ऋषि कुंड, सूर्य कुंड, राम-लक्ष्मण कुंड, सीता कुंड, गौरी कुंड और नानक कुंड में स्नान कर भगवान लक्ष्मी-नारायण मंदिर में अराधना करते हैं.

प्राचीन धरोहरों की राजधानी राजगीर में चीन, जापान, श्रीलंका, वियतनाम, हॉंगकॉंग, सिंगापुर, फिलिपीन्स, दक्षिण कोरिया, थाईलैंड, बर्मा, नेपाल, भूटान, अमेरिका और इंग्लैंड सहित राजस्थान, पश्चिम बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, कर्नाटक से भी असंख्य पर्यटकों का आना-जाना लगा रहता है.

गुरुनानक देव जी महाराज के आगमन से भी इस नगर का इतिहास जुड़ा हुआ है. जब अपने साथी भाई मरदाना जी के साथ गुरू जी राजगीर आए तब पीने वाले जल की व्यवस्था नहीं होने से भाई मरदाना प्यास से व्याकुल हो गए. इसके पश्चात् गुरू जी से जल के लिये प्रार्थना करने लगे. गुरु जी ने एक स्थान की ओर इशारा कर वहाँ की मिट्टी हटाने का आदेश दिया. थोड़ी सी खुदाई के बाद ही उस स्थान से एक निर्मल शीतल जल का सोता फूट पड़ा जो आज भी गर्म कुण्ड जाने के रास्ते में विद्यमान है. गुरुनानक देव जी की याद में एक सुन्दर विशाल भवन गुरद्वारे के रुप में सुशोभित हो रहा है.

धनंजय कुमार सिंह
क्षे.का. पटना

Importance of Cyber Security Awareness & challenges in Banking Sector

Gone are the days when people used to carry money in their purses or vanity bags for any purchase. With newer technologies getting invented, one need not transact with hard cash anymore. With Google Pay or Phone pay in vogue, you can buy even vegetables, fruits or anything for that matter anywhere without cash. However understanding the risks involved in such digital transactions is also a paramount requirement in this fast-moving world. That is why cyber security comes into the picture.

Safeguarding customers' assets is the primary purpose of Cybersecurity in digital banking. As people go cashless, more and more activities or transactions are done online. People use their digital money like credit cards and debit cards for transactions which require to be protected under Cybersecurity.

With an increase in digitalization, Cybersecurity dangers have also grown enormously. We hear about people getting duped in digital banking. As the world is increasingly connected digitally, it has also opened up entry points for cybercriminals; therefore, Cybersecurity in digital banking is the need of the hour.

- **Cybersecurity :** Cybersecurity is the practice of guarding electronic systems like computers and data from malicious attacks. It is also called Information technology security or electronic information security. Cybersecurity means technology and practices designed to protect networks, devices etc. from attack, damage from any unauthorized access.
- **Need for Cybersecurity in digital banking :** Cybercrimes in digital banking not only affect customers, but also affects banks while they attempt to recover the data spending a considerable amount of money. A strong Cybersecurity is vital for banks as data breaches would affect their operations and reputation. Cybersecurity in digital banking ensures that sensitive data is safe and secure.
- **Challenges relating to Cybersecurity in digital banking:** Elements that have posed a severe challenge to the Cybersecurity in digital banking are.
  a) Awareness : Awareness among people regarding the Cybersecurity has been quite low. However, Reserve Bank of India is creating mass awareness through advertisements. Many financial institutes invest in training and improving the overall Cybersecurity awareness among the people.
  b) Identity and Access Management : Identity and access management has been an important element of Cybersecurity, particularly, when hackers are active in creating bad software requiring only one hacked credential to enter into an enterprise network.
  c) Smartphone Apps & Social media : Most of the banking institutions have adopted mobile phones as a medium to conduct business. As the base increases each day, it also becomes the ideal choice for exploiters. Mobile phones have become an attractive target for hackers as we see a rise in mobile phone transactions. Adoption of social media has led hackers exploit even more. Less aware customers put out their data for anyone to see which is exploited by the attackers.
  d) Rise of Ransomware : The recent events of malware attacks bring our focus to the rising menace of ransomware. Cybercriminals use methods that avoid detection by endpoint protection code that focuses on executable files.
- **Solution for Cybersecurity threat :** Following methods can be adopted to curtail the threat to Cybersecurity in digital banking.
  - The customer must be made aware of not disclosing their banking credentials to anyone. They must report to the Cybersecurity cell in case of any suspicious developments in their transactions or in their bank account as quickly as possible.
  - As Banking, Financial Services, and Insurance (BFSI) sector is highly regulated, banks invest time, money, and effort in employing the best technology.
  - Moving towards integrated security where all components work and communicate together is more beneficial.
  - The mindset where security is seen as a cost must make way for security as a plus. The risk of security threats and its impact must be analyzed then only the importance of security can be truly understood.
  - Banks and institutions must invest in technologies that can recognize and eliminate the practices and actions used in exploits.
  - Analytics is an essential element in leveraging cyber resilience. A new generation of security analytics has come out which can store and assess a huge number of security data in real-time.
  - Today data is stored in different devices and in the cloud, so every system that holds sensitive data must be protected with security.
  - Firewalls may increase protection, but won't stop attack unless updated anti-virus and anti-malware applications are used. Updating the latest applications can deter potentially disastrous attacks on systems.
- **Conclusion :** Cybersecurity in digital banking is something that cannot be compromised with. Growing in digitalization in the banking industry has resulted in more attacks from cyber Criminals. A foolproof Cybersecurity that doesn't compromise with the safety of customers and financial institution's data and money is needed.

Kalpana Gudigar
R.O. Anand

What is cess and surcharge?

Often, we get confused or understand that cess and surcharge are one and the same but pronounced differently at different places. Let us learn what is cess, surcharge and the difference.

Cess:

- A tax on tax imposed by the Central Government.
- Levied by the Government for a specific purpose.
- Generally, cess is expected to be levied till the time the government gets enough money for that purpose.
- For example, a cess for financing primary education – the education cess is to be spent only for financing primary education and not for any other purpose.
- A cess is different from the usual taxes like GST and personal income tax and it is imposed as an additional tax besides the existing tax.
- For example, the health & education cess of 4% on personal income tax of 30% is imposed as a tax on the prevailing 30%. As a result, the total tax rate goes up to 31.20% (30% basic rate + 4% (cess).

Surcharge :

- Surcharge is a charge on any tax and charged on tax already paid. As the name suggests, surcharge is an additional charge on tax. The main types are surcharges levied on personal Income Tax and on Corporate tax.
- From the revenue side, surcharges are important as around 35% of all cesses and surcharges come from the surcharge on direct taxes.
- A surcharge of 10% on personal income tax when the basic personal income tax rate is 30% effectively raises the combined tax burden to 33%.

Prevailing Surcharge Rates:

i. 10% of Income tax if total income > Rs.50 lakh

ii. 15% of Income tax if total income > Rs.1 crore

iii. 25% of Income tax if total income > Rs.2 crore

iv. 37% of Income tax if total income > Rs.5 crore

Difference between the usual taxes, surcharge and cess.

- The usual taxes go to the consolidated fund of India and can be spent for any purposes.
- Surcharge also goes to the consolidated fund of India and can be spent for any purposes.
- Cess should be kept as a separate fund after allocating to Consolidated Fund of India, and can be spent only for a specific purpose for which it is meant after due appropriation made by the Parliament.
- Cess should be eliminated after the purpose is fulfilled.
- Central Government need not share the revenue received in the form of cess and surcharge with states.
- Regarding all other major taxes which come under the divisible pool can be shared with the states as per the recommendations of the Finance Commission.

S B Karimullah Sahib
R.O.Punjagutta, Hyderabad

आजादी के 75 वर्ष - सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता

हम सभी इस वर्ष स्वतंत्र भारत के 75 वर्ष मना रहे हैं. भारत की कला और संस्कृति को देखते हुए यह बात स्पष्ट होती है कि भारत प्राचीन काल से ही आत्मनिर्भर रहा है. स्वयं के हुनर से स्वयं का विकास करना ही आत्मनिर्भरता का सही मतलब है. आज़ादी के इन 75 वर्षों में भारत ने अनेक क्षेत्रों में उन्नति की है. आज हमारा भारत आत्मनिर्भर भारत बनने के पथ पर बढ़ रहा है.

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की भारत को एक आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने संबंधी एक दृष्टि (विज़न) है जिसका पहली बार सार्वजनिक उल्लेख उन्होंने 12 मई, 2020 को किया था जब वे कोरोना वायरस विश्वव्यापी महामारी संबंधी एक आर्थिक पैकेज की घोषणा कर रहे थे. आत्मनिर्भरता से तात्पर्य है कि हमारा देश सभी क्षेत्रों में खुद पर निर्भर हो, उसको किसी भी दूसरे की मदद नहीं लेनी पड़े. शास्त्रों में कहा गया है कि 'सर्व परवंश दुखं सर्वमात्मवंश सुखम' अर्थात् सब तरह से दूसरों पर निर्भर रहना ही दुख है एवं सब प्रकार से आत्मनिर्भर होना ही सुख है. आत्मनिर्भर भारत में हर उस क्षेत्र पर ध्यान दिया जाएगा, जिसमें भारत एक आत्मनिर्भर राष्ट्र बन सकता है. किंतु कहा जाता है कि जीवन के हर क्षेत्र में सफल होने के लिए ईमानदारी और सत्यनिष्ठा बहुत आवश्यक है.

'सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता का सपना हो साकार,
बस यही है भ्रष्टाचार उन्मूलन का सही आधार.'

प्राचीन काल में सोने की चिड़िया कहा जाने वाला हमारा देश भारत लगभग 200 वर्षों तक अंग्रेजी हुकूमत का गुलाम रहा. हमारे सत्यनिष्ठ स्वतंत्रता सेनानियों ने जन सहयोग के साथ देश को आजाद कराने में कोई कसर नहीं छोड़ी. आखिरकार 15 अगस्त सन 1947 को हमें आज़ादी मिल गई. आज देश को आज़ाद हुए 75 वर्ष पूरे होने को हैं. 75 वर्षों के इस सफर की शुरुआत में अड़चनें तो बहुत आईं परंतु भारत ने पीछे मुड़कर नहीं देखा. देश अपने लक्ष्यों की ओर एकटक देखता हुआ आगे बढ़ता ही रहा.

आज देश प्रगति के पथ पर निरंतर आगे बढ़ता ही जा रहा है. आज कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसमें भारत ने अपना परचम ना लहराया हो. लेकिन यह 75 वर्षों का सफर बिल्कुल भी आसान नहीं था. देश आज जिस मुकाम पर है, वहां पहुंचने में देश ने कड़ी मेहनत की है.

आज देश प्रगति तो कर रहा है लेकिन देश की आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक प्रगति में भ्रष्टाचार एक मुख्य बाधा है. भ्रष्टाचार उन्मूलन हेतु सभी पक्षों जैसे सरकार, नागरिकों और निजी क्षेत्रों को मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है. इस दिशा में सत्यनिष्ठा से नीति निर्माण किया जाना चाहिए.

'सत्यनिष्ठा के साथ हो नीति का निर्माण,
इससे भ्रष्टाचार का होगा जड़ से समाधान.'

हमने बचपन से ही सत्यनिष्ठा एवं ईमानदारी शब्दों को सुना है. अक्सर कहा जाता है कि जीवन में हमें इन मूल्यों का पालन करना चाहिए. क्या ये दोनों शब्द एक ही हैं अथवा दोनों ही अलग- अलग हैं. एक चोर ईमानदार हो सकता है मगर सत्यनिष्ठ नहीं हो सकता है क्योंकि वह सत्य की राह पर न चलकर असत्य की राह को चुनता है.

सत्यनिष्ठा का जीवन में बड़ा महत्व माना गया है. इसके जीवन में अनुसरण से कोई भी व्यक्ति अपने जीवन को नई दिशा दे सकता है. सच्चाई एवं ईमानदारी इसके करीबी अर्थ वाले शब्द हैं अर्थात् जो इंसान जीवन में सत्य की राह पर चलता है अथवा वह जो कुछ कहता है तथा उन्हीं बातों को अपने जीवन में उतारता है उन्हें सत्यवादी व सत्यनिष्ठ कहा जाता है.

अत: आत्मनिर्भरता प्राप्त करने हेतु हर व्यक्ति का सत्यनिष्ठ होना अत्यंत आवश्यक है. सत्यनिष्ठा का अर्थ है 'अपने मूल्यों या नैतिक प्रतिमानों के साथ दृढ़ता से जमे रहना.' इसका मतलब हमें अपने देश को ऊंचाई तक पहुंचाने के लिए सत्यनिष्ठा के साथ आत्मनिर्भरता को बढ़ाना होगा. नई परंपराएं यूं ही स्थापित नहीं होतीं, बल्कि उनके लिए दृढ़ इच्छाशक्ति और संकल्प की ज़रूरत होती है. एक नागरिक के रूप में हमारा आचरण ही भारत का सुनहरा भविष्य निश्चित कर नए भारत (आत्मनिर्भर भारत) की दिशा तय कर रहा है. यह आरम्भ एक नए भारत की नींव का है. अगर आत्मनिर्भरता के लिए सत्यनिष्ठा का सहारा लिया जाएगा तो देश को रोजगार उपलब्ध होगा, देश में भ्रष्टाचार का विनाश होगा व हर क्षेत्र में पारदर्शिता आएगी.

परंतु यह सब संभव होगा तो केवल सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता और सुशासन के बल पर. नीतीपरक कार्य पद्धतियों को बढ़ावा देकर ईमानदारी और सत्यनिष्ठा की संस्कृति को आगे बढ़ाने की आवश्यकता हैं. सभी सरकारी कर्मचारियों हेतु उनके कार्यों के ईमानदार निष्पादन के लिए नीति संहिता बनाए जाने की आवश्यकता है. तभी देश आत्मनिर्भर बनने के स्वप्न को साकार कर सकता है.

'आज़ाद 75 सालों का जश्न हम मनाएंगे,
सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भर भारत हम बनाएंगे.'

अत: सत्य को आधार बनाकर चलने वाले को कभी पराजय का मुंह नहीं देखना पड़ता है, उनके सभी कार्य में उनको सफलता मिलती है. यदि भारत सत्यनिष्ठा के साथ आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर होता रहा तो भारत को पुन: विश्वगुरु बनने से कोई रोक नहीं सकेगा .

सिंपल कंवर
क्षे.का. दिल्ली (दक्षिण)

Monday Motivation

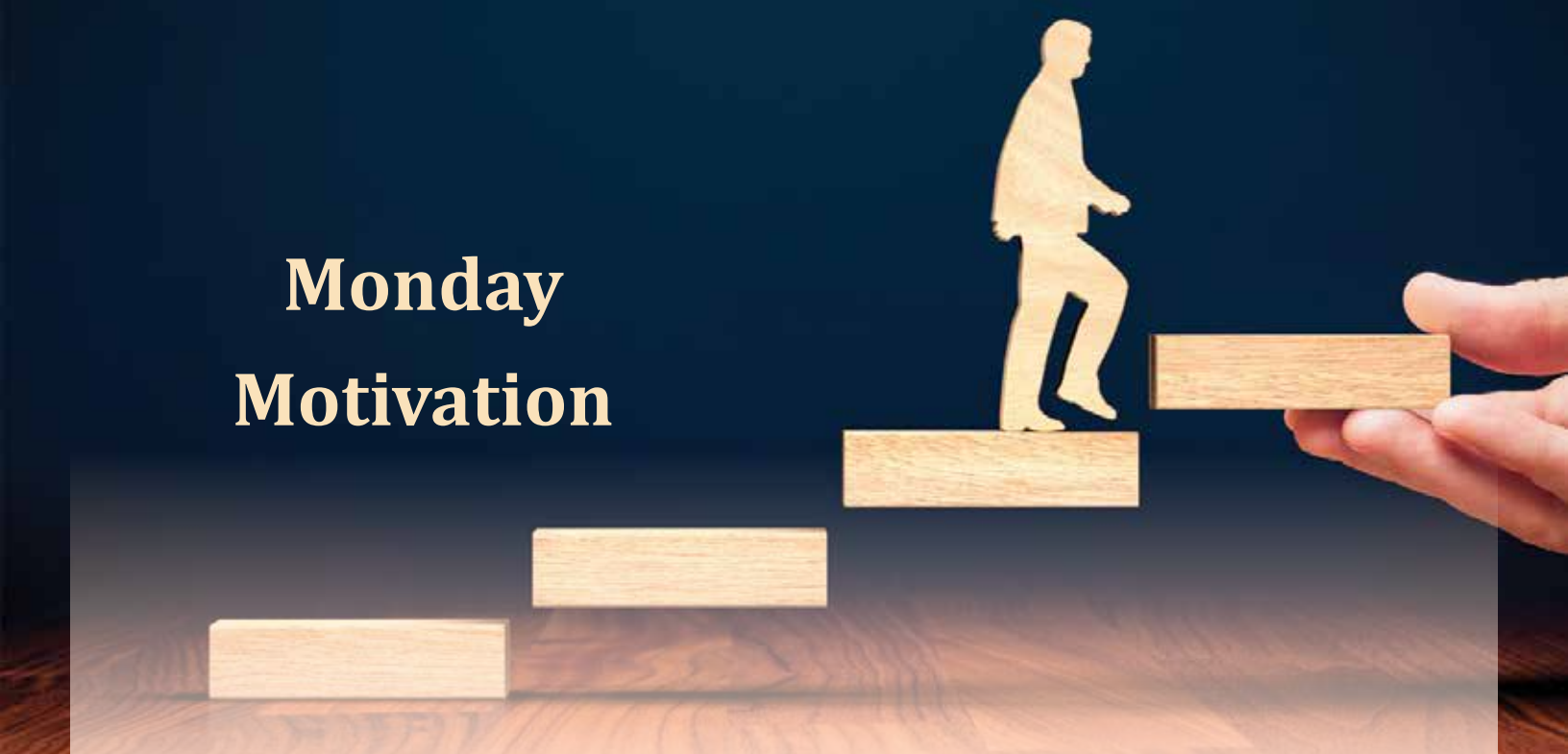

Its Monday morning and like any Monday morning the first thing which I see trending on social media is Monday Motivation. From common people to unknown bluetick handlers to verified celebrity role models, everyone participates in an unknown race of presenting a copied Quote which will change the world in just a morning the Monday Motivational Morning.

Just a decade ago, I still remember how I used to get motivated by such trends. I would read the top circulating quotes, thoughts and pictorial messages, re-read them, copy those messages, forward them to my friends, With subdued promise to myself for adapting the great thoughts in my lifestyle.

A decade of self-imposed adaption is enough for me to pen. What went wrong? Why the results are not favorable?

Individually in our Motivational Monday morning, we get impressed with a Quote, we day-dream and finally make a decision in the evening. This exercise is not restricted to an individual, any formal or informal group and even organization is doing this consciously or sub-consciously.

The Seven steps of Management are described as POSDCORB, which stands for Planning, Organising, Staffing, Directing, Coordinating, Reporting and Budgeting.

A Public Sector Enterprise like ours is also not unaffected by Monday Motivation. Apparently, there is a significant difference in P/E ratio of prominent private sector banks and prominent public sector banks. A P/E ratio or price-to-earning ratio indicates the Rupee amount an investor can expect to invest in a company in order to receive Re 1 of that company's earnings. The ratio is used for valuing companies and to find out whether they are overvalued or undervalued.

A private bank as well as a public sector bank, both have similar retail product lines, similar market penetration, similar prevailing technologies, similar international exposure, similar deployment of funds, same compliance and very same statutory obligations. Only the price-to-earnings ratio is dissimilar, Why?

The biggest risk is not taking any risk... In a world that is changing really quickly, the only strategy that is guaranteed to fail is not taking risks. -Mark Zuckerberg

Instead of taking risks and leading with First movers' advantage, we approve the success of others. Unfortunately, most of the time the Risk of technology getting outdated is much higher. The execution should also be tailor made as per our organization's structure, culture and vision. And the obvious result should not be a reason for Plan-B. A clear Purpose will give Planning of the principles of administrative theory in the system of administration. A clear role, responsibility and accountability will execute the job with less deviation. The administrative department can also demonstrate greater support for line activities.

First Mover Advantage can be well-defined as an organization's skill to be better off than its competitors as an effect of being first to market in a new product category. Strong first mover advantages, improve a firm's market share or profitability in the long term. While no advantage lasts forever, organizations that thrive in building strong first mover advantages tend to dominate their product categories for extra years until its maturity. The results may be favorable or unfavorable but certainly Motivational.

Deepak Modi
C.O. Annexe Mangaluru

शकुन-अपशकुनः अंधविश्वास या वैज्ञानिक तर्क

शकुन या अपशकुन मानना एक पारंपरिक सोच पर आधारित है. अक्सर हम अपने बड़े बुजुर्गों से शकुन-अपशकुन या शुभ-अशुभ जैसी बातें सुनते आए हैं. क्या सच में शुभ-अशुभ होता है. जैसे कि रात में नाख़ून काटना, ग्रहण के समय बाहर ना निकलना या ग्रहण को न देखना. बिल्ली का रास्ता काटना इत्यादि. इन सभी को अशुभ या अपशकुन माना जाता है. बुजुर्गों की बातें तो सच ही होती थीं पर उनके पीछे कोई शुभ-अशुभ नहीं बल्कि तर्क होते थे. जरूरत है हमें यह समझने की कि इस सोच की उत्पत्ति कैसे हुई और क्या ये आज के युग में भी प्रभावशाली हैं? आइए हम इन बातों के पीछे का तर्क एक कहानी के माध्यम से जानते हैं.

एक बार की बात है, किसी गांव में एक गुरुजी अपने कई शिष्यों और एक प्यारी सी छोटी बिल्ली के साथ एक आश्रम में रहा करते थे. गुरु जी को उस बिल्ली से बहुत लगाव था और बिल्ली को गुरुजी से. गुरु जी जहां भी जाते प्रवचन में या भोजनालय में, बिल्ली गुरुजी के पीछे-पीछे 'म्याऊं-म्याऊं' करके घूमा करती थी. यहां तक कि जब गुरुजी ध्यान के लिए बैठते थे तब भी बिल्ली आ कर उनकी गोद में बैठ जाती थी. इस वजह से गुरुजी का ध्यान भंग हो जाता था. कुछ दिनों तक तो गुरुजी सहन करते रहे लेकिन उनकी साधना में यह बिल्ली बाधा पहुंचा रही थी. इस समस्या के समाधान के लिए गुरु जी के शिष्यों ने एक तरकीब निकाली. जब भी गुरुजी ध्यान के लिए बैठते तो एक-दो घंटे के लिए बिल्ली को बांध दिया जाता और इस प्रकार गुरु जी की समस्या का समाधान हो गया. धीरे-धीरे समय बीता. गुरूजी बूढ़े हो गए और स्वर्ग सिधार गए. इसके बाद उनका शिष्य उनकी गद्दी पर बैठा और वह भी जब ध्यान करता तो उस बिल्ली को बांध दिया जाता. नया मोड़ तब शुरू होता है जब एक दिन अचानक बिल्ली भी मर जाती है. तब उस आश्रम के नये गुरुजी ने सोचा, उस बिल्ली में कुछ ना कुछ तो था इस कारण ही मेरे पहले के गुरुजन उस बिल्ली को खूंटे से बांधा करते थे. तो उस शिष्य ने एक नई बिल्ली मंगवाई और तब जाकर उसे लगा कि वह अब ध्यान कर सकता है. तो मेरे मित्रों, समस्या यहीं से शुरू होती है, पहले गुरु ने बिल्ली इसलिए बांधी थी क्योंकि वह उनके ध्यान में बाधा डाल रही थी. बिल्ली को खूंटे से बांधने का यहां कारण भी मौजूद था लेकिन उनके उत्तराधिकारी शिष्यों ने बिल्ली के मरने के बाद कई बिल्लियां लाकर खूंटे से बिना कारण के बांधना शुरू किया ओर यह तार्किक क्रिया अंधविश्वास और पाखंड में बदल गई.

इसी तरह बिल्ली के रास्ता काटने वाली बात हम अपने पूर्वजों से सुनते आए हैं. कई लोगों द्वारा इसे पूरी अंधश्रद्धा से स्वीकार कर लिया जाता है तो वहीं कुछ के द्वारा इसे हंस कर उड़ा दिया जाता है. आप लोगों का भी कभी न कभी बिल्ली ने रास्ता जरूर काटा होगा. आपने अपने घरवालों से सुना होगा कि बेटा थोड़ी देर बाद आगे जाना बिल्ली का रास्ता काटना अशुभ होता है. ये पुराने रीति रिवाज हैं. लेकिन सबसे बड़ी मूर्खता वाली बात ये है कि आज भी इनको माना जाता है. आप सोच रहे होंगे इसका कारण तो बताया नहीं. तो चलिए जानते हैं ऐसा क्यों करते थे. बात ये है कि 17-18वीं शताब्दी में भारत में प्लेग और दमा महामारी फैल रही थी और भारतवासी सदा की तरह पैदल और नंगे पांव चला करते थे. शोध के बाद पता चला था कि बिल्लियां इन महामारी के विषाणु के फैलने की वाहक थीं. हम जानते हैं कि प्लेग जैसी बीमारी का वाहक चूहा होता है. बिल्ली चूहे खाने वाली प्रजाति है. जिसका सबसे ज्यादा चूहों के साथ रिश्ता है जिससे संक्रमण फैलने का खतरा सबसे ज्यादा होगा. उनके शरीर के बालों से प्लेग का विषाणु, मनुष्य में फैल रहा था. वे जिस रास्ते को जाती थीं उस रास्ते पर उसके बालों से झड़कर विषाणु गिर जाते थे इसलिए लोगों ने उस रास्ते पर जाना ही बंद कर दिया, जहां से बिल्लियां गुजर रहीं थीं और फिर इसके बाद तो यह प्रथा बन गई. लोगों ने इसे पुरानी मान्यताओं के रूप में लिया. अब समझ गए न, ऐसे में कोई बिल्ली आपका रास्ते काटे तो न तो दो मिनट ठहराना न अपना रास्ता बदलना. बिल्ली द्वारा रास्ता काटना और उस रास्ते को पार नहीं करना किसी जमाने में सही रहा होगा और इसके पीछे गुरुजी की बिल्ली की

तरह ही कोई तार्किक कारण था जो आज मौजूद नहीं है.

आपने अक्सर अपनी मम्मी से सुना होगा कि रात में नाख़ून काटना अपशकुन होता है. आप में से कई तो बात मान लेते होंगे लेकिन कुछ नहीं मानते होंगे. लेकिन आपको पता है इसके पीछे का तर्क क्या है. ये परंपराएं आज की नहीं हैं, उस युग की हैं जब बिजली का आविष्कार नहीं हुआ था. उस समय नाखून काटने के लिए किसी तेज धारदार औजार की जरूरत होती थी. उस वक्त नेलकटर जैसे शार्प टूल का भी अविष्कार नहीं हुआ था. हम जानते हैं कि पहले हमारे घरों में अंधेरा होने पर दिये या लालटेन का प्रयोग होता था जिससे प्रकाश पूरी तरह से घर को रोशन नहीं कर पाता था. अंधेरे में उस समय नाखून काटने पर अंगुली कट जाने की भी संभावना होती थी इसलिए उस वक्त आवश्यकता थी कि नाखून दिन में काटे जाएं लेकिन समय बीत गया, दिये और लालटेन के युग से हम एलईडी लाइट के युग में प्रवेश कर गए लेकिन नियम वही रहा और जो नियम उस वक़्त की मजबूरी थी आज वो अपशकुन बन गया. अजीब है न!

जब भी ग्रहण लगता है अक्सर आपको सुनने को मिलता है कि आज ग्रहण के समय बाहर नहीं निकलना चाहिए, ग्रहण को देखना अशुभ होता है. इसके पीछे शुभ-अशुभ नहीं बल्कि वैज्ञानिक तर्क है. सूर्य ग्रहण के दौरान सूर्य से हानिकारक विकिरण निकलते हैं जो हमारी आँखों के रेटिना को हानि पहुंचा सकते हैं. परिणाम स्वरूप आंखें भी खराब हो सकती हैं. इसलिए ग्रहण को नंगी आंखों से नहीं देखना चाहिए. लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि ग्रहण को देखना अशुभ होता है. ये हानिकारक तो हो सकता है लेकिन अशुभ नहीं. यदि आपका मन सूर्य ग्रहण देखने को करता है तो आप सोलर व्यूइंग ग्लास, सोलर फिल्टर या आइक्लिप्स ग्लास की सहायता ले सकते हैं. इसके अलावा एक्स-रे प्लेट से भी सूर्य ग्रहण देख सकते हैं. ऐसी कई रूढ़िवादी परमपरांए हैं जो आज तक चली आ रही हैं.

अन्ततः पुरानी बातों को तोड़-मरोड़ कर रूढ़िवादी परंपरा बना देना तो रूढ़िवादियों का धर्म सा है और इसीलिए ज्यादातर घटनायें जो किसी वजह से मना की जाती थीं, उनको शुभ-अशुभ से जोड़ दिया गया. आश्चर्य की बात तो ये है कि हमने भी बिना कुछ सोचे इसे मानना शुरू कर दिया. हम लोग केवल अंधविश्वास-अंधविश्वास चिल्लाकर अंधविश्वास का अंत नहीं कर सकते. किसी समय कोई चीज सही थी लेकिन अब अगर हम उसे बार-बार उसी बिल्ली की तरह अपने से चिपकाए बैठे हैं तो वह चीज अंधविश्वास है. शुभ-अशुभ जैसा कुछ नहीं होता. पुरानी परंपराओं को मानना गलत नहीं, पर एक बार तर्क द्वारा उसकी परख अवश्य कर लेनी चाहिए.

अपराजिता प्रीति
रुद्रमपुर शाखा, खम्मम

वाराणसी
अलौकिकता और लौकिकता का व्यतिरेक (कांट्रास्ट)

वाराणसी जिसे, बनारस के नाम से भी जाना जाता है भारत की संस्कृति और परिमल (Aura) का प्रतिदर्श है. यह विश्व के प्राचीनतम शहरों में से एक है; इतना प्राचीन कि इस नगर के नाम का जिक्र भारत के प्राचीन इतिहास, पुराण और मिथकों में भी पाया जाता है. इतिहास और पुराणों में इसका उल्लेख काशी नगरी के नाम से किया गया है. यह एक आध्यात्मिक शहर है जो भारत के उत्तर पूर्व में गंगा नदी के किनारे स्थित है. कहते हैं कि काशी भगवान शिव के त्रिशूल की नोक पर बसा है. इसे समय की धुरी और प्रलय की मार भी मिटा नहीं पाये. अर्थात् इसे शिव का प्रश्रय प्राप्त है.

वाराणसी एक अतिसाधारण सा शहर है. इस नगरी में एक अद्भुत ताकत है. यह वक़्त के पहिये को थामकर आपको इतिहास और पुराणों की कथाओं में ले जाती है. यहाँ के हवा, पानी, पत्थर और घाट में भी कहानी कहने की अद्भुत शक्ति है. गंगा जिसे देवनदी कहा जाता

है उत्तर भारत की जीवन-रेखा है. यह नदी भारतवासियों के जीवन के साथ-साथ मृत्यु में भी अपनी अहम भूमिका निभाती है. कहते हैं कि बनारस में मृत्यु पाने वाले जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाते हैं.

पर्यटकों के लिए बनारस एक भिन्न अनुभव प्रदान करता है जो अच्छे और खराब की श्रेणी से एकदम अलग है. सुंदरता की परिभाषा से जुड़े स्टीरियो-टाइप को वाराणसी बड़ी सहजता से तोड़ता है. धूल से भरी सड़कें, सामान्य वेषभूषा में लोग, टूटी-फूटी इमारतें, अधनंगे साधु, संकरी-लंबी गलियाँ और बेतहाशा भीड़; ये सभी बनारस की अपनी विशिष्टताएँ हैं. इन विशिष्टताओं के साथ बनारस आपको बिलकुल भिन्न और आभामय परिवेश में ले जाता है. यह आभा आध्यात्म से पूर्ण रूप से जुड़ी हुई है. वाराणसी एक विशेष स्थान है जहां आप जीवन और मृत्यु को एक साथ मुस्कराते हुये देखते हैं. यहाँ भीड़ और धूल भरी गलियों के भी अपने रंग हैं. गलियों से गुजरते हुए आप चारों ओर जीवन का अनुभव करते हैं. आपको वाराणसी में अद्भुत स्थल देखने को मिलेंगे. जीवन के सुख से विराग और मृत्यु के दु:ख से अनुराग का अनुभव आप बनारस के घाट पर बैठकर कर सकते हैं. वाराणसी में मृत्यु को शुभ माना जाता है, क्योंकि यहाँ व्यक्ति के पुनर्जन्म का चक्र समाप्त हो जाता है.

सड़कें और घाट अक्सर व्यस्त और भीड़युक्त रहते हैं. आपने बहुत सारी शानदार जगहें देखी होंगी जिन्हें आप भूल नहीं पाएंगे. गंगा किनारे के घाटों की अपनी रौनक और विशेषताएँ हैं. यहाँ कई सारे घाट हैं जिनमें 09 घाट अपनी अलग विशिष्टताएं रखते हैं. घाट पर पत्थर की सीढ़ियाँ हैं जो गंगा के किनारे तक जाती हैं. सबसे बड़ा घाट दशाश्वमेघ घाट है जहां संध्या आरती का आयोजन किया जाता है. गंगा नदी के किनारे बसे लगभग हर एक शहर में गंगा आरती का आयोजन किया जाता है, लेकिन जो शान वाराणसी के घाट में है वह अन्य कहीं नहीं है. नौका विहार करते हुए आप पूरे शहर को बारीकी से देख सकते हैं.

मणिकर्णिका और हरिश्चंद्र घाट शव-दाह संस्कार के लिए प्रसिद्ध हैं. श्मशान वाराणसी का एक बड़ा हिस्सा है, इसलिए आप शवों को जलते हुए देखेंगे. मृत्यु और मृतकों के सम्मान में इन घाटों की तस्वीरें नहीं ले सकते. कुछ शव बिना दाह संस्कार के गंगा में डाल दिए जाते हैं. काशी नरेश का महल, काशी-विश्वनाथ मंदिर आदि यहाँ के अन्य दर्शनीय स्थल हैं.

बनारस प्राचीनकाल से ही भारत का शैक्षणिक, सांस्कृतिक और धार्मिक केंद्र रहा है. संगीत और नृत्य कला के मामले में भी बनारस की समृद्धि उल्लेखनीय है. बनारस ने भारत को अनेकों प्रसिद्ध दार्शनिक, कवि, संगीतकार, कलाविद और संत प्रदान किए हैं, जिन्होंने भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में काफी अहम भूमिका निभाई है. भारत के चार बड़े विश्वविद्यालय यहाँ स्थित हैं.

घाटों, आरती, संगीत और अध्यात्म से अलौकिक वातावरण बनारस को और विशिष्ट बनाता है. बनारस के कई आकर्षणों में एक है - बनारस की रेशमी वस्त्र कला. बनारसी के नाम से विश्व प्रसिद्ध वस्त्र निर्माण कला को आप यहाँ देख सकते हैं और खरीददारी भी कर सकते हैं. बनारसी साड़ियाँ और बनारसी दुपट्टे अपनी सुंदरता, चमक और महीन कारीगरी के लिए विश्वप्रसिद्ध हैं.

इसके साथ ही खानपान और स्वाद के मामले में भी बनारस काफी समृद्ध है. यहाँ के खाने-पीने की चीजें काफी सस्ती और स्वादिष्ट हैं. मिट्टी के कुल्हड़ में परोसी जाने वाली मलाईदार चाय हो या लस्सी, बनारस में इनका स्वाद और टेक्सचर अपने चरम पर होता है. सुबह के नाश्ते में गर्मागर्म लिट्टी-चोखा या कचौड़ी-सब्जी या अन्य कोई भी पकवान आप चखें, उनका स्वाद वाकई में लाजवाब और शानदार है. यहाँ लंबी- संकरी गलियों में आपको पूरे भारत में मिलने वाले सभी व्यंजन आसानी से मिल जाएंगे. साथ ही वेस्टर्न खाने भी आपको सस्ते और मौलिक रूप तथा स्वाद में मिल जाएंगे. सभी खाने के बाद बनारसी पान के साथ आप भोजन को विराम दे सकते हैं. बनारस के पान अपने नाम और स्वाद के लिए भारतवर्ष में उदाहरण के तौर पर जाने जाते हैं.

बनारस अपने आप में एक अनूठा अनुभव है जो भारत के किसी भी पर्यटन और दर्शनीय स्थल से एकदम भिन्न और अलग अनुभव प्रदान करता है. गंगा नदी, नदी किनारे के घाट, घाट पर आपको लौकिक और अलौकिक दोनों प्रकार के अनुभव एकसाथ प्राप्त होते हैं. यहाँ सभी प्रकार के लोग घाट के किनारे, एक प्लेटफॉर्म पर बिना किसी राग-द्वेष के बैठे और बातचीत करते हुये दिखाई देंगे. यहाँ की भाषा की भी अपनी एक मिठास है सामान्य तौर पर लोग भोजपुरी या हिन्दी में बात करते हैं, लेकिन उन भाषाओं में भी संस्कृत की आभा और शब्दावली इसे विशिष्ट बनाती है. यह अनुभव अपने आप में एक असाधारण भाव है जिसे आप केवल काशी-बनारस के घाट पर ही अनुभव करेंगे. मेरी व्यक्तिगत सलाह है कि हमें एक बार बनारस का अनुभव लेना चाहिए और यहाँ भ्रमण करें जिससे आपको वहाँ लोगों से चाहे-अनचाहे बात करने का मौका मिले.

सुजय कीर्ति
क्षे. का., हावड़ा

6 WAYS TO PROMOTE ENVIRONMENTAL SOCIAL & GOVERNANCE (ESG) INITIATIVES IN BANK

'An individual can Make a Difference, but a team can Make a Miracle' – Doug Pederson

Development in a large country such as ours, brings with it various challenges - the foremost being translating economic growth to sustainable development. Here are 5 ways in which Union Bank of India can make a Miracle to ensure sustainable development in the Bank:

1. Skill Training and Livelihood Enhancement : A growing economy like India requires a large and skilled workforce. In a recent survey conducted by NSSO it is observed that there are lack of training facilities in as many as 20 high growth industries viz. logistics, healthcare, construction, automobiles, hospitality. Our Bank can play an impactful role in augmenting the skill training initiatives of Skill Development Centers (SDCs)/NGOs aimed at creating sustainable livelihood opportunities for youth and women from economically weaker sections of society. This can be ensured by arranging soft loans through Union Bank for self-financing of training.

2. Sustainable Livelihood Finance : Through this initiative Bank can empower thousands of people, particularly women in rural parts of India. Under tie-up/partnership with NGOs/ Skill Development centres like Smile foundation, Unnati, NSDC etc, Bank can reach out to the un-banked and the under-banked segments of society and facilitate in providing them with livelihood finance through Union Bank Branches.

3. Environmental Sustainability : Sustainability is one of the core values of Union Bank of India and climate change mitigation and environmental improvements are essential elements of its strategy. Bank along with UniOne foundation and Union Bank Social Foundation Trust (UBISFT) can play a significant role in influencing behavior of staff towards this cause and introduce environmental friendly practices and tree plantation drives – on Republic Day, Independence Day and Gandhi Jayanti etc- in the Bank.

4. Promoting Healthcare and Hygiene : The pandemic has affected blood donation drives as voluntary donations decreased significantly. Our Bank can address the healthcare, hygiene needs of the community by organising health camps in partnership with hospitals and conduct Blood Donation drives and support the setup of 'Blood Storage Units' in rural locations that do not have a blood bank.

5. Promoting Education : Education is one of the building blocks of any nation. To promote learning by creating a conducive and effective learning environment in schools, Bank can facilitate a multitude of interventions such as educational sponsorships to students belonging to economically/socially/ physically challenged categories, running cost of reading programs, libraries.

6. Encourage Unionites to give Back : Our Bank along with Union Bank Social Foundation Trust (UBSFT) and UniOne members can encourage 75000+ Unionites to give back to society through various new initiatives such as donating/ investing man-hours in social work, 'Payroll Giving Program' to donate a part of their salary. This amount may be matched by the Bank and the combined amount donated to a cause.

Conclusion : Bank is already projecting its ESG initiatives in its quarterly investor presentations. The above mentioned initiatives can bring a new dimension to the sustainability initiatives of our Bank.

The greatest threat to our planet is the belief that someone else will save it. – Robert Swan

Nitin Garg
ED Office, C.O.

दोस्ती

यारों! दोस्ती बड़ी ही हसीन है ये ना हो तो क्या फिर
बोलो ये ज़िन्दगी है कोई तो हो राज़दार
बेगरज तेरा हो यार कोई तो हो राज़दार

गायक: के.के.
एल्बम: पल (साल-1999)

कृष्णकुमार कुन्नथ 'केके' नाम से प्रख्यात थे, जो एक सफल भारतीय पार्श्व गायक रहे. जब-जब दोस्ती की बात आएगी तब-तब दोस्ती के ऊपर उनके द्वारा गाया ये गाना हमेशा याद किया जाएगा. इस महान कलाकार के निधन पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पण कर के हम मित्रता और मित्रता दिवस के बारे में जानेंगे. फ्रेंडशिप डे / मित्रता दिवस को अगस्त महीने के पहले रविवार को मनाया जाता है. इस दिन के पीछे दरअसल एक कहानी है. कहते हैं कि एक बार अमेरिका में एक व्यक्ति की मृत्यु हुई थी. इस व्यक्ति का एक दोस्त था, जिसने अपने दोस्त की मृत्यु के गम में आत्महत्या कर ली. उनकी दोस्ती की गहराई को सम्मान देने के लिए अमेरिका में इस दिन को दोस्तों के नाम कर दिया गया और इस तरह फ्रेंडशिप डे मनाने की शुरुआत हुई. इस दिवस का विचार पहली बार 20 जुलाई, 1958 को डॉ. रामन आर्टिमियो ब्रैको के मन में आया था. यूनाइटेड स्टेट्स कांग्रेस ने अगस्त माह के पहले रविवार को नेशनल फ्रेंडशिप डे मनाने की घोषणा की. तबसे भारत सहित विश्व के अनेक देशों में अगस्त माह के पहले रविवार को फ्रेंडशिप डे मनाने की प्रथा है, जिसे प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी अगस्त माह के पहले रविवार को मनाया जाएगा.

'कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत.
बिपति-कसौटी जे कसे, सोई सांचे मीत.'

सुविख्यात कवि रहीमदास द्वारा रचित यह दोहा कहता है, जब व्यक्ति के पास संपत्ति होती है तब उसके अनेक सगे-संबंधी तथा मित्र होते हैं, उसके समीप आते हैं. किंतु विपत्ति के समय में जो आपका साथ दे, वही सच्चा मित्र है. व्यक्ति को प्रत्येक रिश्ता अपने जन्म से ही प्राप्त होता है, अन्य शब्दों में कहें तो ईश्वर पहले से हमें रिश्ते बना के देता है, पर दोस्ती ही एक ऐसा रिश्ता है, जिसका चुनाव व्यक्ति स्वयं करता है. सच्ची मित्रता रंग-रूप, जात-पात नहीं देखती, ऊँच-नीच, अमीरी-गरीबी तथा इसी प्रकार के किसी भी भेद-भाव का खंडन करती है. आमतौर पर यह समझा जाता है, मित्रता हम-उम्र के मध्य होती है पर यह गलत है, मित्रता किसी भी उम्र में और किसी के साथ भी हो सकती है. व्यक्ति अपना सुख-दुख तथा हर तरह की बात जिससे बांट सके वही व्यक्ति मित्र होता है. मित्रता जीवन के किसी भी पड़ाव में आकर तथा किसी से भी हो सकती है. एक पिता अपनी पुत्री का मित्र हो सकता है, इसी तरह से मां बेटे में मित्रता हो सकती है, पति-पत्नी में भी मित्रता हो सकती है. सच्ची दोस्ती व्यक्ति को सदैव सही मार्ग दिखाती है. परिवार के बाद दोस्त व्यक्ति की दूसरी प्राथमिकता होती है. जिसके साथ वह हर अच्छे बुरे पलों को व्यतीत करता है. सुविख्यात कवि रहीमदास द्वारा एक चर्चित दोहे में कहा गया है,

'टूटे सुजन मनाइए, जो टूटे सौ बार.
रहिमन फिर-फिर पोइए, टूटे मुक्ताहार.'

मतलब सच्चे मित्र जितनी बार आपसे रूठें उन्हें मना लेना चाहिए. ठीक उसी प्रकार जैसे मोतियों की माला के टूट कर बिखर जाने पर हम उन्हें बार-बार पिरोते हैं क्योंकि वह मूल्यवान हैं. सच्चे मित्र भी मूल्यवान होते हैं और उन्हें नहीं खोना चाहिए.

भारतीय परंपरा में हमेशा से ही मित्रता का महत्व रहा है. जब भी मित्रता की बात होती है तो लोग द्वापर युग वाली कृष्ण-सुदामा की मित्रता की मिसाल देना नहीं भूलते. श्री कृष्ण और सुदामा की दोस्ती पूरे संसार में प्रसिद्ध है. भगवान श्री कृष्ण ने एक राजा होने के बाद भी अपना मित्र धर्म निभाया और सुदामा को अपने बराबर का स्थान दिया. कृष्ण-सुदामा की दोस्ती लोगों को इतना प्रभावित करती है कि बहुत से लोग तो कॉलरट्यून में भी - 'अरे द्वारपालो कन्हैया से कह दो...' की धुन लगा कर रखते हैं. सच्ची दोस्ती कोई खून का रिश्ता नहीं होता लेकिन यह किसी भी खून के रिश्ते से ज्यादा मायने रखती है. भाग्यशाली हैं वे लोग जिनके पास ऐसे दोस्त हैं. जिन पर वे भरोसा कर सकते हैं. जरूरतमंद दोस्त ही सच्चा दोस्त होता है सच्चे दोस्त की यही परिभाषा होती है जो आपकी मुश्किलों, सफलता और असफलता के समय आपका साथ कभी नहीं छोड़ेगा. सच्ची दोस्ती सब कुछ साझा करने, गलतियाँ करने, मूर्खतापूर्ण बातों के लिए लड़ने, लेकिन एक-दूसरे का समर्थन करने के लिए फिर से गले लगाने के बारे में है.

उम्र के हर पड़ाव पर व्यक्ति के जीवन में दोस्तों का अलग महत्व होता है. कभी साथ क्लास बंक करने का तो कभी ऑफिस के दोस्तों के साथ मूवी का प्लान, तो कभी कॉलोनी की किसी छत पर सूख रहे अचार, आम, पापड़ पर समूह में अपना ही हक समझना, चाय के साथ गप-शप हो या किसी मुसीबत की घड़ी में साथ खड़े रहना. दोस्त हमेशा एक भावनात्मक सहायता तथा सुरक्षा प्रदान करते हैं.

दोस्त का मतलब,

द - दूर रहकर भी जो पास हो
ओ - औरों से ज्यादा खास हो
स - सबसे प्यारा जिसका साथ हो
त - तकदीर से ज्यादा जिस पर विश्वास हो

तो आओ हम सब मिलकर, जो दोस्त हमारे साथ हैं, उनके साथ मिलकर इस मित्रता दिवस को खास बनाएं और जो दोस्त दूर हैं उनसे संपर्क कर के पुरानी यादों को ताज़ा करें. आप सभी को आने वाले मित्रता दिवस की हार्दिक शुभ कामनाएं.

'सुबह की खिलती धूप है दोस्ती,
जो दिल के हर कोने को रोशनी से भर दे वह है दोस्ती'

तपन बिलखिया
सुनाव शाखा, आणंद

A Letter to life

"Bond are born, lived and then we die." ~ very simple to understand and live by, isn't it? Until I grew up understanding what life actually is, I was learnt, said and was made understand this line as the theory of life. I still remember my entire childhood was only deciding whether I should be a doctor or an engineer, because back then that's what expectations were from society. It was basic and limited. And then now decades later, after thirty years lived, spent and experienced, I know I was in an illusion living all these years. I know now exactly what life is all about. My ambitions changed from being a professional to turning into a human who can leave behind good deeds for the generation and years next. I never feel it's enough, I feel we are all here for bigger things, I feel we are here to make little differences that can create huge smiles, I feel every new day is a start to something new in life. My mother always used to tell me, 'You're a tiny raindrop, but you can create an ocean.'

We are all born barren and empty. And then reality hits, connections happen, family and emotions begin, education of dangerous ideas happen, tales are forgotten, People enter, people leave, leaving your story void, and then you begin your own chapter. You make discoveries- you dig a circle for your inner space, you work on your dreams. And all those things you probably have never dreamt of have created the best reality to you. Know that, you are not the perfect, but you are perfectly the imperfect fit in the puzzle of your life. We are all born with flaws and we will die with some more added flaws. Well that's what our beautiful life is all about.

Life has always something to give you, be it hurdles or ease. The longest of the roads too sometimes seem so quick and easy. And then sometimes it rains under the constant cover of grey clouds. All the hurdles rest. Emptiness fades slowly, you grow strong. Also at times you miss the bedtime stories, wanting to go back to those times. You can now breathe through the hardest chapters of your own life. You want to now live a life where you get to discover yourself every single day, you want to travel to the streets that now know you, you want to know and meet people whose stories you have never heard of.

Some evenings carry with it baggage of tiredness and happiness in those sunsets that make everyone return home. Some experiences will move your emotions, and some will make your world all smiles. You are going to laugh hard sometimes and find it hard to laugh at times. Sometimes you will have to find comfort in being alone, in being lost. At the end, it's all going to make sense. You can't skip pages of your life, it may sound or seem lengthy and tiresome, but the feeling you have after going through all of this and coming out winning it is magical. Yes, you won't enjoy every story of life, but the one worthy will always keep you going. In a lot of ways you learn even your worst days are important Because that's what makes you the person you are today. You learn to value all of those things that put you down, because that's what made your story the complete one.

Zindagi toh hum sabki ek jesi hi hai bus inme kahaaniyon ke rang alag alag hain.

Barsha Nath
Guwahati (M) Branch

ईमानदारी एक जीवन शैली

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जो कि अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु परस्पर एक-दूसरे पर निर्भर है. मनुष्य की इसी निर्भरता ने समाज की संकल्पना को जन्म दिया है तथा जीवन निर्वाह हेतु कुछ नियमों तथा सामाजिक मूल्यों का निर्धारण किया है. ये सामाजिक नियम तथा मूल्य ही मानव समाज के विकास का आधार हैं तथा उसे प्रकृति के अन्य जीवों से श्रेष्ठ बनाते हैं. सामाजिक मूल्यों की सुदृढ़ तथा निरंतर चलने वाली परंपरा के कारण ही आज मानव समाज उन्नति के चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया है.

सामाजिक मूल्यों के विकास की आधारशिला ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा है क्योंकि जब तक हम ईमानदारी से प्रत्येक नियम तथा मूल्य का अनुपालन नहीं करेंगे तब तक हम जीवन के किसी भी क्षेत्र में प्रगति नहीं कर सकते. जीवन के प्रत्येक पड़ाव, संबंध, कार्य तथा उद्देश्य की सफलता हेतु यह आवश्यक है कि हम प्रत्येक परिस्थिति में तटस्थ होकर अपने कर्तव्यों का निर्वाह करें. ईमानदारी कोई नियम अथवा परंपरा नहीं है जिसका अनुपालन करना अनिवार्य है, अपितु यह तो एक जीवन शैली है जो प्रत्येक मनुष्य में स्वभावत: विद्यमान है.

जीवन के आरम्भ में बालक अबोध होता है. उसे किसी भी प्रकार के सांसारिक संबंधों एवं व्यवहार का ज्ञान नहीं होता, किन्तु फिर भी उसके व्यवहार में ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा स्वभावत: विद्यमान रहती है. एक बालक अपने मन की प्रत्येक बात बिना किसी लाग-लपेट के सम्पूर्ण सत्य के साथ कहता है क्योंकि यह गुण उसे नैसर्गिक रूप से प्राप्त है. यही कारण है कि उस बालक का जीवन संतोष से परिपूर्ण होता है. वहीं दूसरी ओर जैसे-जैसे बालक बड़ा होता है और सामाजिक संबंधों तथा नियमों से परिचित होता जाता है, वैसे-वैसे उसके व्यवहार में सत्य का स्थान असत्य लेने लगता है. उसके व्यवहार में एक प्रकार की कृत्रिमता आ जाती है और उसका संतोष लोभ में परिवर्तित होने लगता है. इसके विपरीत जो व्यक्ति अपने जीवन के नैसर्गिक गुणों को निरंतर बनाये रखता है, वह अपना सम्पूर्ण जीवन संतोष के साथ व्यतीत करता है. उसे अपने प्रत्येक संबंध तथा कार्य में सफलता के साथ-साथ संतोष भी प्राप्त होता है. यदि व्यक्ति अपने संबंधों के प्रति ईमानदार न हो तो संबंधों में कृत्रिमता आने लगती है और संबंध धीरे-धीरे समाप्त होने लगते हैं. इसी प्रकार यदि व्यक्ति अपने कार्य के प्रति ईमानदार न हो तो वह किसी भी उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर सकता.

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है जो अपने सामाजिक मूल्यों के लिये सम्पूर्ण विश्व में विख्यात रही है. हमारे पूर्वजों ने अपनी ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा की पूर्ति हेतु अपने जीवन का बलिदान तक कर दिया है, अपने शत्रु से युद्ध करते समय भी कभी पीठ पर वार नहीं किया और ना ही किसी निहत्थे व्यक्ति पर प्रहार किया है. एक भाई ने दूसरे भाई के लिए सिंहासन तक छोड़ दिया है. संबंधों की सत्यनिष्ठा इसी बात से स्पष्ट है कि संयुक्त परिवार में बालक से लेकर वृद्ध को अपनी-अपनी आवश्यकताओं के अनुसार जीवन यापन के अवसर प्रदान किये जाते हैं और व्यक्तित्व विकास के अवसर भी. हम भी उसी गौरवशाली संस्कृति के वंशज हैं. ईमानदारी तथा सत्यनिष्ठा हमें विरासत में प्राप्त हुई है. यह जीवन शैली हमारी संस्कृति की धरोहर है जिसे हमें निरंतर बनाये रखना है.

आधुनिक युग में पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण करते-करते हमारी जीवन शैली निरंतर बदलती जा रही है. भारत जैसा देश जहाँ एक डाकू भी सत्संग के कारण एक विख्यात ऋषि में परिणित हो गया, आज उसी देश में भ्रष्टाचार एवं असत्य का बोलबाला है, संयुक्त परिवार विखंडित होते जा रहे है, यहाँ तक कि पति-पत्नी के संबंध विच्छेद भी बढ़ते जा रहे हैं. यह हम सभी के लिये विचारणीय प्रश्न है कि हम अपनी आने वाली पीढ़ी को कैसी जीवन शैली प्रदान करेंगे.

जिस प्रकार हम औद्योगिक विकास की ओर निरंतर बढ़ रहे हैं और औद्योगिक विकास को ही हमने अपनी प्रगति का आधार मान लिया है इससे यह स्पष्ट है कि वह दिन दूर नहीं जब हम अपने मानवीय मूल्यों को समाप्त कर एक मशीनी सभ्यता में परिणत हो जायेंगे. अत: आवश्यकता इस बात की है कि हम औद्योगिक विकास के साथ-साथ आत्मिक विकास को भी उतना ही महत्व प्रदान करें. इसके द्वारा ही हम एक विकसित एवं समृद्ध समाज का निर्माण करने में सफल होंगे.

रजनी शर्मा
क्षे.का. इन्दौर

Emotional Intelligence

Emotional Intelligence(EI) or Emotional Quotient(EQ), is the ability to understand, handle, perceive and use emotions in a positive way to communicate effectively, empathize with others, relieve one's stress and overcome challenges for smooth professional and personal life. High EI or EQ helps one build strong relationships, reduce stress levels, defuse conflicts and improve job satisfaction. Emotional Intelligence plays a pivotal role in today's modern world where people are finding it difficult to balance work life and inter-personal relationships.

In today's scenario where people are chasing targets and aspiring for higher career goals, carrying the power of Emotional Intelligence plays a very crucial role.

Someone has rightly said-

"Emotional Intelligence allows us to RESPOND instead of REACT."

The four domains of EI are

1. Self Awareness
2. Self Management
3. Social Awareness and
4. Management Relationship

Each one of the above can help a leader overcome any challenges and deliver even more efficiently and effectively.

Emotionally Intelligent people accept criticism, rejections, failures constructively and they make these factors their stepping stone to success. They are open minded, active listeners and passionate learners. They have a strong sense of self-awareness, embrace change and show empathy towards others. They show exemplary social skills and are highly motivated both intrinsically and extrinsically. Being aware of one's emotions is the most basic skill of Emotional Quotient.

Emotional Intelligence in Leadership: Emotional intelligence in leadership leads to efficient decision making, builds strong relationships and helps construct more effective teams. An emotionally intelligent leader is an individual who is capable of skillfully connecting with their colleagues, motivate teams and individuals tactfully, resolve conflicts diplomatically and inspire others to perform constructively.

Emotional Intelligence starts with self awareness as to how one balances his emotions in different scenarios followed by social awareness which is the ability to recognize emotions of both self and others. People with high emotional intelligence take challenges and criticism in a positive way and as a learning opportunity. As you become more emotionally intelligent, you will be able to motivate yourself more easily and conquer challenges and obstacles in a pragmatic way.

Persons with good EI remain motivated to achieve their goals even if the path isn't smooth. They take time to de-construct any negative feedback, verify it and evaluate it for self and peers' growth. Apart from celebrating their own success, they are equally participative in celebrating the success of their peers.

Emotional Intelligence in Banking: Relationships in banking are incredibly important because customers are the core of our business. Being able to quickly and effortlessly empathize and understand the customer's needs will not only keep you in the business but also keep you emotionally confident and at par with the society's needs and expectations.

One has to remember that emotional intelligence is not just a plain, simple process but a very crucial skill one needs throughout.

In this way, superior emotional intelligence helps to bring in force intellectual capital, and that is a crucial ingredient to achieve competitive and comparative advantage as well.

Ramya Gayar
RO, Warangal

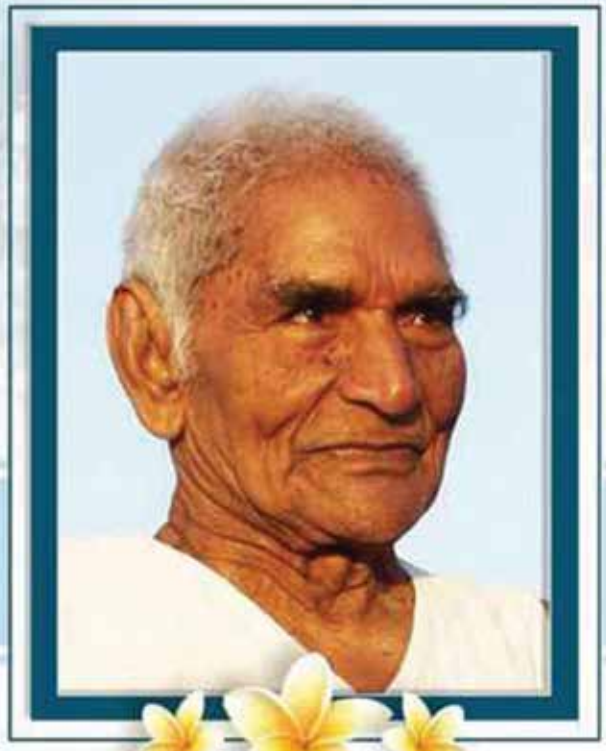

बाबा आमटे - एक जन सेवक

आज के इस बदलते हुए परिदृश्य में नि:स्वार्थ समाज सेवा करना बहुत ही मुश्किल कार्य लगता है. आम तौर पर लोग किसी स्थल पर भोजन दान करते हैं या किसी संस्थान को एक मुश्त राशि दान करते हैं, अथवा किसी निर्धन को आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं. परंतु मृत्यु शय्या पर पड़े लोगों की नि:स्वार्थ सहायता करना बड़ा ही महान कार्य है.

ऐसे ही एक इंसान जिन्हें बाबा आमटे के नाम से हम पहचानते हैं, ने आजीवन कुष्ठ रोगियों को एक नया जीवन और संघर्ष का मार्ग दिखलाया. समाज से परित्यक्त लोगों और कुष्ठ रोगियों के लिये उन्होंने अनेक आश्रम और विविध समुदायों की स्थापना की. बाबा आमटे का पूरा नाम डॉ. मुरलीधर देवीदास आमटे है. इनका जन्म महाराष्ट्र स्थित वर्धा जिले के हिंगणघाट गांव में लेखपाल और जमींदार देवीपाल के घर 26 दिसंबर, 1914 को हुआ. विरासत में मिली जमींदारी के कारण बचपन बहुत ही ठाट-बाट से रहा. बचपन में वे किसी राजकुमार की तरह रेशमी कुर्ता और चमकदार जूते पहनते थे, जो उनको एक आम बच्चे से अलग करता था. आमटे का जन्म एक संपन्न ब्राह्मण परिवार में हुआ. जिन लोगों ने बाबा को कुटिया में सदा लेटे हुए ही देखा- शायद ही कभी अंदाज लगा पाए कि इस व्यक्ति का युवावस्था में क्या राजशाही अंदाज था. अपनी युवावस्था में धनी जमींदार का यह बेटा तेज कार चलाने और हॉलीवुड की फिल्म देखने का शौकीन था. अंग्रेजी फिल्मों पर लिखी उनकी समीक्षाएँ इतनी दमदार हुआ करती थीं कि एक बार अमेरिकी अभिनेत्री नोर्मा शियरर ने भी उन्हें पत्र लिखकर दाद दी. जिन लोगों ने बाबा को आश्रम में देखा, उनके लिए उनके बचपन का अनुमान लगाना निश्चित तौर पर असंभव होगा.

बाबा ने अपनी आरंभिक स्कूली शिक्षा नागपुर के मिशन स्कूल से की. उसके पश्चात् नागपुर विश्वविद्यालय से कानून की पढ़ाई को पूरा किया. पढ़ाई के साथ-साथ उन्होंने कई अन्य विषयों को भी पढ़ा और फिर स्थानीय तौर पर वकालत का कार्य प्रारंभ किया. गाँवों का दौरा करने के बाद बाबा आमटे ने देखा कि भारतीय गांव व यहां के लोगों का जीवन-यापन बहुत ही खस्ताहाल है. भारत उस समय गांधी के नेतृत्व में आगे बढ़ रहा था और आजादी का संघर्ष जोरों पर था. उसी समय बाबा आमटे ने अपने मित्र राजगुरू का साथ छोड़ दिया और गाँधीजी के साथ अहिंसा के रास्ते पर चलना शुरू कर दिया. उन्होंने गाँवों में जाकर किसानों से मुलाकात की और उनकी समस्याओं के लिए आवाज उठाना शुरू किया. आगे चलकर विनोबा भावे से प्रभावित होकर उन्होंने जगह-जगह भूमि सुधार आन्दोलन भी प्रारंभ किया.

उन दिनों जब कुष्ठ रोग एक समाजिक कलंक हुआ करता था. लोग इस रोग से ग्रस्त लोगों को समाजिक रूप से बहिष्कृत कर देते थे. इस तरह की मिथ्या अफवाह से लड़ने के लिए वे आगे आए एवं जीवनभर कुष्ठरोगियों, जनजातियों एवं किसानों के साथ कार्य करते हुए वर्तमान उन्नयन के जनविरोधी स्वरूप को जाना और वैकल्पिक उन्नयन की जमीन तैयार की. उनके जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि थी कुष्ठ रोगों से पीड़ित अछूतों के लिए आश्रम का निर्माण, जिसे अब आनन्दवन के नाम से जाना जाता है. कम लागत से बने इस आश्रम में आज धन संपदा प्रचुर मात्रा में है. यहाँ संपूर्ण कृषि सामग्री की पैदावार की जाती है. इसके अलावा बाबा आमटे ने यहीं से 'भारत जोड़ो' आंदोलन की भी शुरुआत की थी.

बाबा आमटे साहित्यिक रचना : 'ज्वाला आणि फुले' और 'उज्ज्वल उद्यासाठी' नामक दो काव्यसंग्रह बाबा आमटे ने लिखे हैं. इन कविताओं में तत्कालीन संघर्ष की छवि देखने को मिल सकती है.

उनके काम से उन्हें कई अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिले. विशेष रूप से, 1988 का संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार पुरस्कार, 1990 टेंपलटन पुरस्कार और 1999 का गांधी शांति पुरस्कार बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण है. इसके अलावा अन्य पुरस्कार और सम्मान निम्न हैं.

पुरस्कार और सम्मान

1971 : भारत सरकार द्वारा पद्मश्री
1979 : जमनालाल बजाज सम्मान
1980 : नागपुर विश्वविद्यालय से डी-लिट उपाधि
1983 : अमेरिका का डेमियन डट्टन पुरस्कार
1985 : रेमन मैगसेसे (फिलीपीन) पुरस्कार
1991 : ग्लोबल 500 संयुक्त राष्ट्र सम्मान
1992 : स्वीडन का राइट लाइवलीहुड सम्मान

उनके जीवन में एक ऐसा प्रसंग घटित हुआ जिससे बाबा आमटे का संपूर्ण जीवन ही परिवर्तित हो गया. उन्होंने एक कुष्ठ रोगी को मूसलाधार बारिश में भीगते हुए देखा और देखा कि कोई भी उसकी सहायता के लिए आगे नहीं आ रहा है. ऐसे में उन्होंने सोचा कि अगर इसकी जगह मैं होता तो क्या होता? उन्होंने उसी क्षण उस रोगी को उठाया और अपने घर की ओर चल दिए. इसके बाद बाबा आमटे ने कुष्ठ रोग को जानने और समझने में ही अपना पूरा ध्यान लगा दिया. वरोडा (जि. चंद्रपुर, महाराष्ट्र) के पास घने जंगल में अपनी पत्नी साधनाताई, दो पुत्रों, एक गाय एवं सात रोगियों के साथ 1949 में आमटे ने कुष्ठ रोगियों के उपचार, पुनर्वास और सशक्तिकरण के लिए समर्पित एक आश्रम 'आनंदवन' की स्थापना की. इस केंद्र का मुख्य कार्य स्वास्थ्य देखभाल, कृषि, लघु उद्योग और संरक्षण में कार्यक्रमों को शामिल करना और विकलांग लोगों की सेवा करना था.

यही आनंद वन आज बाबा आमटे और उनके सहयोगियों के कठिन श्रम से हताश और निराश कुष्ठ रोगियों के लिए आशा और सम्मानजनक जीवन जीने का केंद्र है. मिट्टी की सौंधी महक से आत्मीय रिश्ता रखने वाले बाबा आमटे ने चंद्रपुर जिले, महाराष्ट्र के वरोडा के निकट 'आनंदवन' नामक अपने इस आश्रम को आधी सदी से अधिक समय तक विकास के विलक्षण प्रयोगों की कर्मभूमि बनाए रखा. जीवनपर्यन्त कुष्ठरोगियों, आदिवासियों और मजदूर-किसानों के साथ काम करते हुए उन्होंने वर्तमान विकास के जनविरोधी चरित्र को समझा और वैकल्पिक विकास की क्रांतिकारी जमीन तैयार की.

'आनन्दवन' की महत्ता चारों तरफ फैलने लगी, नए-नए रोगी आने लगे और 'आनन्दवन' का महामंत्र 'श्रम' ही है. आज 'आनन्दवन' में स्वस्थ, आनन्दमयी और कर्मयोगियों की एक बस्ती बस गई है. भीख माँगनेवाले हाथ श्रम करके पसीने की कमाई करने लगे हैं. किसी समय 14 रुपये में शुरु हुआ 'आनन्दवन' का बजट आज करोड़ों में है. आज 180 हेक्टेयर जमीन पर फैला 'आनन्दवन' अपनी आवश्यकता की हर वस्तु स्वयं निर्माण कर रहा है. बाबा आमटे ने 'आनन्दवन' के अलावा और भी कई कुष्ठरोगी सेवा संस्थानों जैसे, सोमनाथ, अशोकवन आदि की स्थापना की है जहाँ हजारों रोगियों की सेवा की जाती है और रोगी से सच्चा कर्मयोगी बनाया जाता है.

1936 में कानून की डिग्री हासिल करने के पश्चात् उन्होंने कानूनी प्रैक्टिस शुरू की. 1942 में उन्होंने भारत के ब्रिटिशों के खिलाफ महात्मा गांधी के भारत छोड़ो अभियान में भाग लेने में कैद किए गए लोगों के लिए एक बचाव पक्ष के वकील के रूप में महत्वपूर्ण काम किया.

न्याय के लिए गांधी की अहिंसक लड़ाई से प्रभावित होकर, आमटे ने 1940 के दशक में अपने कानूनी कैरियर को छोड़ दिया और सेवाग्राम में गांधीजी के आश्रम में बस गए.

सन 1985 में बाबा आमटे ने कश्मीर से कन्याकुमारी तक 'भारत जोड़ो' आंदोलन चलाया था. इस आंदोलन को चलाने के पीछे उनका निश्चय देश में एकता की भावना को बढ़ावा देना और पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरुक करना था. स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में शामिल होने के लिए कानूनी अभ्यास को छोड़ दिया. बाबा आमटे ने अपना जीवन मानवता की सेवा के लिए समर्पित किया.

कुष्ठ रोगियों के साथ अपने काम के अलावा, वे पर्यावरणवाद और धार्मिक सहिष्णुता सहित कई अन्य क्षेत्रों में शामिल हुये. विशेष रूप से, उन्होंने नर्मदा नदी पर जलविद्युत बांधों के निर्माण का विरोध किया, इसका मुख्य कारण पर्यावरणीय कारण एवं बांधों द्वारा विस्थापित लोगों के जीवन पर प्रभाव रहा. नर्मदा नदी को प्रदूषण के खतरे से बचाने के लिए उन्होंने आंदोलन चलाया. वे देश के प्रख्यात और सम्माननीय समाजिक कार्यकर्ता रहे. उन्होंने आनंदवन की स्थापना कर कुष्ठ रोगियों को नये जीवन और नये संघर्ष का रास्ता दिखलाया. सिर्फ इतना ही नहीं उन्होंने वन्य जीव संरक्षण के लिए भी लोगों को जागरूक किया व नए तरह के क्रियाकलाप भी आरंभ किए. एक तरह से इन्होंने अपना पूरा जीवन लोक कल्याण में लगा दिया. वे एक भारतीय सामाजिक कार्यकर्ता रहे, जिन्होंने कुष्ठ रोग से पीड़ित गरीबों के सशक्तीकरण के लिए काम किया. एक समृद्ध बचपन से बाबा आमटे ने अपना जीवन समाज के दलित लोगों की सेवा में समर्पित कर दिया. उन्होंने अपना जीवन भारत के सबसे गरीब और निर्बल और विशेष रूप से उन व्यक्तियों की देखभाल के लिए समर्पित कर दिया जो कुष्ठ रोग से पीड़ित रहे.

2007 में वे ल्यूकेमिया नामक रोग से ग्रसित हुए. एक साल से अधिक समय तक पीड़ित रहने के बाद 9 फरवरी, 2008 को 94 वर्ष की आयु में आनंदवन में ही उनका देहान्त हुआ. दुनिया भर के कई प्रसिद्ध लोगों ने उनके निधन पर शोक व्यक्त किया.

प्रमोद ठाकुर
क्षे. का. अमरावती

रहिमन पानी राखिये...

जब कविवर रहीम ने यह बात कही थी तब उन्हें दूर-दूर तक अंदेशा भी नहीं रहा होगा कि उनकी कही हुई यह बात आज के युग की सबसे अधिक आवश्यक बात बन जाएगी. उनके वक़्त में तो जल का इतना संकट रहा भी नहीं होगा. उन्होंने इस शब्द का उसके दूसरे अर्थों के संदर्भ में भी प्रयोग किया था. परंतु क्या कहा जाये कि सभ्यता का विकास जैसे जैसे होता गया वैसे वैसे धरती की अमूल्य नियामतों को हानि पहुंचती गई और नासमझ मनुष्य आज भी नहीं समझ पा रहा है कि उसे इस अंधाधुन्ध तथाकथित विकास की क्या कीमत चुकानी पड़ रही है.

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि, जलमन्नम सुभाषितं,
मूढ़ैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते.

अर्थात पृथ्वी पर तीन ही रत्न हैं. जल, अन्न और अच्छे बोल. पर मूर्खों ने पत्थर के टुकड़ों को रत्न का नाम दे दिया है. पृथ्वी पर जल है इसलिए ही इस पर जीवन है. करोड़ों वर्ष लगे होंगे इसको इस योग्य बनने में कि इस पर जीवन पनप सके. प्राणी इस पर जन्म ले सकें और जीवित रह सकें. प्राणवायु और जल दो ऐसी नियामतें हैं जो इस ग्रह को जीवन धारण के योग्य बनाती हैं.और यह सबको पता है कि ये दोनों ही धरती पर आरम्भ में जितनी मात्रा में थीं उतनी ही आज भी हैं.

सदियों से ये अपने स्वाभाविक चक्र को चलाते हुये हमारे जीवन को चला रही हैं. जल पृथ्वी पर अनेक प्रकार से उपयोग में आता है, भाप बन कर ऊपर जाता है फिर वर्षा के रूप में बरस कर धरती के विभिन्न स्रोतों को पुनः आप्लावित कर देता है.यह चक्र ऐसे ही चला आ रहा है. परन्तु अब इन दोनों ही नियामतों पर बड़े खतरे मंडरा रहे हैं और ये स्वयं अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये गुहार लगाती प्रतीत हो रही हैं. इस स्थिति को पहुँचने के बहुत से कारण हैं जिनका विश्लेषण करना जितना आवश्यक है उतना ही उनको दूर करने का प्रयास भी.

इनमें सबसे बड़ी वजह तो मनुष्य ही है.कहना नहीं होगा कि विकास की अंधी दौड़ में मनुष्य ने ही प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन किया, वो तो एक बात है पर हवा और पानी को तो इस सीमा तक दूषित कर दिया है कि इनको शुद्ध करने के प्राकृतिक चक्र को ही भेदकर उस शुद्धीकरण की प्रक्रिया को ही विचलित कर दिया है.

पिछली शताब्दी से लेकर इस समय तक जितनी तेजी से मानव की सुख सुविधा के लिये विकास का कार्य हुआ है उतनी ही तेजी से धरती के पर्यावरण को हानि भी पहुँची है. और बिना सोचे समझे भौतिकतावाद ने भस्मासुर का कार्य किया है.यानी स्वयं धरती को ही विनाश के कगार पर ला खड़ा किया है. लेकिन हम इस समय केवल जल के विषय में. चर्चा कर रहे हैं. जीवन के लिये अनिवार्य अमृत के सभी स्रोतों को अनावश्यक और अत्यधिक दोहन और प्रदूषण ने लगभग बर्बाद कर दिया है.

प्रकृति की तो ऐसी व्यवस्था थी कि जल स्वाभाविक रूप से धरती के अंदर जाकर उसके गर्भ में स्थित सभी जलस्रोतों को भर देता था, वह अत्यंत शुद्ध भी होता था. गर्मी से भाप बनकर बादलों के रूप में एकत्र होकर फिर से शुद्ध होकर धरती पर ही बरस कर इसकी हरियाली को अक्षुण्ण रखता था. परन्तु वनों की बेतहाशा कटाई, हरियाली के बजाय कंक्रीट के जंगलों का प्रसार इस प्राकृतिक चक्र में भयावह बाधा उत्पन्न करता आ रहा है.वृक्ष जो बादलों का रास्ता रोकते थे, नदियों के कटाव को कम करते थे उनके विरल होने से बादल तितर बितर होकर अच्छी वर्षा करने में विफल रहते हैं. फिर आधुनिक निर्माण सामग्री जिसको मकानों, सड़कों और हर तरह के निर्माण में उपयोग किया जाता है जल को सोख कर ज़मीन के भीतर पहुंचने नहीं देती. इस कारण वर्षा के जल का बहुत बड़ा भाग नदी नालों के माध्यम से समुद्र में जाकर खारा हो जाता है.

विद्युत चलित सबमर्सिबल पम्प लगाकर भूगर्भ जल को अत्यधिक तेजी से निकाले जाने के कारण उसका स्तर तेजी से कम होता जा रहा है. कई बड़े शहर ऐसे हैं जिनका भूगर्भ जल या तो शून्य हो गया है या होने वाला है. रही सही कसर पूरी हो जाती है अनेकानेक स्रोतों द्वारा नदियों में और ज़मीन के अंदर भी पहुंच जाने वाले रसायनों के कारण जो जल भूमि के अंदर पहुँच कर शुद्ध हो जाता था अब वो भी प्रदूषण से मुक्त नहीं रह पाता. पहले ही उपलब्ध जल का 1% ही उपयोग करने लायक है वो भी प्रदूषण के चलते कम होता जा रहा है. नतीजा यह है कि

आज पानी की दुकानें हैं वहाँ,
था जहाँ सबके लिये ठंडा कुआं (हितेन्द्र कुमार)

कमलेश चन्द्र कमल ने कहा..

पास रक्खेगी नहीं सबकुछ लुटायेगी नदी,
शंख, सीपी, रेत, पानी जो भी लाएगी नदी.
वर्षों हमने विष पिलाकर आज़माया है बहुत,
अब हमें भी विष पिलाकर आजमाएगी नदी.

हम केवल एक नदी की बात करें जिसके बारे में हिंदुओं में मान्यता है कि वो बड़ी तपस्याओं के बाद स्वर्ग से उतर कर भगवान शंकर की जटाओं से होते हुए इस धरा पर अवतरित हुई थीं.

इस पतितपावनी मोक्षदायिनी गंगा का प्रदूषण के कारण इतना बुरा हाल है कि बहुत सारे स्थानों पर इसका जल आचमन के योग्य भी नहीं रह गया है.

आस्था की प्रतीक इस नदी में उत्तराखंड, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल का अधिकांश सीवेज गिराया जा रहा है.

इन राज्यों में जितना सीवेज निकलता है उसका केवल 40% सीवेज ही ट्रीटमेंट प्लांट से होकर गुजरता है, बाकी 60% को सीधा गंगा में गिराया जाता है. क्योंकि जो ट्रीटमेंट प्लांट हैं भी वो अपनी क्षमता से बहुत कम काम कर रहे हैं.

कहने की आवश्यकता नहीं है कि ऐसा ही दूसरी नदियों के साथ भी हो रहा है, और हम कल्पना भी नही कर पा रहे हैं कि हम अपनी इस बहुमूल्य निधि को किस तेजी से विषाक्त कर रहे हैं.

यह सच है कि अब इस ओर थोड़ा कार्य किया जाना आरम्भ हुआ है और नदियों की सफाई के लिये बड़े बड़े प्रयास किये जा रहे हैं, जलसंरक्षण के लिए जागरूकता फैलाई जा रही है. पर जिस वृहद, गम्भीर और गहन प्रयास की आवश्यकता है वह अभी भी दूर दूर तक दिखाई नहीं देती.

जैसे एक एक व्यक्ति इस विभीषिका को बढ़ाने के लिए ज़िम्मेदार है वैसे ही हरेक व्यक्ति को इससे बचने के प्रयासों में योगदान देना होगा.

कारखानों का रासायनिक कचरा, शहरों की गंदगी, नदियों में गिरना बंद हो, धरती से जल निकलने के अप्राकृतिक तरीकों पर रोक लगे, लोगों में वर्षा के जल संरक्षण की आदत डाली जाये, जल की बर्बादी को हर तरह से रोका जाये तब जाकर इस समस्या पर अंकुश लगने की आशा की जा सकती है.

अभी तो यह हाल है कि जिनको आराम से पानी मिल जाता है वो उसे बुरी तरह खर्च करते हैं, सोचते ही नहीं कि यह प्राकृतिक संपदा है इसको बर्बाद करने का अधिकार किसी को नहीं है.

जिनको आसानी से पानी नहीं मिलता, जलस्रोत दूर हैं या सीमित हैं वो कम पानी में अपना काम चला लेते हैं. खूब संभलकर खर्च करते हैं और एक ही पानी को कई तरह से इस्तेमाल भी कर लेते हैं. यह तरीका हर किसी को हर वक़्त इस्तेमाल में लाना चाहिये तभी कुछ आशाजनक परिणाम मिलेंगे वरना.....
बिन पानी सब सून

निधि मालवीय
क्षे.का. मुंबई (ठाणे)

कार्टून कोना

आनंद कुमार भल्ला
क्षे.का. ओंगोल

साइबर क्राइम- प्रकार एवं बचाव

अंग्रेज़ी की एक बहुत प्रसिद्ध कहावत है- "curiosity is the mother of invention", अर्थात:- उत्सुकता आविष्कार की जननी है. धरती पर मानव जाति की बढ़ती उत्सुकता ने अनेकों आविष्कारों को जन्म दिया. एक समय ऐसा था जब किसी ने भी नहीं सोचा था कि विश्व में इतनी सुविधाजनक वस्तुओं का आविष्कार होगा जिनसे जीवन-व्यापन इतना सरल हो जाएगा. मनुष्य ने अपनी तथा मानव जाति की सुविधा हेतु अनेक अद्भुत आविष्कार किए. लेकिन हर सिक्के के दो पहलू होते हैं. मानव ने अपने आवेश, क्रोध, और अहंकार में ऐसे भी बहुत से आविष्कार किए जो कि मानव जाति के लिए भयावह सिद्ध हुए. एक ओर मानव ने अपनी सुविधा हेतु वैज्ञानिक तकनीकों, अपनी रक्षा हेतु हथियारों का आविष्कार किया, वहीं दूसरी ओर उसने उन्हीं हथियारों को शस्त्र बना कर मानव जाति पर हमला भी किया.

इसी प्रकार मानव जाति की सुविधा हेतु एक अद्भुत आविष्कार किया गया था जिसका नाम था-इंटरनेट. इंटरनेट के माध्यम से मनुष्य किसी भी वक्त, किसी भी व्यक्ति से संपर्क कर सकता था. चाहे वह व्यक्ति भौतिक रूप से उससे कितना भी दूर हो. इसके अतिरिक्त, इंटरनेट ने हमें अनेक सुविधाएं दी. जैसे ऑनलाइन खरीददारी करना, बस, रेल तथा हवाई यात्रा हेतु टिकट बुक करना, अपने बैंक खाते से लेनदेन करना आदि. इंटरनेट का आविष्कार करते वक्त किसी ने सपने में भी ये नहीं सोचा था कि इसका विपरीत रूप से भी इस्तेमाल हो सकता है जो कि बहुत घातक साबित हो सकता है. इंटरनेट की ओर बढ़ती रुचि को देखकर कुछ लोगों की उत्सुकता इसे अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करने में बढ़ गई. और इस उत्सुकता ने जन्म दिया एक घातक आविष्कार को जिसका नाम है-साइबर क्राइम. इंटरनेट की मदद से लोगों को ठगना अब एक बहुत बड़ा अंतर्राष्ट्रीय मुद्दा बन गया है. हर देश में अलग-अलग रूप से लोगों के साथ धोखाधड़ी की जा रही है. किसी को जैकपोट का झांसा दे कर लूटा जा रहा है, तो किसी को नकली वेब पेज बनाकर उसकी सारी निजी जानकारी हासिल कर के ठगा जा रहा है. आजकल ऐसा अक्सर देखा जाता है कि लोगों के पास फोन आता है और उन्हें कहा जाता है कि यह कॉल बैंक की ओर से है. उनका खाता निष्क्रिय हो चुका है इसलिए उसे बंद किया जा रहा है. अगर उसे चालू करना है तो उन्हें कुछ जानकारियाँ देनी होंगी. उनसे उनके खाते की सारी गोपनीय जानकारियाँ ले ली जाती हैं और फिर उनके खाते से सारे पैसे निकाल लिए जाते हैं और उस व्यक्ति को पता भी नहीं चलता कि उसके पैसे कहाँ गए.

साइबर क्राइम आज अपने आप में एक बहुत ही चिंता का विषय बन चुका है. इंटरनेट के द्वारा लोगों को ठगने का यह अवैध धंधा अनेक तरीकों से चलाया जाता है. इनमें से कुछ निम्नवत हैं:

1. Phishing - यह सबसे ज़्यादा इस्तेमाल किया जाने वाला साइबर क्राइम का तरीका है, क्योंकि यह सबसे सरल है. इससे किसी के भी ऑनलाइन ID का पासवर्ड पता लगाया जा सकता है. व्यक्ति को जिस भी वेबसाइट पर किसी का पासवर्ड जानना है उस वेब पेज की एक डुप्लीकेट कॉपी बनाई जाती है. जो भी व्यक्ति उस डुप्लीकेट वेब पेज से अपने खाते में लॉगिन करता है, उसकी लॉगिन की सभी जानकारियाँ पेज बनाने वाले तक पहुँच जाती हैं.

2. Hacking- इसमें व्यक्ति की जानकारी बिना उसके खाते का पासवर्ड निकाल लिया जाता है या फिर उसे बदल दिया जाता है. यह एक बहुत ही घातक तकनीक है. आपको पता भी नहीं चलेगा और आपके अकाउंट का पासवर्ड बदल दिया जाएगा और उससे हैकर्स आपके खाते का इस्तेमाल अपने मन-मुताबिक करेंगे. Phishing की तरह यह एक आसान प्रक्रिया नहीं है. यह एक कठिन प्रक्रिया है. इसके लिए बाज़ार में अलग-अलग कोर्स करवाए जाते हैं. Hacking अनेक प्रकार की होती हैं. जैसे Script Kiddie Hacking, White Hat Hacking, Black Hat Hacking, Grey Hat Hacking, Green Hat Hacking, Red Hat Hacking, Blue Hat Hacking.

3. Keylogging- यह एक बहुत ही खतरनाक तकनीक है. इसमें keylogger सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल किया जाता है. keylogger सॉफ्टवेयर चोरी छिपे, आप जो भी की-बोर्ड में टाइप करते हैं उसको हैकर तक पहुँचाते हैं.

4. AD clicker - इस प्रक्रिया में विभिन्न प्रकार के विज्ञापन बनाए जाते हैं. जैसे आपके पास एक मैसेज आया कि आपने एक शानदार इनाम जीता है. इसे प्राप्त करने के लिए नीचे दिये गए लिंक पर क्लिक करें, जैसे ही आपने उस लिंक पर क्लिक किया, हैकर आपकी device को आसानी से इस्तेमाल (access) कर सकता है, और बिना आपको पता चले, आपका सारा डाटा चोरी हो जाता है.

5. Viruses and worms- ये कुछ ऐसे प्रोग्राम्स होते हैं जो इंटरनेट, USB आदि के जरिये आपके सिस्टम में घुस कर उसमें सारे डाटा को हैकर तक पहुंचा देंगे या उसे पूरी तरह बर्बाद भी कर सकते हैं. कुछ viruses ऐसे भी होते हैं जो सिस्टम की फाइल्स के साथ खुद को मिला लेते हैं. ऐसी स्थिति में डाटा को पुन: रिकवर करना बहुत मुश्किल होता है.

6. Wireless Network- कई बार हम कहीं बाहर जाते हैं और अगर हमें कोई फ्री वाई-फ़ाई मिल जाये तो हम तुरंत ही उसे अपने मोबाइल से जोड़ लेते हैं. परंतु ऐसा करने से हमारे मोबाइल का सारा डाटा उस वाई-फ़ाई मालिक के पास पहुँच जाता है जो हमारे लिए घातक साबित हो सकता है.

साइबर क्राइम एक ऐसा अपराध है जिसमें हमें पता भी नहीं चलता है कि कब हम इसका शिकार बन जाएँ. बस जब पूर्ण अपराध घटित हो जाता है उसके बाद हमें हमारी गलतियों का आभास होता है. किन्तु कहते हैं न- "prevention is better than cure", अर्थात् बचाव इलाज से बेहतर है. यही कहावत इस साइबर क्राइम से बचने का सर्वोच्च उपाय है. क्योंकि इस अपराध का शिकार हो जाने के बाद इसका इलाज ढूँढ़ने से तो अच्छा यही है कि हम पहले से ही सतर्क रहें. साइबर क्राइम से बचने के लिए कई प्रकार के उपाय हैं. जैसे-

i. अपने मोबाइल/कंप्यूटर आदि में antivirus सॉफ्टवेयर को install रखें और समय-समय पर उसे अपडेट करते रहें. इससे हमारे सिस्टम में किसी भी प्रकार के virus को सिस्टम में घुसने से रोका जा सकता है.

ii. अपने सभी पासवर्ड को खुद याद रखें. उन्हें मोबाइल/कंप्यूटर या किसी डायरी में न लिखें क्योंकि इससे डाटा की चोरी हो सकती है.

iii. किसी भी वेब पेज को खोलने से पहले उसकी विश्वसनीयता जांच लें. कहीं ऐसा न हो कि आप किसी भी ऐसे वेब पेज को खोल लें जिससे बाद में आपको नुकसान पहुंचे. किसी भी वेबसाइट पर जाने से पहले यह जांच लें कि उस पेज का URL हमेशा https:// से शुरू हो. क्योंकि यह एक सुरक्षित वेबसाइट होती है, जहां https का अर्थ है- hyper text transfer protocol-secured.

iv. पासवर्ड हैकिंग आजकल बहुत बढ़ चुकी है. अपने सभी पासवर्ड ऐसे रखें जिसे आपके अलावा और कोई न पता लगा सके. पासवर्ड बनाने में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें -

   a. पासवर्ड कम से कम 8 अंकों का हो.

   b. पासवर्ड में कम से कम 1 small letter, 1 capital letter, 1 संख्या (number) तथा 1 विशिष्ट अक्षर (special character) हो.

   c. अपना पासवर्ड कभी भी अपने पूर्ण नाम से न बनाएँ. जैसे यदि आपका नाम RAM है, तो अपना पासवर्ड RAM123, 123RAM या ऐसा कोई भी पासवर्ड न रखें.

   d. अपना पासवर्ड समय-समय पर बदलते रहें.

v. यदि आपके पास कोई भी लालच देने वाले मेसेज आएं जैसे आपने एक जैकपोट जीता है, या घर बैठे कमाएं ढेर सारे पैसे- तो ऐसे लिंक पर कभी क्लिक न करें. क्योंकि ये spam मेसेज होते हैं. इन्हें क्लिक करना खतरनाक साबित हो सकता है.

vi. Keylogging से बचने का सर्वोच्च उपाय है-virtual keyboard. इसकी मदद से आप अपने पासवर्ड को गोपनीय भी रख सकते हैं और कीबोर्ड में टाइप किए जाने पर उस डाटा का हैकर तक पहुँचने का भी कोई डर नहीं है.

vii. कहीं भी बाहर जाते वक्त यदि आपको एक फ्री वाई-फ़ाई मिले तो उसे ऐसे ही अपने मोबाइल/लैपटॉप आदि से न जोड़ लें. हो सकता है कि इससे आपका सारा डाटा आपके सिस्टम से चोरी हो जाए. किसी भी वाई-फ़ाई से जुड़ने से पहले उसकी विश्वसनीयता जांच लें.

साइबर क्राइम एक ऐसा जाल है जिसमें फँसने पर व्यक्ति को खुद नहीं पता होता है कि वो एक अपराध का शिकार हो रहा है. पर उसको बाद में इसके बारे में पता चलता है कि ये उसकी खुद की ही गलतियों से हुआ है. इसलिए हमें हर वक्त अपने आप को इस साइबर क्राइम से दूर रखना है. क्योंकि 'साइबर क्राइम से सतर्कता ही साइबर क्राइम से बचाव है'.

राहुल लखानी
सरोना शाखा, रायपुर

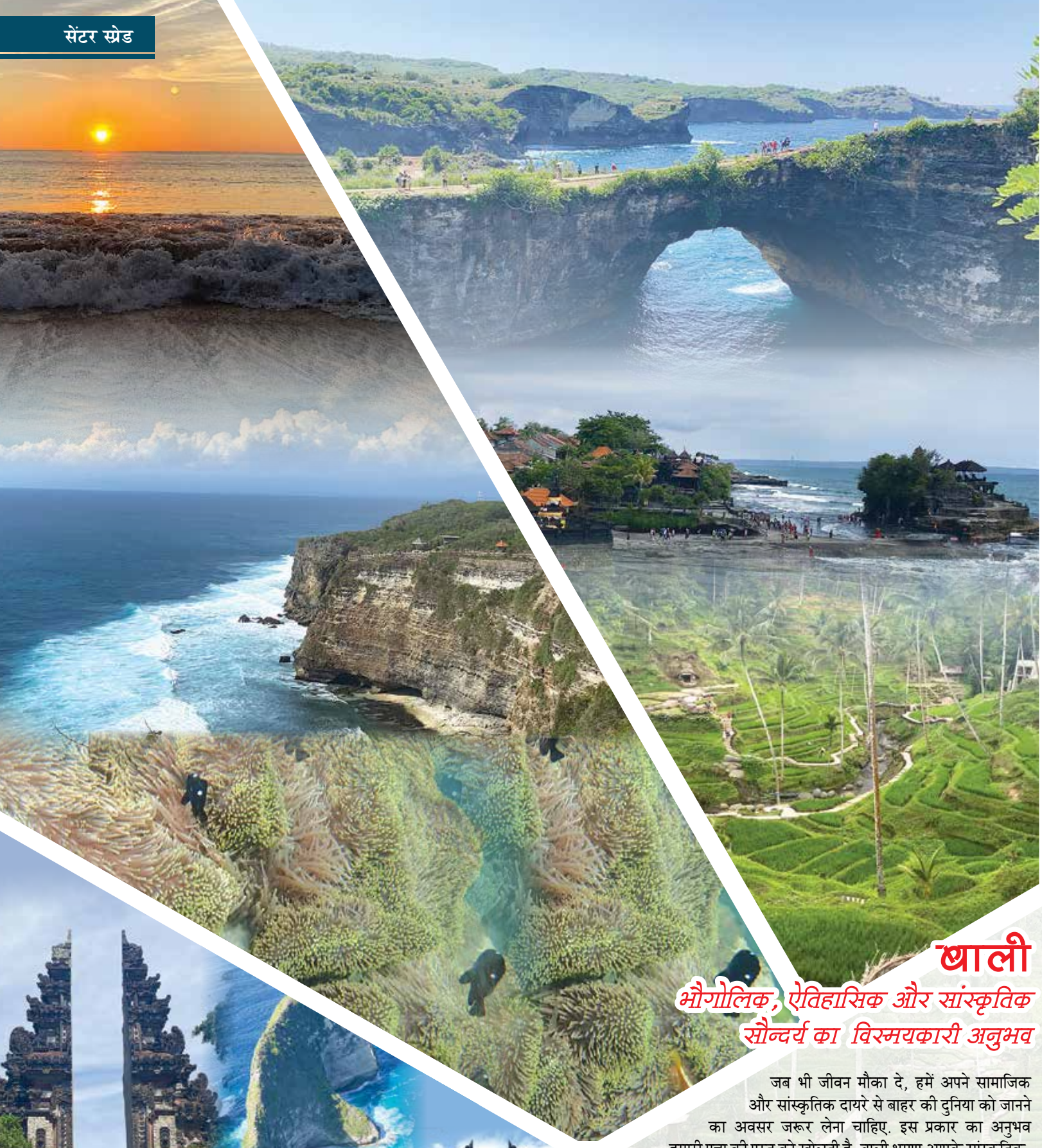

बाली

भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सौन्दर्य का विस्मयकारी अनुभव

जब भी जीवन मौका दे, हमें अपने सामाजिक और सांस्कृतिक दायरे से बाहर की दुनिया को जानने का अवसर जरूर लेना चाहिए. इस प्रकार का अनुभव हमारी प्रज्ञा की परत को खोलती है. बाली भ्रमण आपके सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भौगोलिक सौन्दर्य के बोध को और अधिक निखारता है. बाली द्वीप इंडोनेशिया में स्थित एक प्रांत है. जो किसी स्वर्ग की तरह है, तथा जो नीचे समुद्र और ऊपर स्वच्छ आकाश की नीलिमा के बीच दीप्तिमान है. बाली में कई प्राकृतिक और स्थापत्य संबंधी विशिष्टताएँ हैं जो इसे दुनियाभर के पर्यटकों के बीच लोकप्रिय बनाती है. बाली के दक्षिणी समुद्र तट उज्ज्वल सफ़ेद रेत के हैं वहीं उत्तरी समुद्र तट काले रेत के हैं. इंडोनेशिया में लगभग 17508 छोटे-छोटे द्वीप हैं जहाँ विश्व के 20% मूंगा-चट्टानों के अंश हैं. यहाँ का राजा अंपात विश्व

का सर्वाधिक समृद्ध समुद्री जैव विविधता वाला कोरल रीफ़ है. सेंट्रल बाली में जतिलूविह के धान के खेत यूनेस्को के प्राकृतिक वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स में से एक है. यहाँ की सबसे ऊंची चोटी माउंट अगुंग है जो कि एक सक्रिय ज्वालामुखी पर्वत है. यहाँ नुसा पेनिडा क्लिफ़ और केलिंगकिंग समुद्री-बीच की सुंदरता अपूर्व और अद्भुत है. बाली में कई प्राचीन हिन्दू मंदिर भी आकर्षण के केंद्र हैं जो स्थापत्य के बेजोड़ नमूने हैं. कुल मिलाकर बाली का अनुभव सौंदर्य पूर्ण और रोमांचक है जहां प्रकृति और संस्कृति की सुंदरता हर क्षण आपको विस्मित करती है.

सोना लकी भूटिया
क्षे. का. हावड़ा

सर्किट काका

देहरादून का वह एक छोटा सरकारी अस्पताल था, जिसमें विक्षिप्त से दिखने वाले उस बुजुर्ग को भर्ती किया गया था, जिसके लंबे उलझे हुए बाल थे. चेहरा दाढ़ी और मूछों से लगभग ढका हुआ था और मैला-कुचैला परिधान उसकी दरिद्रता की सारी कहानी कह रहा था.

जो लोग उसे भर्ती करवाने आए थे उनमें कोई भी उसका रिश्तेदार नहीं था, उनके बीच मात्र एक मामूली जान पहचान और ग़रीबी का रिश्ता था. वो सभी उसे सर्किट काका कह कर पुकारते थे. तक़रीबन पिछले पाँच वर्षों से यह बुजुर्ग उनके साथ था.

शहर के दूरस्थ इलाक़े में सड़क के पुराने जीर्ण-शीर्ण ओवरब्रिज के आसपास कई ढाबे, चाय की गुमटियाँ, पान-ठेले अब भी यथावत थे, जबकि अब यहाँ ट्रैफ़िक और आवाजाही पहले जैसी नहीं रही थी. अब सारा यातायात नए ओवरब्रिज और सड़क से होकर गुज़रता था. हाँलाकि यह सड़क अब भी चालू थी और इन सबका गुज़ारा चल ही जाता था. यहीं पास की बस्ती में सबके घर थे, मगर 'सर्किट काका' नामक ये बुजुर्ग यहीं जगदीश के ढाबे पर रहा करता था. जगदीश उसे कुछ वर्ष पहले रेलवे प्लेटफॉर्म से ले आया था तब से उसका यहीं ठिकाना था. उसका नाम 'सर्किट काका' मन्नू हलवाई का दिया हुआ था. सर्किट काका सुनता तो था मगर कुछ बोल नहीं पाता था. यद्यपि कभी-कभी कुछ बुदबुदाता ज़रूर था, मगर वह क्या बोलता था किसी के पल्ले कुछ नहीं पड़ता था. कितनी ही बार उससे पूछा गया किंतु वह अपने बारे में कुछ नहीं बता पाया था. इन्हीं दुकानों पर उसका खान-पान निर्भर था जिसके एवज़ में वह बर्तन धोने और पानी भरने जैसे कार्य करता रहता था. उसकी इसी अवस्था पर कुछ लोग उससे मज़ाक़ किया करते तो मन्नू कहता था- 'इसके दिमाग़ का सर्किट ढीला है.'

बस यहीं से उसका नाम सर्किट पड़ गया चूँकि उम्र में वह लगभग पचपन साठ वर्षीय दिखता था. अत: उसे सभी सर्किट काका कहने लगे थे.

पिछली रात बारिश हुई थी और सुबह जगदीश ने ढाबे से कुछ दूर सर्किट काका को बेहोश पड़ा पाया. अंदाज़ यही लगाया गया कि बिजली पोल के पास शायद वह पेशाब के लिये गया था और गीली ज़मीन के कारण उसे तगड़ा झटका लगा था. साँसे चलती देख कर जगदीश और कुछ बस्ती के लोग उसे अस्पताल ले आए थे. स्थिति अभी गम्भीर थी.

ढाबे के ही एक लड़के को अस्पताल में तैनात करके जगदीश ढाबे पर चला आया.

इतने वर्षों से जब कोई साथ में हो तो एक व्यक्तिगत जुड़ाव तो हो ही जाता है, शायद जगदीश भी यही महसूस कर रहा था. कितनी तन्मयता से सर्किट काका ढाबे के कार्य में हाथ बँटाता था. एवज़ में क्या! सिर्फ़ दो वक़्त की रोटी और सोने को बिस्तर और उस पर भी ढाबे की रखवाली अलग.

ढाबे पर जगदीश का मन न लगा था. पानठेले वाले लखन दाऊ के साथ वह पुन: अस्पताल आ गया. यहाँ पहुँच कर उन्हें पता चला कि सर्किट काका को होश आ गया है और उन्हें जनरल वार्ड में शिफ़्ट कर दिया गया है. यह बड़ी राहत की ख़बर थी मगर, जनरल वार्ड के मरीज़ों की लिस्ट में सर्किट काका की कोई एंट्री नहीं दिख रही थी. अत: उन्होंने सारे जनरल वार्ड खँगालने शुरू कर दिये. ढाबे का जो लड़का अस्पताल में रख छोड़ा था वह भी कहीं दिखाई नहीं दे रहा था.

अंतत: जनरल वार्ड क्रमांक चार में सर्किट काका बिस्तर पर उनींदे से लेटे दिखे. लड़का भी समीप के स्टूल पर बैठा था. पलंग पर जिस मरीज़ की एडमिशन शीट लगी थी उस पर काका का नाम पुरुषोत्तम यादव लिखा था.

ये पुरुषोत्तम कौन है? जगदीश ने लड़के से पूछा.

लड़के ने सर्किट काका की तरफ़ इशारा करते हुए बताया कि इनका नाम है.

यह बड़े अचरज की बात थी. पिछले पाँच वर्षों में यह नाम किसी को नहीं पता था और पता चलता भी तो कैसे, सर्किट काका बोल तो पाते नहीं थे. उसके बारे में इसीलिये अब तक कोई जानकारी नहीं थी सिवाय इसके कि वह रेलवे स्टेशन पर भीख माँगता था.

"यह नाम किसने लिखवाया?" लखन दाऊ ने लड़के से पूछा.

"इन्हीं ने! ख़ुद बोल कर बताया." लड़का बोला.

इसी समय डॉक्टर की विज़िट हुई. उनका यही कहना था कि बिजली का झटका लगने के कारण वो बेहोश थे और अब उनकी हालत ख़तरे से बाहर थी.

किंतु जगदीश और लखन के लिये अचरज का विषय यह था कि सर्किट काका ने उन्हें बोल कर अपना नाम कैसे बताया जबकि वह बोल ही नहीं सकते थे.

डॉक्टर साहब ने काका की नब्ज़ चेक की और पूछा - अब कैसा लग रहा है ?

"ठीक हूँ डॉक्टर साहब!"

पहली बार सर्किट काका की आवाज़ से दोनों हैरान थे. काका उन्हें पहचान भी रहा था और एक हल्की सी मुस्कान उसके चेहरे पर थी.

डॉक्टर ने अन्य मरीज़ों के चेकअप के बाद दोनों को केबिन में मिलने बुलवाया.

दोनों ने उन्हें पूरी बात बताई.

डॉक्टर का कहना था कि होश में आने के बाद से वो नॉर्मल बातचीत कर रहे हैं और समझ भी रहे हैं. यदि ऐसी बात है तो फ़िलहाल उनके पूर्णत: स्वस्थ होने तक उनसे बहुत अधिक बात या प्रश्न करना उचित नहीं होगा. क्योंकि यह उनकी याददाश्त वापस आने का संकेत है. सम्भवत: यह बिजली के झटके के कारण हुआ है और यह मरीज़ के लिये एक अच्छी बात है.

दो दिन बाद उनकी अस्पताल से छुट्टी हो गई. जगदीश उन्हें अपने घर ले गया. घर के बरामदे में उनके आराम की व्यवस्था कर दी गई. घरेलू माहौल में सर्किट काका को बहुत कुछ याद आने लगा. अपना परिवार, गाँव, बच्चे मगर नाम किसी का याद नहीं आता था. अक्सर वो टूटी फूटी भाषा में एक चोर और एक्सीडेंट का ज़िक्र करते थे. चूँकि डॉक्टर की सख़्त हिदायत थी कि उनसे बहुत अधिक प्रश्न न किये जाएँ अत: स्वेच्छा से काका जो बड़बड़ाते या बताते, उसे ध्यान में रखा जाने लगा.

कुछ दिनों में काका वापस काम पर आने लगे, फ़र्क़ यह हुआ कि अब वो पूरे पूरे वाक्य बोलने लगे थे. उनकी हालत और याददाश्त में तेज़ी से सुधार हो रहा था. अब वो कटिंग और दाढ़ी बनाने पर भी ध्यान देने लगे थे.

सर्किट काका की बॉयोमेट्रिक से आधार कार्ड की पहचान की कोशिश की गई मगर यहाँ भी असफलता हाथ लगी. अजीब बात थी. मगर ऐसे बहुत से लोग आज भी हैं जिनके आधार कार्ड नहीं बने हैं.

एक दिन एक अजीब बात हुई. ढाबे पर किसी ग्राहक द्वारा हरिद्वार जाने का ज़िक्र करते ही काका कुछ असहज से हो गए. उनके मन-मस्तिष्क में जैसे भूचाल आ गया. लगभग पंद्रह-बीस मिनट वो जैसे स्वयं से लड़ते रहे.

उन्हें जो याद आया वह इतना था कि वो हरिद्वार में सड़क पर अपने किसी मित्र का इंतज़ार कर रहे थे जिसके साथ उन्हें केदारनाथ दर्शन के लिये जाना था. तभी उनका बैग एक चोर ले भागा और उसके पीछे दौड़ते हुए वो एक कार से टकरा गए थे.

वो कहाँ से आए थे यह उन्हें अभी भी याद नहीं आया था.

यानी वह बैग जो चोरी हुआ था उसमें ज़रूर इनकी पहचान के कुछ दस्तावेज़ रहे होंगे.

जगदीश ने साहस कर के उन्हें उनके असली नाम से सम्बोधित करके प्रश्न कर ही दिया- पुरुषोत्तम जी, आपका वह मित्र कौन था और कहाँ से आने वाला था ?

इस बार काका को अधिक सोचना नहीं पड़ा.

“दिल्ली से, ‘सुदर्शन बारस्कर’”.

इससे अधिक न वो याद कर पाए न उन पर दबाव डाला गया.

जगदीश और उसके कुछ मित्रों ने अब यह ठान लिया था कि सर्किट काका उर्फ पुरुषोत्तम यादव को किसी भी सूरत में उनके परिजनों के पास पहुँचाना है. उनके परिवार ने उन्हें बहुत खोजा होगा.

इस सुदर्शन बारस्कर नामक व्यक्ति की खोज कैसे हो, यह एक असम्भव सा कार्य था.

चूँकि सुदर्शन उनका मित्र था अत: यह निश्चित था कि उसकी उम्र भी लगभग वही होगी.

कुछ बच्चों द्वारा फ़ेसबुक पर ऐसे नाम की खोज की जाने लगी. ऐसे कई सुदर्शन बारस्कर दिल्ली के निकले. कुछ में प्रोफाइल तस्वीर नदारद तो कुछ में मोबाइल नम्बर.

कोई ज़रूरी नहीं था कि यह सुदर्शन बारस्कर फेसबुक पर हो, मगर दिल्ली में तीन सुदर्शन बारस्कर ऐसे थे जिनमें उनकी फ़ोटो नहीं थी मगर उनकी उम्र लगभग यही थी जो सर्किट काका की थी.

तीनों को फ्रेंड रिक्वेस्ट भेज दी गई.

इधर सर्किट काका को कुछ और याद नहीं आ रहा था. जगदीश के लिये पहले सर्किट काका एक नौकर से अधिक कुछ न थे मगर अब उनके प्रति आत्मीयता और संवेदना उसके मन में थी.

आख़िर फेसबुक पर दो फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार हो गईं और उनके मोबाइल नम्बर भी प्राप्त हुए. दोनों से सम्पर्क किया गया किंतु ये दोनों किसी पुरुषोत्तम यादव को नहीं जानते थे.

जगदीश का मन अब काम में नहीं था बल्कि उसकी दिलचस्पी अब सर्किट काका और उसके परिवार को लेकर थी. संभव था कि काका का दुनिया में कोई न बचा हो, या फिर उन्हें घरवालों ने ही घर से निकाल दिया हो, या कोई उन्हें ढूँढ़ रहा हो, ये सारी सम्भावनाएँ थीं, क्योंकि विगत पाँच वर्ष से तो वो उसी के साथ थे. उसका सोचना था कि काका की याददाश्त आ जाती तो उन्हें सम्भवत: इस ख़ानाबदोश ज़िंदगी से निज़ात मिलती.

इसी बीच तीसरे सुदर्शन बारस्कर ने भी फेसबुक पर जगदीश की फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार कर ली और उसकी लॉक्ड प्रोफ़ाइल खुल गई जिससे सुदर्शन बारस्कर और उसकी परिवार की कई तस्वीरें दिखने लगीं.

जगदीश ने ये सारी तस्वीरें काका को दिखाईं और काका चौंक कर बोल उठे - सुदर्शन !

यानी यही वो सुदर्शन बारस्कर था जिसकी तलाश थी. सुदर्शन की फ़ेसबुक की टाइम लाइन पर सर्किट काका की तस्वीर डाली गई और उनके नाम सहित पूरा विवरण डाला गया और संपर्क के लिये जगदीश ने अपना नम्बर साझा किया.

अब एक उम्मीद की किरण नज़र आई थी.

अब इंतज़ार था तो सुदर्शन जी के उस पोस्ट को देखने का.

दो दिन बाद सुबह सुबह ढाबे की तरफ़ रवाना होते समय जगदीश

का मोबाइल बज उठा. अज्ञात नम्बर को रिसीव करते ही एक काँपती आवाज़ ने प्रश्न दागा -

"कौन! जगदीश जी?"

"जी, आप कौन?"

"मैं सुदर्शन बारस्कर, मैंने अभी फेसबुक पर आपकी पोस्ट देखी. मैं हैरान हूँ कि पुरुषोत्तम ज़िंदा है. हम तो इसे मृत समझ बैठे थे."

"जी सर, मगर उन्हें अब कुछ याद नहीं. पिछले पाँच साल से वो मेरे साथ हैं. सिर्फ़ आपका नाम उनके मुँह से सुना तो हमने अँधेरे में यह तीर चलाया और किस्मत से आपसे बात हो रही है."

सुदर्शन बोले - "मैं कल आपके पते पर देहरादून आ रहा हूँ शेष बातें वहीं करेंगे."

अगले ही दिन सुदर्शन जी बेसब्रों की तरह अपनी कार से ड्राइवर समेत ढाबे पर उपस्थित थे. जगदीश उन्हें घर ले आया. सर्किट काका उर्फ़ पुरुषोत्तम यादव उन्हें पहचान गए. अभी दो तीन दिन पहले ही तो उन्होंने सुदर्शन की तस्वीर देखी थी अन्यथा शायद यह सम्भव न होता.

सबसे पहले सुदर्शन जी ने जगदीश का आभार व्यक्त किया और इस विषय में बताना आरम्भ किया.

यह बात है सन् 2013 के जून की. पुरुषोत्तम सहित मेरे चार मित्र बाबा केदारनाथ यात्रा के लिये अपने गाँव बाजपुर ज़िला अनूपपुर मध्यप्रदेश से रवाना हुए थे. मैं चूँकि दिल्ली में था अत: मैने उनसे सीधे हरिद्वार में मिलने का फ़ैसला किया. हम पाँचों मित्र वहाँ से साथ ही केदारनाथ दर्शन के लिये जाने वाले थे. हमारे तीन मित्र हरिद्वार से एक दिन पहले ही केदारनाथ यात्रा के लिये निकल पड़े किंतु फोन पर बातचीत के बाद पुरुषोत्तम मेरे इंतज़ार में हरिद्वार में रुक गया.

मैं हरिद्वार पहुँचता इसके पहले ही मंदाकिनी घाटी में नदी की बाढ़ ने भीषण तबाही मचा दी. हज़ारों लोग काल का ग्रास बन चुके थे. मैने पुरुषोत्तम से सम्पर्क किया मगर उसका मोबाइल बंद था. मेरे शेष तीन मित्रों से भी मोबाइल पर संपर्क नहीं हो पाया. हरिद्वार में जिस होटल में चारों मित्र रुके थे वहाँ भी पता किया गया किंतु ये सभी रूम छोड़ चुके थे.

बहुत खोजबीन के बाद भी किसी का कोई पता नहीं चला. एक दो वर्ष तक सभी के परिवार मुझसे संपर्क करते रहे किंतु उसके बाद शायद सभी ने मान लिया कि चारों केदारनाथ त्रासदी के शिकार हो गए हैं. सुदर्शन ने अपनी बात ख़त्म की.

यह बात सर्किट काका भी सुन रहे थे. सुनकर उनके भीतर एक तूफ़ान सा उठ गया. वो बरामदे में चहल क़दमी करने लगे. उन्हें पानी पिलाया गया.

इसके आगे का हरिद्वार एक्सीडेंट का वृत्तांत जगदीश ने सुनाया.

"इसका अर्थ यह हुआ कि सन दो हज़ार तेरह की इस कार दुर्घटना में पुरुषोत्तम की याददाश्त गई और अब आठ वर्ष बाद उसे कुछ याद आ रहा है वो भी बिजली का झटका लगने से?" सुदर्शन बोले.

"और उसके बाद वो ट्रेन और रेलवे स्टेशनों पर भीख माँगते रहे और एक दिन मैं उन्हें अपने ढाबे पर ले आया तब से वो यहाँ सर्किट काका के नाम से जाने जाते है" जगदीश बोला.

सुदर्शन जी ने बताया कि पुरुषोत्तम के परिवार में उनकी पत्नी और दो बेटे थे जो कई बार उनकी तलाश में उनके पास दिल्ली तक आए थे. मगर अब उनके पुराने मोबाइल नम्बर भी बंद हो चुके हैं.

फिर भी उनका पता किया जा सकता है.

"नहीं! उन्हें घर तक मैं पहुँचाऊँगा," जगदीश बोला. "यदि आप भी साथ चलें तो और अच्छा होगा."

सुदर्शन जी ने इसमें अपनी सहमति दर्शाई और यह तय किया कि वो जगदीश के साथ पुरुषोत्तम को लेकर बाजपुर ज़रूर चलेंगे.

जगदीश तो एक पाँव पर तैयार था. आख़िर उसकी मेहनत रंग जो ला रही थी. रास्ता बहुत लंबा था. तत्काल में रिज़र्वेशन करवाया गया और ठीक दो दिन बाद वे तीनों अनूपपुर से बाजपुर जाने वाली बस में बैठे थे.

आठ साल में यह रास्ता बहुत बदल गया था किंतु जैसे जैसे बाजपुर समीप आता गया पुरषोत्तम के चेहरे के हाव भाव बदलने लगे. मानो उसकी याददाश्त लौट-लौट कर ख़ुशियों के द्वार पर दस्तक देने को आमादा हो. बस स्टैंड पर उतर कर पुरुषोत्तम के पाँव अपने आप अपने घर की ओर बढ़ चले. वह आगे-आगे तो जगदीश और सुदर्शन पीछे-पीछे. गाँव के पीपल और चौपाल को इशारे से दिखा कर वह जिस आनन्द की अनुभूति कर रहा था वह अवर्णनीय थी. उसकी याददाश्त तेज़ी से वापस आ रही थी. गलियारों से होकर वह एक घर के सामने ठहर गया. उसे आसपास ही अपना घर होने का अंदेशा था. जगदीश ने उसी घर के आँगन में झाड़ू लगाती एक बुज़ुर्ग महिला से प्रश्न किया - अम्मा, यादव जी का घर किस तरफ़ है?

महिला ने झाड़ू लगाते हुए उचटती निगाह से तीनों को देखा और प्रतिप्रश्न किया - "कौन से यादव ? नाम बताओ."

अचानक सर्किट काका उसे देख कर बोल पड़े -"सत्तो" !

यह स्वर सुनते ही महिला ठिठक गई .झाड़ू उसके हाथ से छूट गई और उसका मुँह खुला रह गया. उसने घूम कर पुरुषोत्तम को देखा क्योंकि उस सतवंती को इस लहजे से सत्तो कहने वाला दुनिया में कोई दूसरा नहीं हो सकता था.

राजकुमार कोरी
बैतूल शाखा, भोपाल (दक्षिण)

हमें गर्व है

दि. 17.04.2022 को बी. एम. बॉक्सिंग अकादमी, नजफगढ़ दिल्ली में आयोजित जूनियर राज्य स्तरीय बॉक्सिंग चैंपियनशिप 2022 प्रतियोगिता में श्री अक्षत भाटी, सुपुत्र सुश्री शीलू कसाना, मयूर विहार शाखा, दिल्ली ने स्वर्ण पदक के साथ प्रथम स्थान प्राप्त किया.

श्रीमती सोनू कुमारी, मुख्य खजांची, विलिंगडन आईलैंड शाखा के डेढ़ साल के सुपुत्र सिद्धार्थ बच्चों के खाद्य पदार्थ 'यम्मी वेली' के विज्ञापन में अभिनय करने का अवसर प्राप्त हुआ.

मऊ क्षेत्र के अंतर्गत मझवारा शाखा का एटीएम मशीन 'लोअर ट्रांसपोर्ट डोर' पार्ट खराब होने से वेंडर द्वारा उक्त पार्ट को बदलने हेतु रु. 102990/- का कोटेशन दिया गया था. एक अन्य शाखा सूरजपुर का एटीएम मशीन जो बिलकुल खराब हो चुकी था और जिसका बाई बैक मूल्य नगण्य था जो मझवारा शाखा के एटीएम मशीन के ही समान थी को श्री अविनाश कुमार, क्षे.का. मऊ ने अपनी कार्य-कुशलता एवं सूझबुझ से इंजीनियर के माध्यम से एटीएम मशीन के 'लोअर ट्रांसपोर्ट डोर' पार्ट को मझवारा शाखा के एटीएम मशीन में लगवाकर उसे सुचारु रूप से कार्यात्मक कर दिया, जिसके लिए मात्र रु.5000/- का व्यय हुआ. श्री अविनाश कुमार के इस कार्य ने बैंक के व्यय को कम करने के साथ ही बैंक की संपत्ति बचाने एवं बैंक की लाभप्रदता बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया. उनकी इस उपलब्धि के लिए उन्हें अंचल प्रमुख वाराणसी श्री गिरीश चन्द्र जोशी द्वारा विशिष्ट उपलब्धि प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया है.

Mr. Seera Snehit, s/o Smt. Egala Rajeswari, House Keeper – cum-Peon, ZAO, Visakhapatnam bagged 3rd prize in "7th AP Junior Inter District Basket Ball Championship" conducted by Visakhapatnam District Basketball Association (VDBA) at Gitam University, Visakhapatnam from 25th June, 2022 to 26th June, 2022. Mr. Snehit seen in the picture receiving the trophy from Mr. Suneel Mahanty, President of VDBA.

Mr. Snehit is also doing extremely well in his academics and has scored 952 marks out of 1000 in the Board of Intermediate Education, Andhra Pradesh for the academic year 2021-22.

'The Song of the God'

Globally recognized Bhagwad Gita is the precious jewel of Indian culture. It has been translated into every major language of the world. Literally billions of copies are printed all over the world. It is regarded as the world's greatest religious and spiritual scripture by many.

The Srimad Bhagwad Gita is a Sanskrit text from the chapter Bhishma parva of the Mahabharata epic containing 700 verses. It is a smriti text. All the teachings of Lord Krishna were put together into Srimad Bhagwad Gita by Bhagwan Vyasa. Bhagwan Vyasa blessed humanity by presenting this greatest gift. Srimad Bhagwad Gita is the dialogue between Lord Krishna and Arjuna at the time of the Kurukshetra war. On the battlefield, Shri Krishna revealed supreme, intense and soul awakening spiritual truth to Arjuna, who was filled with moral perplexity and despair about the violence and death that will result from the battle with his own kin.

Everything mentioned in the Gita was written thousands of years ago, but it is still relevant and timeless. It throws light on yoga, devotion, Vedanta, action and much more. It is the way where we get to know our true self and meet the purpose of life. It can be considered as a secret door of wisdom and liberation opened by the Supreme Lord himself. Gita reveals the supreme truth and also guides us on attaining that supreme truth.

The essence of philosophy of the Bhagawad Gita gives us a glimpse of the vast knowledge stored in this great ocean. It teaches us to live in the present rather than lamenting about the past or worrying about the future. We don't have an ownership over anything in this world as nothing is permanent here. Our soul is indestructible and changes the body birth after birth. So, surrender to the Almighty and get freedom from attachment, fear, worry, despair and grief.

The speaker of the Bhagwad Gita, the Supreme Lord himself, offers the assurance 'Abandon all varieties of religion and just surrender unto me. I shall deliver you from all sinful reaction. Do not fear" (Bhagwad Gita 18:66). The Lord reveals his identity as the Supreme Being by manifesting his infinite cosmic form to Arjuna. Arjuna got a divine vision to see the lord's infinite form that comprises the entire universe. This sets the credibility of the Bhagawad Gita as the 'The Song of God'.

Rajesh Joshi
Union Dhara, C.O.

डिजिटल लेन-देन और डिजिटल करेंसी अब डाकघरों में भी

बैंकिंग जगत में डिजिटल बैंकिंग का आवागमन एक बहुत बड़ा बदलाव लेकर आया है. पारंपरिक बैंकिंग से डिजिटल बैंकिंग में बदलाव की बुनियादी व्यवस्था ने गति पकड़ ली है. इस व्यवस्था को और बेहतर बनाने एवं इसकी रफ्तार को और तेज करने के लिए वर्ष 2022-23 के बजट की उद्घोषणा में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने पाँच खास ऐलान किए हैं. इस ऐलान का उद्देश्य क्रिप्टोकरेंसी जैसे माध्यमों पर लगाम लगाया जाना है जिससे आम लोग सुरक्षित डिजिटल वित्तीय माध्यमों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित हों.

वित्तीय वर्ष 2021-22 में पेश बजट में वित्त मंत्री ने डिजिटल लेन-देन को बढ़ावा देने के लिए एक प्रोत्साहन योजना, जिसमें कि रुपे डेबिट कार्ड और कम राशि वाले भीम-यूपीआई लेन-देन शामिल हैं, की शुरूआत की थी. इस वर्ष प्रस्तुत बजट में भी कहा गया है कि यह वर्तमान वित्त वर्ष में भी जारी रहेगी. इसकी समय सीमा बढ़ाने का उद्देश्य डिजिटल पेमेंट्स के प्रयोग को बढ़ावा देना है क्योंकि यह इकोनोमिकल और यूजर फ्रेंडली होता है. पिछले वर्ष इस योजना के अंतर्गत 1300 करोड़ रुपए खर्च करने का प्रस्ताव पारित किया गया था लेकिन वर्तमान वित्त वर्ष 2022-23 में कितनी राशि व्यय की जाएगी इसका निर्धारण नहीं किया गया है. यह योजना औपचारिक बैंकिंग एवं वित्तीय प्रणाली से बाहर और बैंक सुविधा से वंचित एवं हाशिये पर रहने वाले जन समूहों को सुलभ डिजिटल भुगतान के तरीकों से अवगत कराने में सहायता करेगी.

वर्तमान स्थिति को देखें तो यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भारत आज दुनिया के सबसे कुशल भुगतान बाज़ारों में से एक है. यह विकास डिजिटल भुगतान इको-सिस्टम की ओर भारत सरकार की पहल एवं विभिन्न दिग्गजों के नवाचारों का ही परिणाम है.

हाल के वर्षों में डिजिटल बैंकिंग, डिजिटल पेमेंट्स और फिनटेक जैसे नवीन कार्यों में तेजी से वृद्धि हुई है. डिजिटल बैंकिंग यूजर फ्रेंडली है और इसका लाभ देश के कोने-कोने तक पहुंचाया जा रहा है. स्वतन्त्रता के 75 वर्ष पर आजादी का अमृत महोत्सव मनाते हुए यह प्रस्ताव किया गया है कि अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों द्वारा 75 जिलों में 75 डिजिटल बैंकिंग यूनिट की स्थापना की जाएगी.

यह कहना गलत नहीं होगा कि हाल के दिनों में मोबाइल एप्लिकेशन, मोबाइल बैंकिंग या नेट बैंकिंग के जरिए लेन देन बढ़ा है. फिर भी ऐसे कई लोग हैं जो आज भी बैंक की लंबी कतारों में लगते हैं और बैंकिंग लेन-देन करते हैं. इसके अलावा नेट बैंकिंग की जानकारी होने के बावजूद कुछ लोग बैंक शाखाओं से लेन-देन करते हैं क्योंकि वे इन डिजिटल सेवाओं का उपयोग करने में खुद को ज्यादा सहज महसूस नहीं करते हैं. ग्रामीण एवं अर्धशहरी क्षेत्रों में बेहतर तरीके से बैंकिंग सेवा मुहैया कराने की जरूरत महसूस की जा रही है.

डिजिटल बैंकिंग यूनिट बैंकिंग के पारंपरिक स्वरूप को बदलेगा. डीबीयू जहां एक ओर ग्रामीण क्षेत्रों में नई-नई सेवा देने का मौका मुहैया कराएगा, वहीं दूसरी ओर डिजिटल माध्यमों से लेन-देन को और बढ़ावा देगा. यह एक ऐसी व्यवस्था होगी जिसमें कम समय और कम लागत में भुगतान करने की सुविधा देने में मदद मिलेगी. वर्तमान समय में ऑनलाइन धोखाधड़ी को देखते हुए डिजिटल माध्यमों से लेन-देन में सुरक्षा को लेकर संशय हमेशा बना रहता है, अतः इस संशय को दूर करने के लिए लोगों के बीच पहल करना बहुत जरूरी हो गया है और इसमें डिजिटल बैंकिंग यूनिट कारगर साबित होगी.

वित्तीय समावेशन की बात करें तो डिजिटल बैंकिंग यूनिट का योगदान काफी महत्वपूर्ण रहा है. प्रधानमंत्री जन-धन योजना के तहत लगभग 44.58 करोड़ बैंक खाते खोले जा चुके हैं जिनमें लगभग 1.57 लाख करोड़ की राशि जमा है. इन सब को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि डिजिटल बैंकिंग यूनिट के माध्यम से हमारे देश में वित्तीय समावेशन में काफी सुधार आया है.

आज भी कई लोग ऐसे हैं जो डाकघरों से जुड़े हैं और उनका इन डाकघरों पर अटूट विश्वास है. इसके लिए भी लोगों को लंबी कतार में लगना पड़ता है और इसी सोच को ध्यान में रखते हुए वित्त मंत्री ने 'किसी भी समय कहीं से भी डाकघरों में बचत' की घोषणा की. ऐसा माना जा रहा है कि वर्ष 2022 तक 1.5 लाख डाक घरों में शत-प्रतिशत कोर बैंकिंग सिस्टम चालू हो जाएगा जो कि वित्तीय समावेशन के लिए काफी जरूरी है. आने वाले समय में डाकघरों में भी मोबाइल बैंकिंग, एटीएम की सुविधा होगी, डाकघर के खाते से बैंक खाते में पैसे को ऑनलाइन ट्रान्सफर किया जा सकेगा. बैंक की तरह डाकघरों में भी ग्राहकों को किसी विशेष स्थान से ही लेन-देन करने की पाबंदी नहीं होगी. आज तक जो भी सुविधाएं सिर्फ बैंकों में उपलब्ध थी अब डाकघरों में कोर बैंकिंग सोल्यूशन

के आ जाने से वे सभी सुविधाएं यहाँ भी उपलब्ध होंगी जैसे कि कहीं से भी पैसे निकालना या जमा करना, नेट बैंकिंग के माध्यम से अपने खाते पर नजर रखना, दूसरे बैंकों से आसानी से पैसे आना, भुगतान आदि सुविधाएं उपलब्ध होंगी. देश में कुल 1,56,434 डाकघर हैं जिनमें से 1,41,055 डाक घर ग्रामीण क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं. उनमें से अभी तक लगभग 25006 डाक घरों में सीबीएस की सुविधा उपलब्ध कराई जा चुकी है. इसलिए यह निर्णय लिया गया है कि वर्ष 2022 तक सभी डाकघरों में सीबीएस लाया जाना है. इस कदम से आने वाले समय में गाँव के डाकघर और शहर की बैंक शाखाओं के बीच की दूरी कहीं न कहीं बहुत कम हो जाएगी.

इसके साथ ही अर्थव्यवस्था में सुधार लाने के लिए क्रिप्टोकरेंसी जैसे वर्चुअल डिजिटल असेट की संकल्पना की जा रही है. चालू वर्ष के बजट में सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी को जारी करने की व्यवस्था की जा रही है ऐसा माना जा रहा है कि अर्थव्यवस्था में इसके आ जाने से डिजिटल अर्थव्यवस्था को काफी बढ़ावा मिलेगा. डिजिटल करेंसी एक सस्ती करेंसी प्रबंधन व्यवस्था में आ जाएगी. हालांकि यह डिजिटल करेंसी भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा जारी की जाएगी जिसका वर्ष 2022-23 से प्रभाव में आना अपेक्षित है. डिजिटल स्वरूप में जारी किए जाने वाले नोट को कागजी नोट या धातु के सिक्के की तरह ही फिएट करेंसी माना जाएगा. यह एक तरह की कानूनी मुद्रा होगी. वर्तमान में नाइजीरिया एवं 8 कैरेबियन देशों में सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी चल रही है. इसके साथ ही चीन और दक्षिण कोरिया सहित 14 देशों में सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी को लेकर पायलट प्रोजेक्ट चल रहे हैं.

इन सब को देखते हुए कहा जा सकता है कि आधुनिकीकरण ने हमारे देश में एक बड़े स्तर पर रफ्तार पकड़ ली है. अब इसे और व्यापक स्तर पर ले जाने की जरूरत है. शहरों में तो डिजिटल बैंकिंग के प्रभाव दिखने भी लगे हैं. बस गांवों तक पहुँचने की जरूरत है. जरूरत है ग्रामीण एवं वरिष्ठ लोगों को इस संबंध में प्रशिक्षित किए जाने की. क्योंकि कुछ लोग शिक्षित होते हुए भी इसके प्रयोग से बच रहे हैं. उनके बीच इसके प्रचार प्रसार की जरूरत है. इसके साथ ही डाकघरों में आने वाले समय में इन नए बदलावों से कई पुरानी योजनाएँ जैसे नेशनल सेविंग सर्टिफिकेट, पब्लिक प्रोविडेंट फंड, किसान विकास पत्र, सुकन्या समृद्धि योजना, डाकघर मासिक आय योजनाओं में देश के लोगों द्वारा पैसे जमा करने की आदत को बढ़ावा मिलेगा. इन सभी से बैंकों को मजबूत डिजिटल भुगतान के निर्माण और रुपे डेबिट कार्ड तथा भीम-यूपीआई डिजिटल लेन-देन को सभी क्षेत्रों में बढ़ावा मिलेगा और इससे देश में डिजिटल अर्थव्यवस्था एवं डिजिटल बैंकिंग भी मजबूत होगी.

प्रीति साव
क्षे.का. भुवनेश्वर

जीवन की असली सफलता

जीवन की खुशियाँ और सुख : प्राय: लोग सोचते हैं कि प्रसन्नता धन से प्राप्त की जा सकती है. अधिक धन होगा तो अधिक भौतिक वस्तुएँ खरीदी जा सकती हैं. संसार में आधे लोगों की अप्रसन्नता का कारण है - दूसरों से ईर्ष्या और अपने से असंतोष. हम कभी भी अपने वर्तमान जीवन से प्रसन्न नहीं होते, क्योंकि हम जो कुछ हैं उससे संतुष्ट नहीं होते और जो नहीं है, उसे प्राप्त करने की आकांक्षा में वर्तमान के आनंद को भी खो देते हैं. हम सभी सुखमय विश्व की खोज में अपने वर्तमान सुख भरे संसार को भुला देते हैं और अप्रसन्न रहते हैं.

कुछ लोग तो इतना भी नहीं जानते हैं कि उनकी इच्छा क्या है? वे बस इतना जानते हैं कि वे दुखी हैं, अप्रसन्न हैं. प्रसन्नता को प्राप्त करने के लिए वे संसार में भटकते फिरते हैं और अपनी अप्रसन्नता का कारण नहीं बता पाते. सच्चाई तो यह है कि प्रसन्नता या सुख, इच्छाओं की पूर्ति में नहीं, अपितु अपनी आत्मा की संतुष्टि में है. भौतिक वस्तुओं से हमें क्षणिक सुख ही मिल सकता है, वास्तविक प्रसन्नता नहीं.

संसार के अधिकतर लोग सोचते हैं कि प्रसन्नता दूसरों द्वारा दी गयी सुख सुविधाओं के उपयोग करने में है, जबकि वास्तव में प्रसन्नता

दूसरों को देने और उनका उपकार करने में है. अंधविश्वास, भय और चिंता का त्याग करके प्रसन्नता और सुख का जीवन जीना चाहिए.

जीवन में समस्याएँ या संघर्ष हमें निराश करने अथवा व्यथित करने के लिए नहीं आते, बल्कि हम में साहस और ऊर्जा का संचार करने के लिए आते हैं. आवश्यकता से अधिक गंभीरता मनुष्य की ऊर्जा को नष्ट कर देती है जिससे उसके कार्य करने की सामर्थ्य भी घट जाती है. जो व्यक्ति जीवन से निराश हो जाते हैं, वो अपने जीवन की प्रसन्नता के साथ साथ अपने साहस और शक्ति को भी नष्ट कर देते हैं.

दृढ़ इच्छा-शक्ति का महत्व : सफलता का रहस्य है कि वही सोचो जो तुम चाहते हो. पूरे मन और विश्वास के साथ अपनी इच्छा के बारे में सोचकर उसे प्राप्त करने के लिए जुट जाओ. हो सकता है कि अपनी इच्छा प्राप्त करने के लिए अथवा स्वप्नों को साकार करने के लिए बहुत कुछ त्यागना पड़े, पर अपनी इच्छाओं पर डटे रहकर आगे बढ़ते रहना चाहिए. इच्छापूर्ति के मार्ग में आने वाली बाधाओं से निराश व अधीर न होकर परिश्रम और आत्मविश्वास के साथ लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना चाहिए. यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारा विश्वास मजबूत बना रहे और डगमगाये ना. जिस व्यक्ति में आत्मविश्वास हो, उसे सफलता पाने से कोई नहीं रोक सकता.

उद्देश्य की प्राप्ति में दृढ़ संकल्प बहुत सहायक होता है क्योंकि दृढ़ संकल्प की प्रेरणा से व्यक्ति में तत्परता और आगे बढ़ने की इच्छाशक्ति उत्पन्न होती है.

मेहनत और आत्मविश्वास : हमारे व्यक्तित्व का सही विकास तभी संभव है जब हम बाह्य सहायता के बिना स्वयं कठिनाइयों और संकटों से जूझते हुए सफलता प्राप्त करते हैं. मनुष्य का सच्चा साथी उसकी योग्यता, साहस और उसके अंदर की शक्तियाँ हैं जो सदैव हर स्थिति में संघर्ष करने में उसका साथ देती हैं. जीवन के समुचित विकास के लिए बिना रुके हमें अपने लक्ष्य की प्राप्ति तक गतिशील रहना चाहिए. असंभव को संभव कर दिखाने वाली शक्ति विश्वास में ही है. जैसे जैसे हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है, वैसे ही कार्यशाक्ति भी बढ़ती जाती है. असंभव को संभव कर दिखाने और पर्वतों को भी हिला देने की शक्ति, आस्था और विश्वास से ही आती है.

आत्मविश्वास की कमी संदेह और निराशाओं को जन्म देती है, परंतु विश्वास भी स्थिर होना चाहिए अन्यथा पूर्ण सफलता मिलना मुश्किल हो जाता है. जब तक सफलता न मिल जाए, पूरी तरह मन में विश्वास रखना चाहिए.

हमारे मन के विचारों का प्रभाव हमारे शरीर पर पड़ता है. यदि हम अपने मन में बार-बार अपने अस्वस्थ होने के विचार लाते रहते हैं, तो वास्तव में व्याधिग्रस्त हो जाते हैं. अपने स्वास्थ्य को स्थायी बनाने के लिए हमें सदैव अपने शरीर को हृष्ट पुष्ट और स्वस्थ बनाने के बारे में सोचना चाहिए. साथ ही यह भी सोचना और विश्वास रखना चाहिए कि मुझे ईश्वर ने ऐसी कोई व्याधि नहीं दी जिस पर विजय पाने की मेरे शरीर में सामर्थ्य ना हो.

समृद्धि एवं धन संपत्ति को प्राप्त करने के लिए भी मन में मजबूत इच्छा शक्ति और आत्मविश्वास होना चाहिए. निर्धनता के बारे में सोचते रहने से समृद्धि प्राप्त नहीं की जा सकती.

मस्तिष्क को मजबूत बनाएँ : हमारे मन में ईर्ष्या या घृणा के भाव उत्पन्न होने से शरीर में बहुत से रोग उत्पन्न हो सकते हैं जैसे चर्मरोग, जिगर के रोग, अजीर्ण, हृदय रोग, मस्तिष्क रोग आदि. मन में उत्पन्न हुए दुर्भाव शरीर की शक्ति और साहस को धीरे-धीरे नष्ट कर देते हैं जिसके परिणामस्वरूप व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती हैं. इसलिए शरीर को स्वस्थ रखने के लिए अपने विचारों को स्वस्थ रखना आवश्यक है. यदि हमारे अंदर कोई विकार उत्पन्न हो गया है, तो उससे डरने की बजाय हमें उस विकार को दूर करने की दिशा में प्रयास करना चाहिए.

जब भी हमारे मन में आशा और प्रसन्नता भरी होती है, तब हमें अपना शरीर भी हल्का, स्वस्थ और काम करने को उत्सुक लगता है, किन्तु जब मन में निराशा होती है, तो शरीर भी शक्तिहीन सा लगने लगता है. ऐसी स्थिति में मन में काम करने की इच्छा भी नहीं होती.

नकारात्मक या ध्वंसात्मक विचार मनुष्य की महत्वाकांक्षा का अंत कर देते हैं. ऐसे विचार वाले व्यक्ति को ऊंचा उठने की कोई अभिलाषा नहीं रह जाती. अत: यदि सफलता के शिखर पर पहुँचना है, तो असफलता रूपी चिंतन को त्यागना ही होगा.

मन में प्रगति करने और सफलता प्राप्त करने का विचार मन में आते ही मन व शरीर स्वयं ही प्रयास करना आरंभ कर देते हैं और अंग-प्रत्यंग आत्मप्रेरित होकर अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में जुट जाते हैं.

इसलिए जीवन में प्रगति के पथ पर चलने के लिए जीवन में प्राप्त खुशियों का आनंद लेना चाहिए. दृढ़ इच्छा शक्ति, मेहनत और आत्मविश्वास से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए. संयमित रहकर एवं उतावलेपन का त्याग करते हुए दुर्बल विचारों को मन में न लाकर अपने मस्तिष्क को मजबूत बनाना चाहिए. तब ही जीवन में सफलता को प्राप्त किया जा सकता है.

तुषार माहेश्वरी
स्टा.प्र.के. लखनऊ

रैनसमवेयर हमला

रैनसमवेयर अटैक क्या है?

i. रैनसमवेयर एक प्रकार का मैलवेयर (दुर्भावनापूर्ण सॉफ़्टवेयर) है जिसका उपयोग साइबर अपराधी करते हैं. यदि कोई कंप्यूटर या नेटवर्क रैनसमवेयर से संक्रमित हो गया है, तो रैनसमवेयर, सिस्टम तक पहुंच को अवरुद्ध कर देता है या उसके डेटा को एन्क्रिप्ट कर देता है. साइबर अपराधी डेटा वापिस करने के बदले अपने पीड़ितों (victim) से फिरौती की मांग करते हैं.

ii. रैनसमवेयर संक्रमण से बचाव के लिए सतर्क नजर और सुरक्षा सॉफ्टवेयर की जरुरत होती है. मैलवेयर के हमलों के शिकार लोगों के पास रैनसमवेयर संक्रमण के बाद तीन विकल्प होते हैं :

1) वे या तो फिरौती का भुगतान कर सकते हैं,
2) मैलवेयर को हटाने का प्रयास कर सकते हैं या
3) डिवाइस को फिर से आरंभ (Restart) / बैकअप से रिकवरी कर सकते हैं

iii. रैनसमवेयर द्वारा अक्सर उपयोग किए जाने वाले अटैक वैक्टर में रिमोट डेस्कटॉप प्रोटोकॉल, फ़िशिंग ईमेल और सॉफ़्टवेयर कमजोरियाँ शामिल हैं. इसलिए रैनसमवेयर अटैक व्यक्तियों और कंपनियों दोनों को निशाना बना सकता है.

iv. पिछले कुछ वर्षों में रैनसमवेयर अटैक, सभी संगठनों के लिए सबसे महत्वपूर्ण साइबर खतरे के रूप में विकसित हुआ है और अभी इसके कम होने के कोई संकेत भी नहीं दिख रहे हैं. रैनसमवेयर अटैक के माध्यम से साइबर अपराधियों के पास आज के समय में बहुत सारे कमजोर लक्ष्य उपलब्ध हैं जिनके शोषण से वे बहुत अधिक पैसा बना रहे है.

v. रैनसमवेयर हमले को साइबर अपराध के माध्यम से पैसा बनाने का सबसे प्रभावी तरीका बनाने के मुख्यत: निम्नलिखित कारण हैं:

1) कमजोर साइबर लक्ष्यों की पहचान करने के लिए उपयोग किए जाने वाले स्वचालित उपकरण
2) क्रिप्टोकरेंसी आधारित वसूली की मांग
3) आपराधिक समूहों के बीच आपस में अधिक सहयोग

रैनसमवेयर के प्रकार

खासतौर पर दो तरह के रैनसमवेयर काफी लोकप्रिय हैं :

i. **लॉकर रैनसमवेयर :** इस प्रकार का मैलवेयर बुनियादी कंप्यूटर कार्यों को अवरुद्ध करता है. उदाहरण के लिए, आपको डेस्कटॉप तक पहुंच से वंचित किया जा सकता है, जबकि माउस और कीबोर्ड आंशिक रूप से अक्षम रहते हैं. यह आपको भुगतान करने के लिए फिरौती की मांग वाली विंडो के साथ बातचीत जारी रखने की अनुमति देता है. इसके अलावा यह कंप्यूटर को निष्क्रिय कर देता है.

ii. **क्रिप्टो रैनसमवेयर :** क्रिप्टो रैनसमवेयर का उद्देश्य आपके महत्वपूर्ण डेटा, जैसे दस्तावेज़, चित्र और वीडियो को एन्क्रिप्ट करना है, लेकिन यह बुनियादी कंप्यूटर कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करता है. यह दहशत फैलाता है क्योंकि उपयोगकर्ता अपनी फाइलें देख सकते हैं लेकिन उन तक पहुंच नहीं सकते हैं. क्रिप्टो डेवलपर्स अक्सर अपनी फिरौती की मांग में उलटी गिनती जोड़ते हैं: "यदि आप समय सीमा तक फिरौती का भुगतान नहीं करते हैं, तो आपकी सभी फाइलें हटा दी जाएंगी."

रैनसमवेयर के कुछ प्रमुख उदाहरण :

i. लॉकी रैनसमवेयर - 2016 : लॉकी एक रैनसमवेयर है जिसे पहली बार 2016 में संगठित हैकर्स के एक समूह द्वारा हमले के लिए इस्तेमाल किया गया था. Locky ने 160 से अधिक फाइल प्रकारों को एन्क्रिप्ट किया और इसे संक्रमित अटैचमेंट वाले नकली ईमेल / फिशिंग ईमेल के माध्यम से फैलाया गया. उपयोगकर्ता फिशिंग ईमेल की चाल में आ गए और अपने कंप्यूटर पर रैनसमवेयर स्थापित कर लिया. प्रसार की इस पद्धति को फ़िशिंग कहा जाता है, और यह एक ऐसा रूप है जिसे सोशल इंजीनियरिंग के रूप में जाना जाता है.

ii. वानाक्राय - 2017 : एक रैनसमवेयर हमला था जो 2017 में 150 से अधिक देशों में फैल गया था. इसे विंडोज़ में सुरक्षा भेद्यता का फायदा उठाने के लिए डिज़ाइन किया गया था जिसे NSA द्वारा बनाया गया था और शैडो ब्रोकर्स हैकर समूह द्वारा लीक किया गया था. WannaCry ने दुनिया भर में 230,000 कंप्यूटरों को प्रभावित किया है. हमले ने यूके के सभी एनएचएस अस्पतालों में से एक तिहाई को प्रभावित किया, जिससे 92 मिलियन पाउंड का अनुमानित नुकसान हुआ.

iii. पेट्या - 2017 : पेट्या (ExPetr के साथ भ्रमित नहीं होना) एक रैनसमवेयर हमला है जो 2016 में हुआ था और 2017 में GoldenEye के रूप में पुनर्जीवित किया गया था. कुछ फ़ाइलों को एन्क्रिप्ट करने के बजाय, इस दुर्भावनापूर्ण रैनसमवेयर ने पीड़ित

की पूरी हार्ड डिस्क को एन्क्रिप्ट किया. यह मास्टर फाइल टेबल (एमएफटी) को एन्क्रिप्ट करके किया गया था, जिससे हार्ड डिस्क पर फाइलों तक पहुंचना असंभव हो गया था.

2020 में हुए रैनसमवेयर हमले से सीखे गये सबक: मोडस ऑपरेंडी

वर्ष 2020 में सैकड़ों रैनसमवेयर हमले की घटनाओं के डिजिटल फोरेंसिक करने और घटना की जांच के साथ-साथ डार्क वेब फ़ोरम की निगरानी के आधार पर रैनसमवेयर हमलों का विशिष्ट तरीका निम्नानुसार पाया गया है.

1) टोह लेना / पूर्व-परीक्षण

साइबर अपराधी अक्सर अपने लक्ष्यों पर रैनसमवेयर हमला करने से पहले उनके राजस्व या लाभ और कभी-कभी साइबर बीमा पॉलिसी के अस्तित्व इत्यादि से सम्बंधित तथ्यो का शोध करते हैं और इन कारकों के आधार पर फिरौती के भुगतान की संभावना का निर्धारण करते हैं.

i. यदि रैनसमवेयर हमला सार्वजनिक रूप से दिखाई देता है तो यह आम तौर पर शिकार संगठनों पर फिरौती वसूली की मांग को पूरा करने के लिए अतिरिक्त दबाव डालता है जो कि लक्ष्य के चयन में एक कारक भी हो सकता है.

ii. साइबर अपराधियों द्वारा शोषक साइबर भेदता या पहुंच बिंदुओं को अक्सर साइबर सुरक्षा टीमों द्वारा उपयोग किए जाने वाले समान स्कैनिंग और विश्लेषण टूल के साथ-साथ शोडन, जूमये और सेन्सिस जैसे सार्वजनिक खोज इंजनों का उपयोग करके विशिष्ट आईटी पोर्ट और प्रोटोकॉल के लिए वेब को क्रॉल करते पहचाना जाता है.

iii. 2020 में रिमोट डेस्कटॉप प्रोटोकॉल (RDP) रैनसमवेयर डिलीवरी के लिए साइबर अपराधियों द्वारा शोषण किया जाने वाला सबसे आकर्षक एक्सेस प्वाइंट था.

2) पहुंच प्राप्त करना

i. एक बार लक्ष्य और संभावित पहुंच बिंदु की पहचान हो जाने के बाद अगला कदम है उपयोगकर्ता खातों से समझौता करना, डिफ़ॉल्ट पासवर्ड का उपयोग करके या फ़िशिंग के माध्यम से क्रेडेंशियल प्राप्त करना.

ii. एक अन्य विकल्प डार्क वेब पर पहले से ही चुराये गये उपयोगकर्ता खातों या सर्वर पासवर्ड को खरीदना है. यह रैनसमवेयर हमलों में हालिया वृद्धि के प्रमुख कारणों में से एक है. समझौता किए गए आरडीपी पहुंच बहुत कम कीमत पर बिक्री के लिए उपलब्ध है और यह डार्क वेब अपने आप में एक छोटा आपराधिक उप-उद्योग है.

3) पहुंच बनाए रखना

i. खातों या सर्वरों को कोम्प्रोमाईज किए जाने के बाद, साइबर अपराधी / अटैकर आमतौर पर एक पैर जमाने के लिए सिस्टम में एक पिछले दरवाजे (मैलवेयर जो रिमोट एक्सेस और नियंत्रण को सक्षम बनाता है) को स्थापित करता है. यह साइबर अपराधी एक नेटवर्क में कई Back Door Malware का उपयोग करता है ताकि पहुंच (access) सक्रिय रहे, भले ही back door access प्राथमिक बिंदु बंद हो जाये.

ii. साइबर अपराधी/अटैकर कुछ मामलों में फ़ाइलों को एन्क्रिप्ट करने से पहले, डेटा और संसाधनों, जैसे ऑनलाइन बैकअप, की तलाश के लिए व्यवसाय संचालन एवं compromised नेटवर्क का निरीक्षण कर सकते हैं.

4) बैकअप को नष्ट या एन्क्रिप्ट करना:

i. जब रैनसमवेयर हमलों की बात आती है तो साइबर हैकर्स का मुख्य उद्देश्य पीड़ित संगठन/व्यक्ति से फिरौती की मांग करना होता है.

ii. फिरौती की मांग के भुगतान से बचने के लिए पीड़ित संगठन/व्यक्ति के पास सबसे प्रभावी रक्षा तंत्रों में से एक है - पीड़ित संगठन की रीयल-टाइम बैकअप से उबरने की क्षमता. हालांकि, आजकल साइबर अपराधियों ने बैकअप को भी पहचानना और एन्क्रिप्ट करना शुरु कर दिया है.

5) डेटा चोरी –

2020 में, विशेष रूप से वर्ष की दूसरी छमाही में, अपराधियों ने एन्क्रिप्शन मैलवेयर को तैनात करने से पहले कोम्प्रोमाईज किए गए नेटवर्क से संवेदनशील जानकारी को पहले तेजी से बाहर निकाल लिया.

i. अपराधियों ने पीड़ितों के पास एक मजबूत बैकअप होने अथवा किसी अन्य कारण से फिरौती का भुगतान न करने की स्थिति में चुराए गए डेटा का उपयोग प्रकटीकरण की धमकी देकर फिरौती देने के लिए मजबूर करने के लिए करना शुरु कर दिया है, इस रणनिति को डॉक्सिंग के रूप में जाना जाता है.

6) फ़ाइलें या सिस्टम एन्क्रिप्ट करना:

i. साइबर अपराधियों का मुख्य उद्देश्य लक्षित संगठन को पूर्णरुप से अपंग करने का होता है जिसके लिए वे लक्ष्य नेटवर्क में अधिक से अधिक फ़ाइलों या प्रणालियों को एन्क्रिप्ट कर देते हैं.

ii. एन्क्रिप्टेड फ़ाइलों और सर्वरों की सीमा अक्सर फिरौती की मांग के आकार को प्रभावित करती है.

7) फिरौती की बातचीत और भुगतान

i. एक बार जब रैनसमवेयर को लक्ष्य नेटवर्क में सफलतापूर्वक वितरित कर दिया जाता है, तो एन्क्रिप्टेड फ़ाइलों की डिक्रिप्शन कुंजी जारी करने के लिए फिरौती की मांग की जाती है जिसे अक्सर बिटकॉइन में भुगतान करने की आवश्यकता होती है.

ii. हालाकि बिटकॉइन लोकप्रियता (और मूल्य) प्राप्त कर रहा है, फिर भी संगठनों के लिए रैनसमवेयर संक्रमण की स्थिति में भुगतान करने के लिए क्रिप्टोकरेंसी आसानी से उपलब्ध होना अपेक्षाकृत असामान्य है.

8) रिकवरी – Recovery:

i. चाहे फिरौती का भुगतान किया गया हो या फ़ाइलों को बैकअप से पुनर्प्राप्त किया गया हो, इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में आम तौर पर कई दिनों का समय लगता है और व्यावसायिक आय, हानि, नेटवर्क बहाली और अधिक घटना प्रतिक्रिया लागत लग जाती है.

ii. यदि फिरौती का भुगतान किया जाता है तो भुगतान पर बातचीत करने और एन्क्रिप्टेड फ़ाइलों की पुनर्प्राप्ति शुरू करने के लिए डिक्रिप्शन कुंजी प्राप्त करने में आमतौर पर कई दिन लगते हैं. उस स्थिति में पुनर्प्राप्ति में अभी भी घंटे या दिन लग सकते हैं और 100% फ़ाइलें पुनर्प्राप्त नहीं हो सकती हैं.

iii. यदि फिरौती का भुगतान नहीं किया जाता है, तो पीड़ित संगठन को या तो फ़ाइलों और सिस्टमों को बैकअप से पुनर्प्राप्त करना होगा या फ़ाइलों को शुरुवात से बनाना होगा.

रैनसमवेयर हमलों के लिए तैयारी और प्रतिक्रिया कैसे करें:

i. रैनसमवेयर हमलों के विशिष्ट कारणों को समझना, एक रैनसमवेयर हमले की प्रक्रिया को समझना और इन हमलों को कैसे रोका जा सकता है या उनके प्रभाव को कैसे कम किया जा सकता है.

ii. सैकड़ों घटनाओं के अनुसार लक्षित रैनसमवेयर हमलों की विशिष्ट विशेषताओं के आधार पर, हमले के प्रत्येक चरण को संबोधित करने के लिए निवारक और प्रतिक्रिया उपायों की एक सूची निम्नानुसार है : -

1. हमले की सतह को कम करना

i. बड़े संगठनों को छोड़कर, जो अपने महत्वपूर्ण सार्वजनिक पदचिन्हों के कारण छिप नहीं सकते हैं, अन्य संगठनों के लिये, साइबर हमलावरों के द्वारा योग्य लक्ष्यों की तलाश में चलाये जाने वाले स्वचालित स्कैन से छिपना पूरी तरह से संभव है जिससे रैनसमवेयर हमलों के जोखिम को कम किया जा सकता है.

ii. अनावश्यक नेटवर्क सेवाओं और Internet Facing Ports को बंद करके हमलों के जोखिम को कम किया जा सकता है.

iii. सबसे पहली एवं महत्वपूर्ण कार्यवाही यह है कि आरडीपी सेवाओं को तुरंत बंद कर दिया जाना चाहिए जिससे RDP Port 3389 हमलावरों के द्वारा चलाए गए स्वचालित स्कैन में नहीं दिखेगा.

2. अभिगम नियंत्रण, प्रमाणीकरण और न्यूनतम विशेषाधिकार का सिद्धांत

i. रैनसमवेयर हमलों में अक्सर Compromised किए गए User Accounts शामिल होते हैं. अत: इससे बचने का सबसे प्रभावी उपाय है - बहु-कारक प्रमाणीकरण, मजबूत पासवर्ड और खाता लॉकआउट तकनीक.

ii. न्यूनतम विशेषाधिकार के आधार पर अधिकृत उपयोगकर्ताओं और उपकरणों की पहुंच को प्रतिबंधित करना.

3. अनुमानी मैलवेयर का पता लगाना और सतत निगरानी

i. नियमित मैलवेयर की तुलना में पिछले दरवाजे का पता लगाना कठिन होता है क्योंकि उनका उद्देश्य साइबर अपराधियों को सिस्टम तक चुपके से पहुंच प्रदान करना है.

ii. Intrusion Detection and Prevention Systems (IDP) प्रणाली को स्थापित किया जाना चाहिए क्योंकि पारंपरिक हस्ताक्षर आधारित पहचान अधिकांश Back Door Malware के खिलाफ काम नहीं करेगी.

4. बारंबार और संरक्षित बैकअप

i. डेटा बैकअप से सफलतापूर्वक Recovery करने की क्षमता रैनसमवेयर हमलों के खिलाफ सबसे प्रभावी हथियारों में से एक है.

ii. इसके अतिरिक्त, संगठनों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी महत्वपूर्ण डेटा, बैकअप प्रक्रिया का हिस्सा हैं और समय-समय पर, बैकअप सही तरीके से कॉन्फ़िगर किया गया है और ठीक से काम कर रहा है.

5. एंडपॉइंट डिटेक्शन एंड रिस्पांस

i. जिस स्तर पर रैनसमवेयर स्थापित किया जाता है, वहां एंडपॉइंट डिटेक्शन एंड रिस्पांस सिस्टम के द्वारा पूरे व्यापक नेटवर्क में फैलने से पहले इसे रोकने का एक अवसर होता है.

ii. एंडपॉइंट डिटेक्शन और रिस्पांस सिस्टम, एंडपॉइंट और नेटवर्क गतिविधि दोनों की लगातार निगरानी करके काम करता है, जिसे तब उन्नत एल्गोरिदम के आधार पर एक केंद्रीय डेटाबेस में विश्लेषित किया जाता है जिसमें खतरे की खुफिया जानकारी शामिल होती है.

6. संगठन के कर्मचारियों के बीच जागरूकता फैलाना

सभी संगठनों को अपने कर्मचारियों को रैनसमवेयर हमलों से बचने के लिये साइबर सुरक्षा के लिए निम्नलिखित सावधानियां बरतने के लिए शिक्षित करना चाहिये :

i. असुरक्षित लिंक पर कभी भी क्लिक न करें:
ii. व्यक्तिगत जानकारी का खुलासा करने से बचें:
iii. संदिग्ध ईमेल अटैचमेंट न खोलें:
iv. कभी भी अनजान यूएसबी स्टिक का इस्तेमाल न करें :
v. अपने प्रोग्राम और ऑपरेटिंग सिस्टम को अपडेट रखें :
vi. केवल ज्ञात डाउनलोड स्रोतों का उपयोग करें:

मिलिन्द अलकरी
सिसो, पवई

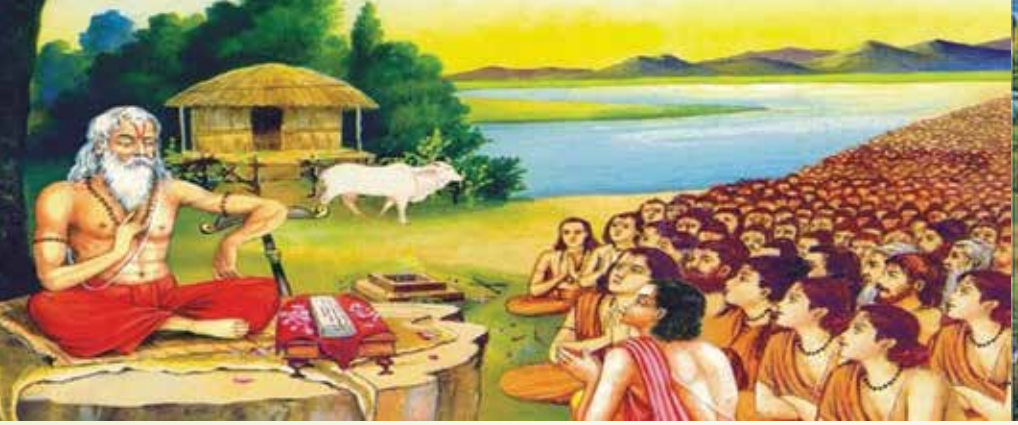

Ancient Vedic Education System of India

विद्या नाम नरस्य कीर्तिरतुला भाग्यक्षये चाश्रयो
धेनु: कामदुधा रतिश्च विरहे नेत्रं तृतीयं च सा ।
सत्कारायतनं कुलस्य महिमा रत्नैर्विना भूषणम्
तस्मादन्यमुपेक्ष्य सर्वविषयं विद्याधिकारं कुरु

Knowledge is the unrivalled fame of man, it gives shelter when destiny is destroyed. Knowledge is Kamdhenu, it is coition in separation. Knowledge is the third vision, the temple of love, the glory of the clan. It is the jewel without gems. Thus rejecting all other matters one must become learned.

What is Vedic Education? : The Vedas, meaning knowledge, are the oldest known Sanskrit scriptures. The Vedas were customarily taught at gurukuls (ancient educational centres). Gurukuls were residential schooling centres widespread in ancient India. The guru (teacher) and shishya (disciple) lived in the same place or any nearby place and both Guru & Shishya are closely bonded to each other and the disciples had high respect to their Teachers. This relationship was sacred and no fee was applicable to the students for their education at gurukul. Students normally start their education at gurukul from the age of 8 till early 20. At the time of completion of their education, every student offer a gurudakshina, a token of love & affection in reverence to the teacher. It was usually money, kind or any task that the guru asked to perform. The gurukul normally run by public donations and offerings.

Before the British Governance in India, gurukuls were the preferred form of education in India. Britishers knows gurukulas and the vedic education system was the pillar of the country and strong belief system among Hindus. Hence, the English rulers thought unless & until the vedic education system is vandalised, it is very hard for them to occupy and rule in India. During the British Governance, the British brought their western education system & systematically implemented to demolish the Vedic education system to destabilise the very soul of Indian heritage. However, belatedly this ancient form of education is again gain interest among Indians.

Simple living, a strict schedule and respect to each other are principles emphasized at gurukul. Equality, independence & Spirituality is impressed upon the students through prayer, yoga and meditation. In today's competitive world, this can help children reduce stress and anxiety. Vedic education is more than just an education system, it is a way of living and this focus on all-round personality development which is an attractive aspect of Vedic education.

Aims of Vedic Education : Vedic Education is not the religious education. Vedic Education in India was still the preferred education system while Mughal dynasty was in declining phase and the Britishers were yet to arrive in India. The system existed and flourished even under their rule over 3 centuries. It opines to the religious neutrality of the system.

- **Personality Development:** In Vedic education, one's personality was developed through self realization and self respect. The end goal was to build self awareness i.e, knowing oneself intimately. Good judgement had to be developed through practice. Daily tasks focused on physical, mental, and emotional development. Students built their personalities in a multi dimensional manner.
- **Character Formation:** Ancient Indians did not believe that intellect alone was important. Morality was equally necessary. Learning divided from morality was considered useless. Vedic education helped form character by encouraging a simple life. Students were Brahmachari (celibate) as long as they were learning. Their lives ran according to a strict schedule. Pleasures, comforts and luxuries were seen as unnecessary. Plain food, good behaviour and high ideals were encouraged. The gurus did not only teach the students but watched over their moral behaviour as well.
- **Performance of Civic and Social Duties:** The students' responsibility to society was made clear. In the gurukul, they all lived as equals, and participated in all jobs. Their daily tasks involved cleaning and keeping their residence in liveable conditions. Their duty to the world outside their walls was also of great importance. They were made aware of the importance of being good spouses and parents. Their wealth was not to be used for their own wants, but for the good of society. They were also taught to honor the codes of whatever professions they may choose.
- **Practical Education:** Vedic education was not based solely on learning out of books. Hands on training in professions that interested the students was encouraged. They were taught the dignity of manual labour and the value of having a vocational training. Vocations included weaving, pottery and a number of other arts and professions.
- **Preservation and Spread of Culture:** A large part of the vedas are dedicated to traditions, cultures and rituals. Preservation

of the literary and cultural traditions was necessary. Education was seen as the means to pass tradition to the next generation. Hence, the students were taught that they owed three debts to the gods, to the past gurus, and to their ancestors. The students learned to serve the revered gods, which paid the first debt. The second was paid by learning the teachings of past intellectuals. The third debt to the ancestors was paid by raising children and educating them. Thus, all the traditions were preserved and passed on.

- **Achieving Enlightenment:** While education was used to make students productive members of society, it had a spiritual element to it. Prayers and rituals were performed both daily and at important milestones such as birth, marriage, and death. This was done to teach each student the importance of the non-physical world. The aim was to lay an equal emphasis on body and soul.

Learning Process, Eligibility and Admission: Students were eligible once they underwent the upanayana or sacred thread ceremony. The child underwent this ceremony between the ages of 8 to 12. Studies usually went on for 12 years.

Curriculum:

- The Vedas - There are four Vedas. The revered Rigveda, the Yajurveda, the Samaveda and the Atharvaveda. These are classified as Samhitas, or mantras and benedictions. The Aranyakas are the text on rituals, ceremonies and sacrifices. Upanishads; These texts discuss meditation, philosophy and the spiritual world.
- Vedangas - These consist of six areas of study: Phonetics, ritualistic knowledge, grammar, exegetics (the science of interpretation), metrics and astronomy.

Methods of Teaching:

- Memorization - Learning the sacred texts by heart is an essential step in studying the Vedas. Repetition and recitation by the teacher and students was important.
- Introspection - This has three steps. The first is Sravana, which means listening to texts recited by the teacher. This is how the student absorbs the teacher's knowledge. The second is Manana, which involves deliberation and reflection. The student what has been taught and what they can learn from it. The third step is Nididhyasana, or meditation. This is the step through which truth is realized and attained.
- Critical Analysis - The students are taught to think critically and come to their own conclusions. Students may even disagree with their teachers and bring them around to their way of thinking. Debates and discussions were held often. Students could discuss topics of interest and put their views forward.

Higher Studies: While some students went to their trades or professions, many continued to learn. Institutions known as Parishads were places of higher learning. Advanced students gathered there to learn through discussion and discourse. In today's world, they would be considered equal to colleges.

Scholars would continue learning through their life by attending Sammelans (gatherings). These were discussions and competitions in which some of the most learned people in the country participated. They were often presided over by kings, who invited the scholars.

Modern Efforts for Vedic Education: People around India have taken on the effort to bring back the philosophies of Vedic education. Privately funded gurukuls have sprung up around the country. They are often run by religious trusts. They take in students on a residential basis. Spirituality and traditional values are of importance in these institutes. The accommodation and food are usually simple and basic, as they would be in Vedic times. Parents often pick these for children stressed by the burden of the modern educational system.

This gurukul combines Vedic education with modern day CBSE/ ICSE kind of subjects to ensure the children get the best of both worlds. The Vedas are recited as given in the ancient texts. The students are encouraged to engage in yoga, meditation and physical activity.

The Vedic system of education may be ancient, but it can still be relevant in today's world. Unlike modern day education, it focuses on all-round development such as physical, mental, and emotional.

India might not return to Vedic education as the only form of education, however it does represent a desirable option for some Indians. Introducing the philosophies of ancient vedic education system as part of broader curriculum in present day's education system and through extra-curricular activities are viable alternatives to venerate the revered education system of the land of Gods pursued by our ancestors.

पाठनियाधितबिद्या कार्यः सङ्गॅन्वहम् सताम्।

One should impart the knowledge acquired by him to others and one shall always keep the company of the saints.

Sidharth Sankar Das
Treasury, C.O,

उच्च कार्यपालक वेतनमान VIII में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई !

राजीव मिश्रा
मुख्य महाप्रबंधक

उच्च कार्यपालक वेतनमान VII में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई !

विपिन कुमार शुक्ला
महाप्रबंधक

विट्ठल बनशंकरी
महाप्रबंधक

ओमप्रकाश कारवा
महाप्रबंधक

गिरीश चन्द्र जोशी
महाप्रबंधक

उच्च कार्यपालक वेतनमान VI में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई !

राजकुमार एस. ए.
उप महाप्रबंधक

रजत कुमार नंदा
उप महाप्रबंधक

मोहिंदर पाल अरोरा
उप महाप्रबंधक

रुद्र प्रताप सिंह
उप महाप्रबंधक

टी. अण्णादुरै
उप महाप्रबंधक

प्रदीप कुमार अवस्थी
उप महाप्रबंधक

आलोक कुमार
उप महाप्रबंधक

हनमंता रेड्डी अरेड्डा
उप महाप्रबंधक

विजय कुमार
उप महाप्रबंधक

प्रभात कुमार
उप महाप्रबंधक

सी. एस. जननी
उप महाप्रबंधक

हम आपके नेतृत्व में बैंक के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं

सत्यनारायण पाथुरी
मुख्य महाप्रबंधक

जगमोहन सिंह
महाप्रबंधक

बी. उमाशंकर
महाप्रबंधक

के. टी. वेणुमाधव
महाप्रबंधक

डी. चन्द्र मोहन रेड्डी
महाप्रबंधक

सुचित्रा किरण नारकर
उप महाप्रबंधक

दिलीप सरूप्रिया
उप महाप्रबंधक

शेख हुसैन
उप महाप्रबंधक

आई. वी. वी. सुब्रमणीया कुमार
उप महाप्रबंधक

के. वी. वी. एन. एस. आर. मूर्ति
उप महाप्रबंधक

एस. जगन्नाथ स्वामी
उप महाप्रबंधक

अनिल कुमार सिंह चौहान
उप महाप्रबंधक

स्वरूप चन्द्र
उप महाप्रबंधक

हम आपके सुखद एवं सक्रिय सेवानिवृत्त जीवन की कामना करते हैं.

Singing sensation - Rituparna Chakraborty

Readers, Have you heard the soothing and melodious female voice in our very own version of the prayer 'Itni Shakti hame de na data' sung by our unionites ? The female part was sung by Miss Rituparna Chakraborty, who is currently posted at Santacruz branch a special assistant. Right from childhood, music has kept her going. She always encourages to push her limit and experiment with her singing. We are presenting this amazing singing talent before you through our brief question and answer round with her.

Tell us something about your singing journey

Musical genes were passed on to me by my grandfather who was a classical singer. I remember, at the tender age of 4 years old, my mother started my formal training with a teacher who graduated with Rabindra Sangeet. I was barely able to touch the Harmonium at that time. Later, learning from my 1st classical teacher, Jyoti kamal Ghosh, further strengthened my bond with music. The world of modern songs was opened up to me by my trainer Subhadeep Mukharjee who was then a voice trainer of Saregamapa Zee bangla. Over the years, the more I got involved in learning singing, the more it become a passion for me.

What kind of a singer would you classify yourself as?

I love to explore different forms of singing like Indian classical, folk song, sufi songs, Rabindra sangeet and many more.

How do you prepare yourself before any performance?

Dedicated regular practice is a key although some songs require special pre-performance preparation.

We would like to know about your accomplishment/ rewards/ recognition?

At the age of 13, I participated in a music show organised by ETv bangla called ‘Tarana’. I was the winner of ‘the Music express (tara bangla)’. Besides I have number of prizes from various prestigious institutions. Recently, in Mumbai, being a part of Guinness Book World record in group performance for India’s largest cinematic band was something which I always cherish. This July, I got the honor of participating in a group performance which is scheduled to of be telecast in ‘Kaun banega crorepati’ in August 2022. Playback singing for a movie which will be releasing in the near future is something which I am looking forward to.

Can you share your experience of being part of this Guinness Book World record ?

Guinness World Record for The largest Indian Cinematic Music Band was created by director Kabir Khan's web-series, 'The Forgotten Army – Azaadi Ke Liye' which was released on Amazon Prime With a spectacular live performance of the show's album. On the day of its premiere, songs from the series' album was performed by 1000 musicians from across the country. The title track of the Amazon Original series The Forgotten Army was composed by Pritam Chakraborty, featuring the voices of Arijit Singh and Tushar Joshi. I was fortunate enough to be the part of this music team. It was a truly enriching and proud moment for me to pay a tribute to our soldiers.

What has been the best or most memorable moment of your singing journey?

Since childhood, I have been nurturing the dream of performing in Mumbai which is fondly called as 'sapanon ka shahar'. The Bank has given me an opportunity to make my dream come true.

We would like to know more about your job as a vocal trainer and singing teacher

I believe knowledge is power and sharing knowledge only increases the knowledge we already have. It's my passion to share my knowledge with others as a vocal training and singing teacher

how do you keep yourself in tune with the new developments and technology in music?

I feel that in order to grow as a performing artist or improve your skill as an artist, one has to look for and adapt to new age technology. I do watch and observe the performance on the new age sources like youtube or social media and try to keep myself updated with new developments in music. I even use YouTube as a medium show case my singing.

What skills is and preparation needed if one wants to be a good singer?

Establishing a good foundation of singing technique is the bedrock of all singing lessons.

Learning the basic of singing is a must before you venture into the singing journey as it helps you to improve your breathing, pitch, rhythm, diction and voice.

Do you have any advice for aspiring singers?

In short, I would say keep practicing, keep learning and feel the music.

What is next for you?

Playback singing and sharing the stage with Hariharan Ji is on my bucket list.

How do you balance between being a banker and a singer?

When I am in the bank then it's all about banking and when my duty hours end then it's all about music. I must admit our bank has been a great support when it comes to giving encouragement to in-house talent.

Tell us something about your support system

Tremendous effort from my parents and gurus allowed me to understand how to connect my soul with the seven notes that creates symphonies at deepest. Support from my friends also lift me to pursue my singing.

Priyanka Angawalkar
C.O. Union Dhara

STOCK MARKET INDICES DETERMINE HEALTH OF THE ECONOMY

It seems most of the economists don't believe that the Stock Market Indices reflect and determine the growth of the economy.

It may be clarified that stock market is a place where stocks of different companies are traded. The prices of the shares traded are quoted on a daily basis. The same are mostly based on demand and supply. These days technology has made trading possible on line.

In our developing economy only 5-6% of the total population are maintaining demat accounts. Only two-thirds of them were added in the past three years; half of them opened accounts during the two years of Covid. During the pandemic the economic activity was at the lowest and savers thought it better to invest in existing or new stocks. It is also observed that one household opened more than one demat account in the names of their other members of the family to avail of more opportunities to invest in new IPOs which came up during the last couple of years.

It means only 2-3% of households in India invest in stocks. We can safely double the number of people investing in mutual funds where investors don't require to maintain demat accounts. Economists seem to rightly base their decision that 94-95% of the total population is not affected by the stock indices. Moreover the stock indices are based on the pricing of only a few stocks; The BSE SENSEX; also known as S&P Bombay Stock Exchange Sensitive Index or simply SENSEX is a free float market consisting of weighed stocks; basket of 30 well established and financially sound companies listed on the Bombay Stock Exchange. SENSEX is a blend of two words; 'Sensitive' and 'Index'.

We analyse as to how the stock markets influence and determine the health of the economy. The main goal of investors is to reap maximum profits by way of surge in prices of the stocks in the coming future and the dividends. Since every government desires the investors to invest more and more in shares and stocks, it is desired that the companies should not only continue to make profits but also show a rising trend. Government may try to control costs of inputs like power, labour, raw materials. salaries and wages of the poor labour at the cost of the profits of the companies. In India 60-65% are engaged in the pursuit of agriculture, nearly 30% are wage earners. As per 2020-21 figures 21% are engaged in manufacturing, mining and real estate and construction sectors.

The rising stock market reflects better health of the economy and the households in general and vice-versa.

In the event of a bull market or the rising stock market the overall confidence in the economy of the public in general and the investors in particular increases. With more new investors entering the market it results into greater economic development in the nation.

The rising stock prices results into more wealth with the investors. Their purchasing power increases. They tend to go more for consumer goods, white goods like refrigerators, washing machines, microwaves, air conditioners etc. They may go for more of automobiles and homes. This all results into increased sales and earnings further boosting GDP.

It is pertinent to describe the effect of stock market on the economy. Movements in the stock markets can have profound economic impact on the economy and individual consumers. A collapse in share prices has the potential to cause widespread economic disruption. Most famously the stock market crash of 1929 was a key factor in precipitating the Great Depression of the 1930s. Yet, daily movements in the stock market can also have less impact on the economy than we might imagine. The stock market is not the real economy. Share prices can change for many reasons viz. correcting an over-valuation and even large fall in share prices do not necessarily lead to lower growth. It is concluded by observing over the period of time that rapid fall in share prices, doesn't necessarily mean the economy is performing badly. It is right to say in a lighter vein; "Stock markets have predicted 10 out of the last three recessions."

The good example is of stock market crash of 1987 not resulting into any economic damage. The shares fell 25% in value but the world economy continued to grow at decent pace.

Similarly even though the stock prices fell in 2000–04, the economic growth was quite strong from 2000 to 2007. Share prices do not alone cause economic recessions. It is rightly said that in case the share prices reflect a fundamental weakness in the economy, they may be the harbinger of an economic slowdown.

It is observed that the governments also plan for the future budgets on the past recent stock price trends. Though there are many other important factors but stock prices play a major role. Similarly banks plan their business performance budgets on the basis of stock market performances during the past one two years. The rising stock prices lift the moods of all."

N P S Sohal
Retd., Chandigarh

जिंदगी

जिन्दगी
कुछ खट्टी
कुछ मीठी सी

आता है
समय ऐसा भी
जिन्दगी में
मिलती हैं जब
असफलताएं
हताश सा महसूस
करता है
इन्सान

देता है प्रेरणा वक्त
कर्मठता से
प्रसन्नता से
उत्साह से

जियो जिन्दगी

जिन्दा है जिन्दगी
तभी तक
जब तक
है जीवन
गतिमान
कर गुजरने का
हो जज्बा

शान्त,
नि:शब्द सी
जिन्दगी
प्रेरित करती है
बढ़ते चलो
आगे बढ़ो

बनो दीपक
रोशन हो राहें
आसान हो
रास्ते

पहुंचे राही
मंजिल तक

कुछ इस तरह
जियो जिन्दगी
मेरे दोस्त

रह जायें यादें
कुछ खट्टी
कुछ मीठी सी

संतोष श्रीवास्तव
सेवानिवृत्त, भोपाल

Cycling - A way to protect environment

Mumbai police organized the biggest ever cycling event from Dahisar to Mahalaxmi Race Course for promoting Cyclists & encouraging our citizens to save environment around us on occasion of world environment Day.
Mr. Praful chonkar, ex employee from mumbai had participated to support this movement. This journey ended at Mahalaxmi Race course with beautiful, melodious Police Band "सारें जंहा से अच्छा हिन्दुस्ता हमारा".
Thanks to Mumbai Police in encouraging all Cyclists for this nobal mission.

Welcome of
new Vice president
Mrs. Shivani Saxena, wife of ED, Mr. Nidhu Saxena

Farewell of Vice president UniOne Mrs. Neeraja Biswal, wife of ED Mr. Manas Ranjan Biswal

Farewell function of UniOne foundation President, Mrs. Sathyavathi Rai, w/o MD and CEO Mr. Rajkiran Rai G. held on 3rd June 2022

Rs. 7.5 lakhs donation given to the Fellowship of the Physically Handicapped Foundation on 18th May 2022

Dear Readers,

Our UniOne Foundation started the remarkable journey on 29th May 2014, where many of our friends joined, contributed to the social cause, enjoyed the get-togethers for various such events and moved on with times while passing the baton to the new incoming members. I am glad to be a part of our beautiful UniOne family-growing with years and contributing to society in its own way.

It's a fact well-known that 'Women are the backbone for a progressing nation'. They are playing the role of an efficient homemaker, a successful working woman and a proud mother and daughter at same time. Each woman needs to believe that 'she has the inner strength and enormous potential to achieve what she aims for'. Each woman can make a contribution to the development of society while believing in her powers and focussing on her hidden talents.

We are fortunate that our UniOne platform has given those wings to our "Nari Shakti" of Union bank of India family, who are actively involved in social work by conducting various activities round the year. Since the inception of UniOne in May-2014, our members are actively working here with the main objectives of benefitting the society at large, which include providing food, education, medical relief to needy ones, and making efforts for conserving our environment. As aptly said by Mahatma Gandhiji "the best way to find yourself, is to lose yourself in the service of others, is very much true for our UniOne functioning, where the multi-talented beautiful ladies are actively involved in social work and organizing various programs/events with great zeal and exploring their hidden talents. Their identity as 'Spouse of the Executives of the Bank' has expanded further as "UniOne member"- contributing to noble causes of various social work activities and enhancing their in-built talent of organizing the events successfully. To name a few, the recent visit and donations at 'Shraddhanand Mahilashram, Andheri ', and "Fellowship of the physically handicapped Society at Worli" were few of those enriching experience for the UniOne members for connecting with these people and knowing them better.

In the coming days, UniOne may focus towards protecting nature and sensitising the general public by explaining to them its dangerous effects. Hence, we may carry out tree-plantation and cleanliness drives, banning plastic use and thus contributing our best to conserve nature. After all, clean air and water, healthy forests and a rich flora and fauna are necessary for a good quality of life.

UniOne can act as a torch bearer in lightening people's lives with informative knowledge about importance of education, health awareness, well-being of needy children and women, working for the senior citizens' and conserving nature at large, thus believing firmly in the famous quote-

"Alone we can do so little; together we can do so much"

-Helen Keller

Mrs Sfurti Nitesh Ranjan
Vice President, UniOne

प्रतियोगिता क्र. 162

नयी प्रतियोगिता / New Contest

Contest No. 162

फोटो - **अक्षय आंगवलकर**
सतर्कता विभाग, के.का.मुंबई

स्लोगन लिखें / Coin a Caption

क्या यह तस्वीर आपको कल्पना की उड़ान भरने या अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित कर रही है? तो फिर इंतजार कैसा? फौरन अपने की-बोर्ड पर उंगलियाँ चलाना शुरु करें और इस तस्वीर से संबंधित बढ़िया-सा शीर्षक, एक या दो पंक्तियों में लिखकर क्षेत्र के संवाददाता को ई-मेल करें.

सभी संवाददाता अपने क्षेत्र से प्राप्त प्रविष्टियों को समेकित कर निर्धारित समय सीमा में हमारे ई मेल आईडी uniondhara@unionbankofindia.com पर प्रेषित करें.

शीर्षक अंग्रेजी या हिंदी में भेजा जा सकता है. दोनों ही श्रेणियों के लिए अलग-अलग पुरस्कार रखे गए हैं. कृपया नोट करें कि यह प्रतियोगिता सिर्फ बैंक के सेवारत कार्मिकों के लिए ही है.

यदि आपका शीर्षक हमारे स्तर पर चुना जाता है, तब आपको पुरस्कृत किया जाएगा.

जल्दी करें, प्रविष्टियाँ प्राप्त करने की **अंतिम तिथि 25 अगस्त, 2022 है**.

संपादक

Does this photograph fire your imagination or spontaneously inspire you to express your feelings? Then what are you waiting for? Start keying in and email your superb, classy caption in one or two lines relating to the photograph to the correspondent of your Region.

All correspondents are requested to consolidate the entries of their Region within stipulated time and send them to our email id uniondhara@unionbankofindia.com.

The captions can be sent in English or Hindi. Both the categories have different prizes. Please note that this contest is open only for the working staff members of the Bank.

If your caption is chosen, then you will be awarded a prize.

Hurry as, the last date to receive entries is **25th August, 2022**.

Editor

यूनियन धारा प्रतियोगिता क्रमांक 161 - 'कविता लिखें'

पुरस्कार	हिंदी खंड	अंग्रेजी खंड
प्रथम	**नीति खंडेलवाल,** होशंगाबाद शाखा, भोपाल दक्षिण	**के आलेख्या,** सुंदर नगर शाखा
द्वितीय	**कुमुद,** क्षे. का. नागपुर	**हेमलता भाटिया,** यूएलपी राजकोट
तृतीय	**मनप्रीत सिंह,** बहादुरगढ़ शाखा, क्षे. का.,बठिंडा	**रेणु बाला,** क्षे. का. बठिंडा
प्रोत्साहन	**पूनम अंजुलन,** क्षे. का. ब्रह्मपुर	**अपर्याप्त प्रविष्टि**

पुरस्कार एवं सम्मान

Union Bank of India was awarded the "Best Performing Bank" among PSUs and "Across all Category" of NPS (National Pension System) for Q3 of 2022 for mobilizing maximum number of NPS accounts.

The award was presented by Shri Supratim Bandyopadhyay, Chairman, PFRDA and received by Shri R.K. Jaglan, General Manager (Government Business & Relationship), Union Bank of India.

Union Bank of India bagged the prestigious International acclaimed Retail Banker Asia Trailblazer Awards, 2022 Winner award in the Category under Best ATM and Self-Service Innovation for Union Virtual Connect (WhatsApp Banking) amongst Asian Banks.

समाचार (केन्द्रीकृत)

Announcement of Financial results of Union Bank of India for the Quarter 1 F.Y. 2022-23 ended June 30, 2022. Seen in the photograph Ms. A. Manimekhalai, MD & CEO, Union Bank of India, flanked by Shri Nitesh Ranjan, Shri Rajnish Karnatak and Shri Nidhu Saxena, Executive Directors of the bank.

on 31.05.2022 Board farewell superannuated former MD & CEO of Union Bank of India of Shri Rajkiran Rai G.

Union Bank of India on April 6th, 2022 in a Digital Conclave at Yashwantrao Chavan Centre, Mumbai unveiled 'Union SAMBHAV - World of Opportunities', and Super App named Union nxt - Do it yourself. Unveiled by MD & CEO Shri Rajkiran Rai G.

On 17-18.05.22 CISO Office organized a 2 Days Hands-On-Workshop on Cyber Security at the Auditorium of STC Powai graced and addressed by Shri Rajneesh Karnatak, ED.

On 01.06.22 Union Bank of India signed a Memorandum of Understanding (MoU) with Small Industries Development Bank of India (SIDBI) for a Co-Financing arrangement for MSMEs. The MoU was signed by Shri Lal Singh, Chief General Manager, Union Bank of India and Shri Vivek Kumar Malhotra, Chief General Manager, SIDBI.

संसदीय समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा क्षे.का. दिल्ली (उत्तर) का राजभाषा निरीक्षण

दि. 30.06.2022 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली (उत्तर) का राजभाषा निरीक्षण किया गया, जिसमें श्री रजनीश कर्नाटक, कार्यपालक निदेशक; श्री लाल सिंह, मुख्य महाप्रबंधक(मा.सं.); श्रीमती बीना वाहिद, क्षेत्र महाप्रबंधक, दिल्ली; श्री अभिषेक जैन, क्षेत्र प्रमुख, क्षे. का., दिल्ली (उत्तर); श्री अम्बरीष कुमार सिंह, उप महाप्रबंधक (मा.सं.) एवं डॉ. सुलभा कोरे, सहायक महाप्रबंधक(राभा), कें.का. मुंबई, बैंक की ओर से उपस्थित रहे.

दि. 06.06.22 को प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, सुश्री ए. मणिमेखलै द्वारा दिल्ली क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय का दौरा किया गया और अंचल के सभी क्षेत्रीय कार्यालयों की समीक्षा की गई.

दि. 02.05.22 को अंचल कार्यालय, राँची में श्री उमेश कुमार सिंह, मुख्य सतर्कता अधिकारी की उपस्थिति में कार्यपालकों एवं शाखा प्रबन्धकों हेतु निवारक सतर्कता एवं सतर्कता जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया जिसमें अंचल प्रमुख, राँची श्री ज्ञान रंजन सारंगी, उप अंचल प्रमुख, श्री विकास कुमार सिन्हा, क्षेत्र प्रमुख राँची, श्री आनंद कुमार, के साथ राँची अंचल के स्टाफ सदस्य भी व्यक्तिगत/ ऑनलाइन रूप से उपस्थित रहे.

दि. 07.05.22 को पटना क्षेत्र अंतर्गत शाखा प्रबंधकों की समीक्षा बैठक का आयोजन कार्यपालक निदेशक, श्री नितेश रंजन की उपस्थिति में किया गया जिसमें क्षेत्र महाप्रबंधक रांची, श्री ज्ञान रंजन सारंगी, क्षेत्र प्रमुख, पटना श्री अजय बंसल, उप क्षेत्र प्रमुख, पटना श्री सावन शिव तथा शाखा प्रबंधक गण उपस्थित रहे.

दि. 30.04.22 को क्षे.का. धनबाद के भवन का उद्घाटन श्री ज्ञान रंजन सारंगी, महाप्रबंधक, श्री कुमार राहुल, क्षेत्र प्रमुख तथा श्री संजीव कुमार सिंह, उप क्षेत्र प्रमुख की उपस्थिति में श्री बिनोद कुमार पट्टनायक- क्षेत्र महाप्रबंधक, रांची द्वारा किया गया.

दि. 28.04.22 को माननीय मुख्यमंत्री उत्तराखंड, श्री पुष्कर सिंह धामी ने टनकपुर में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की साझेदारी के साथ पैड मिशन के तहत सैनेटरी पैड के मुफ्त वितरण कार्यक्रम का उद्घाटन किया. इस अवसर पर मुख्यमंत्री के साथ क्षेत्र प्रमुख, हल्द्वानी, श्री लोक नाथ साहू उपस्थित रहे.

दि. 24.06.22 को वाराणसी के होटल जेड इन में क्षे.म.प्र.का., वाराणसी ने 'ग्राहक संवाद' कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें क्षेत्र महाप्रबंधक श्री गिरीश जोशी एवं अन्य कार्यपालकों द्वारा संभावित एवं वर्तमान ग्राहकों को आमंत्रित कर कारोबार संबंधी विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की.

दि. 28.04.22 को श्री विजय कपूर (चेयरमैन, केआईडीसी, कानपुर) के कर-कमलों द्वारा दादा नगर शाखा का उद्घाटन किया गया. इस अवसर पर श्री बसंत लाल गोयंका (संस्थापक, चेयरमैन, गोल्डी मसाले), श्री सोम प्रकाश जी गोयंका, (संस्थापक, चेयरमैन, गोल्डी मसाले), श्री संजीव कुमार (क्षेत्र प्रमुख, क्षेका कानपुर) एवं श्री पीयूष पाण्डेय (उप क्षेत्र प्रमुख, क्षेका कानपुर) सहित कानपुर क्षेत्र के स्टाफ सदस्य भी उपस्थित रहे.

दि. 08.06.22 को क्षे.का. मऊ में क्रेडिट आउटरीच कार्यक्रम एवं वित्तीय साक्षरता कैंप में मुख्य अतिथि, जिला पंचायत अध्यक्ष, श्री मनोज कुमार राय के साथ जिला कृषि अधिकारी, श्री उमेश कुमार; उप निदेशक (मत्स्य), श्रीमती रिचा चौधरी, क्षेत्र प्रमुख श्री मिथिलेश कुमार, अग्रणी जिला प्रबन्धक श्री मनोज कुमार एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण सहित विभिन्न बैंकों के अधिकारीगण व बैंक मित्र, चैनल पार्टनर्स एवं जनपद के सम्मानित ग्राहक गण मौजूद रहे. इसमें विभिन्न बैंकों द्वारा स्वीकृत ऋण लाभार्थियों को ऋण मंजूरी पत्र तथा जनपद के 17 बैंक मित्रों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये.

दि. 05.06.22 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर स्थानीय हिंदी समाचार पत्र ने वाराणसी में पौधा वितरण एवं पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें उप अंचल प्रमुख, वाराणसी, श्री के.पी.सिंह ने भाग लेकर वहां उपस्थित लोगों को इस दिशा में यूनियन बैंक के प्रयासों से अवगत कराया.

दि. 18.06.22 को झाँसी शाखा द्वारा कानपुर में क्रेडिट कैंप का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग ₹ 5.00 करोड़ के कुल 35 ऋण स्वीकृति पत्र प्रदान किए गए. इस अवसर पर श्री संजीव कुमार, क्षेत्र प्रमुख, कानपुर, श्री के. डी. गुप्ता, सरल प्रमुख, कानपुर सहित झाँसी स्थित सभी शाखाओं के शाखा प्रमुख भी उपस्थित रहे.

दि. 13.05.22 को मऊ जिले के अंतर्गत बड़ौदा यूपी बैंक द्वारा आयोजित अंतर-बैंक क्रिकेट टूर्नामेंट में खेले गए फाइनल मैच में यूनियन बैंक की टीम ने एलआईसी की टीम को हराकर खिताब पर कब्जा किया. विजेता टीम को मुख्य विकास अधिकारी, मऊ श्रीराम वर्मा द्वारा कप प्रदान किया गया, जिसे क्षेत्र प्रमुख, श्री मिथिलेश कुमार, टीम के कप्तान श्री किशोर कुमार एवं टीम के अन्य सदस्यों ने प्राप्त किया.

दि. 21.06.22 को मऊ क्षेत्र द्वारा यूनियन ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान, मऊ में 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में क्षेत्र प्रमुख श्री मिथिलेश कुमार एवं अन्य कार्मिक उपस्थित रहे.

दि. 16.06.22 को वाराणसी अंचल प्रमुख, श्री गिरीश जोशी प्रमुख द्वारा क्षे. का., प्रयागराज का दौरा किया गया, जिसमें उन्होंने क्षेत्र प्रमुख, प्रयागराज श्री संतोष कुमार के साथ सभी विभागों की समीक्षा की एवं स्टाफ सदस्यों को संबोधित भी किया.

दि. 14.06.22 को 'विश्व रक्तदाता दिवस' के अवसर पर यूनियन बैंक के सोशल फाउंडेशन द्वारा कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के अंतर्गत झारखंड सरकार को एडवांस लाइफ सपोर्ट किट युक्त एंबुलेंस प्रदान की गयी. श्री बन्ना गुप्ता, स्वास्थ्य मंत्री, झारखंड सरकार, को बैंक की ओर से श्री आनंद कुमार, क्षेत्र प्रमुख राँची एवं श्री मुकेश कुमार सिंह, उप क्षेत्र प्रमुख द्वारा उक्त एंबुलेंस प्रदान की गई.

दि. 23.05.2022 को क्षे.म.प्र.का. राँची द्वारा राँची के अरगोड़ा चौक स्थित महावीर मंदिर परिसर में आम जनता के सेवार्थ वाटर कूलर का लोकार्पण डिजिटाइजेशन विभाग के महाप्रबंधक, श्री संजय नारायण तथा अंचल प्रमुख राँची, श्री ज्ञान रंजन सारंगी द्वारा किया गया.

दि. 16.06.22 को 'प्लेसिड होटल' में क्षे. का. प्रयागराज के सभी शाखा प्रमुखों की कारोबार समीक्षा एवं सम्मान समारोह का आयोजन अंचल प्रमुख, श्री गिरीश जोशी के उपस्थिति में किया गया. इस अवसर पर क्षेत्र प्रमुख, श्री संतोष कुमार के साथ सभी शाखा प्रमुख उपस्थित रहे.

दि. 21.06.22 को क्षे.का. रायपुर द्वारा योग दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र प्रमुख, श्रीमती कविता श्रीवास्तव एवं अन्य स्टाफ सदस्यों में भाग लिया.

दि. 08.06.22 को क्षे.का. राँची के ग्रामीण एवं कारोबार विकास विभाग द्वारा सहायक महाप्रबंधक, श्री मुकेश कुमार के नेतृत्व में झारखंड राय यूनिवर्सिटी, कमड़े में 8-12 जून, 2022 तक आजादी का अमृत महोत्सव आइकॉनिक कैम्पेन के दौरान 'कस्टमर आउटरीच' कार्यक्रम का आयोजन किया गया.

दि. 21.06.22 को क्षे.म.प्र.का. राँची द्वारा राँची के अशोक नगर क्लब में योग शिविर का आयोजन किया गया, जिसका उदघाटन अंचल प्रमुख, राँची श्री ज्ञान रंजन सारंगी एवं क्षेत्र प्रमुख, राँची श्री आनंद कुमार द्वारा किया गया.

दि. 20.06.22 को क्षेत्र प्रमुख, श्री आनंद कुमार द्वारा क्षे.का. राँची की बरियातु शाखा का गोल्ड लोन विशेष शाखा के रूप में उद्घाटन किया गया, जिसमें उप क्षेत्र प्रमुख श्री मुकेश कुमार और स्टाफ सदस्य मौजूद रहे.

दि. 21.06.22 को भोपाल अंचल एवं क्षे.का. भोपाल (सेंट्रल) द्वारा संयुक्त रूप से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया जिसमें अंचल प्रमुख, श्री रूपलाल मीना, उप अंचल प्रमुख, डॉ. अजित मराठे, श्री विनोद गुप्ता, उप महाप्रबन्धक, श्री डी. के. चौबे, क्षेत्र प्रमुख, भोपाल (दक्षिण) तथा अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित हुए.

दि. 08.06.22 को कटिहार में आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र प्रमुख, भागलपुर श्री पी. आर. सिंह एवं शाखा प्रमुख, कटिहार श्री विकाश कुमार चौधरी एवं ग्राहक गण उपस्थित रहे.

दि. 05.06.22 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आरसेटी गाजीपुर में आरसेटी निदेशक, श्री बिनोद प्रसाद द्वारा आरसेटी स्टाफ सदस्यों की उपस्थिति में वृक्षारोपण किया गया.

दि. 21.06.22 को एसटीसी गुरुग्राम में अंचल कार्यालय दिल्ली एवं सभी अंचलाधीन क्षे. का. द्वारा संयुक्त रूप से योग दिवस का आयोजन किया गया. जिसमें सुश्री बीना वाहिद, क्षेत्र महाप्रबंधक दिल्ली; श्री अखिलेश्वर चौधरी, उप अंचल प्रमुख और श्री गोविंद मिश्रा, क्षेत्र प्रमुख दिल्ली-मध्य एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित हुए.

on 23.06.22 MP NAGAR Branch has celebrated its new premise inauguration ceremony. Ribbon cutting & cake cutting event has been done by Shri Sanjeev Agarwal, Chairman of Sage Group along with FGM Shri R. L. Meena. Shri L.C. Jharwaal, RH Bhopal-Central, shri Vinod kumar Gupta, DGM, ZAO, Bhopal & other staff members.

दि. 21.06.22 को आरसेटी गाजीपुर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर क्षेत्र प्रमुख गाजीपुर, श्री धर्मेंद्र राजोरिया एवं उप क्षेत्र प्रमुख, श्री सुनील कुमार की उपस्थिति में गाजीपुर क्षेत्र स्टाफ सदस्यों द्वारा योग दिवस मनाया गया.

दि. 02.06.22 को अं. का. वाराणसी के क्षेत्र महाप्रबंधक, श्री गिरीश चन्द्र जोशी द्वारा क्षे. का. गाजीपुर का दौरा किया गया, जिसमें उन्होंने स्टाफ सदस्यों को संबोधित किया.

दि. 06.05.2022 को क्षे.का. गाजीपुर के भदौरा शाखा के नवीकरण के उपरांत क्षेत्र प्रमुख, गाजीपुर, श्री कमलेश प्रसाद सिंह द्वारा इसका उद्घाटन किया गया.

दि. 22.06.22 को क्षे. का. हल्द्वानी की हल्द्वानी मुख्य शाखा के नवीन परिसर का उद्घाटन, क्षेत्र महाप्रबंधक, लखनऊ श्री सुमित श्रीवास्तव द्वारा किया गया. आयोजन में क्षेत्र प्रमुख, श्री गौरव कुमार, उप क्षेत्र प्रमुख, श्री कमलेश बर्गली के साथ शाखा प्रबंधक, श्री अनिल आर्या (मुख्य प्रबंधक) उपस्थित रहे.

दि. 21.06.2022 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर क्षे. का. हल्द्वानी द्वारा योग कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें कार्यालय के क्षेत्र प्रमुख, श्री गौरव कुमार, उप क्षेत्र प्रमुख, श्री कमलेश बर्गली सहित स्टाफ एवं आम लोगों ने योगासन किया.

दि. 29.06.22 को आईआईएम काशीपुर में विपणन अधिकारियों सहित शाखा प्रबंधक काशीपुर, क्षे.का. हलद्वानी द्वारा विशेष शिक्षा ऋण मेले का आयोजन किया गया.

समाचार (पूर्व)

दि. 16.04.22 को गोवा में आयोजित बिज़नेस प्लान मीटिंग में क्षेत्रीय कार्यालय ग्रेटर कोलकाता को वि.व. 2021-22 हेतु मेट्रो कैटेगरी के अंतर्गत स्टार प्रफॉर्मर के रूप में सभी कार्यपालक निदेशक व मुख्य सतर्कता अधिकारी की उपस्थिति में एमडी व सीईओ श्री राजकिरण रै जी. द्वारा पुरस्कृत किया गया. ट्रॉफी प्राप्त करते हुए क्षेत्र प्रमुख ग्रेटर कोलकाता, श्री अमित कुमार सिन्हा.

दि. 21.06.22 को क्षे.का. गुवाहाटी में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर कार्यालय तथा स्थानीय शाखा के स्टाफ सदस्यों हेतु योग सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र प्रमुख सहित स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया.

दि. 29.06.22 को क्षे.का. गुवाहाटी द्वारा असम के बाढ़ प्रभावित बरपेटा जिला के क्षेत्रों में 800 परिवारों को राहत सामग्री का वितरण किया गया.

दि. 07.05.22 को कोलकाता मेट्रो (क्षेत्र) में कारोबार आयोजना बैठक का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि क्षेत्र महाप्रबन्धक, कोलकाता श्री जी. के. सुधाकर राव और उनके साथ क्षेत्र प्रमुख कोलकाता (मेट्रो), श्री बरुण कुमार, उप क्षेत्र प्रमुख, श्री प्रेमनाथ राय एवं शाखा प्रमुख गण उपस्थित रहे.

दि. 25.05.22 को ओड़ीशा सचिवालय में आयोजित कार्यक्रम में लघु उद्यमियों के लिए चैंपियन बैंक श्रेणी में यूनियन बैंक आफ इंडिया की तलचर शाखा को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया और मा. मुख्यमंत्री ओड़ीशा, श्री नवीन पटनायक ने शाखा प्रबन्धक, श्री प्रशांत कुमार (तलचर) को क्षेत्र महाप्रबन्धक, भुवनेश्वर श्री रमाकान्त प्रधान की उपस्थिति में रू. 2 लाख का चेक प्रदान किया.

On 25.05.22 Union Bank bags the Prestigious Chief Minsiters award (Under MSME category) at the State Secretariat from the Hon. C.M. Odisha Mr Naveen Patnaik. FGM Bhubaneswar Mr Ramakananta Pradhan along with Branch Head Rayagada received the prize money of Rs 5.00 Lacs.

दि. 21.03.22 को सत्याबाड़ी साक्षीगोपाल शाखा में एसएचजी कैम्पेन का आयोजन किया गया. जिसमें क्षेत्र प्रमुख भुवनेश्वर श्री सोवन सेनगुप्ता द्वारा महिलाओं को एसएचजी वित्त पोषण किया गया.

दि. 03.06.22 को संबलपुर में श्री रमाकांत प्रधान, क्षेत्र महाप्रबंधक, भुवनेश्वर की अध्यक्षता में कारोबार आयोजना बैठक आयोजित की गई जिसमें क्षे. का. संबलपुर से क्षेत्र प्रमुख, श्री पंकज कुमार कपसिमे, उप क्षेत्र प्रमुख, श्री हरेन्द्र कुमार जेना एवं अन्य कार्यपालकगण के साथ क्षेत्र की सभी शाखाओं के शाखा प्रबन्धक उपस्थित थे.

दि 21.06.22 को वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार क्षे.का. कटक द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन ओड़ीशा के बाराबती दुर्ग के इंडोर स्टेडियम में किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि माननीय विधायक कटक बाराबती मोहम्मद मुकिन थे. इस कार्यक्रम में श्री सुबाश सिंह, मेयर, कटक क्षेत्र; सुश्री मधुस्मिता महापात्रा (सहायक कलेक्टर); श्री रमाकांत प्रधान, क्षेत्र महाप्रबन्धक, भुवनेश्वर; श्री तुषार कान्त कर (क्षेत्र प्रमुख, कटक) श्री सुशील कुमार पाणिग्रही उप महाप्रबन्धक, अंचलीय लेखा परीक्षा कार्यालय, भुवनेश्वर, श्री सोवेन सेन गुप्ता, क्षेत्र प्रमुख भुवनेश्वर तथा लगभग 200 लोगों ने सहभागिता की.

On 20.06.22 FGM Bhubaneswar Mr Ramakanta Pradhan along with RH Bhubaneswar Mr Sovan Sengupta disbursed Naari Shakti Loan to eligible customers.

दि. 11.05.22 को क्षे.का. भुवनेश्वर में क्षेत्र महाप्रबंधक, भुवनेश्वर श्री रमाकांत प्रधान एवं क्षेत्र प्रमुख, भुवनेश्वर, श्री सोवन सेनगुप्ता द्वारा वृक्षारोपण किया गया. इस अवसर पर कई स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

दि. 21.05.22 को खड़गपुर शहर स्थित यूनियन बैंक की शाखाओं द्वारा संयुक्त ऋण शिविर - एमएसएमई ग्राहक लोकसंपर्क अभियान का आयोजन किया गया, जिसमें क्षे.का. हावड़ा से सरल प्रमुख श्री सरोज कुमार सिंह एवं स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया.

दि. 21.06.22 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर क्षे.म.प्र. का. कोलकाता के संयोजन से कोलकाता एवं हावड़ा क्षेत्र के स्टाफ सदस्यों हेतु आइस स्केटिंग रिंक -बालीगंज में सामूहिक योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें हावड़ा क्षेत्र की ओर श्री समीर कुमार, क्षेत्र प्रमुख के नेतृत्व में बड़ी संख्या में क्षेत्रीय कार्यालय एवं क्षेत्राधीन शाखाओं से स्टाफ-सदस्यों ने सहभागिता की.

दि. 21.06.22 को क्षे.का. बालेश्वर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र प्रमुख बालेश्वर, श्री निरंजन बारीक, उप क्षेत्र प्रमुख, श्री अशोक कुमार मिश्रा एवं अन्य स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया.

दि. 08.06.22 को आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय द्वारा 6-12 जून तक आईकोनिक वीक सेलिब्रेशन के अवसर पर धूपगुड़ी शाखा क्षे.का. सिलीगुड़ी द्वारा एमएसएमई आउटरीच के अंतर्गत ऋण स्वीकृति एवं वितरण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें श्री असीम कुमार पाल, क्षेत्र प्रमुख सिलीगुड़ी; श्री निरंजन कुमार उप क्षेत्र प्रमुख, सिलीगुड़ी; धूपगुड़ी शाखा प्रमुख श्री देबब्रत सेनगुप्ता एवं लगभग 250 ग्राहक उपस्थित थे.

दि. 21.06.22 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर क्षे.का. संबलपुर में योग शिविर का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय तथा स्थानीय शाखाओं के स्टाफ सदस्यों के साथ क्षेत्र प्रमुख संबलपुर, श्री पंकज कुमार कपसिमे, उप क्षेत्र प्रमुख, श्री हरेन्द्र कुमार जेना एवं अन्य कार्यपालकगण भी शामिल हुए.

दि. 28.04.22 को क्षे का. ग्रेटर कोलकाता के अंतर्गत सभी शाखाओं हेतु समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया जिसमें लेक टाउन शाखा को वित्तीय वर्ष 2021-22 हेतु सर्वश्रेष्ठ शाखा का पुरस्कार दिया गया. महाप्रबंधक, श्री अमरेन्द्र कुमार झा के कर-कमलों से पुरस्कार प्राप्त करते हुए शाखा प्रमुख एन सी साहू.

दि. 09.05.22 को यूनियन समृद्धि केंद्र, बालेश्वर का उद्घाटन करते हुए श्री रमाकांत प्रधान, क्षेत्र महाप्रबंधक, भुवनेश्वर. साथ में श्री निरंजन बारीक, क्षेत्र प्रमुख, बालेश्वर तथा श्री अशोक कुमार मिश्रा, उप क्षेत्र प्रमुख, बालेश्वर एवं श्री संतोष कुमार साहू, प्रमुख, यूनियन समृद्धि केंद्र, बालेश्वर.

दि. 21.06.22 को क्षे.का. ब्रह्मपुर में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र प्रमुख ब्रह्मपुर, श्री सत्यबान बेहेरा एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

दि. 27.04.22 को क्षे.का. ग्रेटर कोलकाता द्वारा NKDA (न्यू टाउन कोलकाता डेवलपमेंट अथॉरिटी) को 5 वॉटर एटीएम प्रदान किये गये जिसका उद्घाटन क्षेत्र महाप्रबंधक कोलकाता श्री अमरेन्द्र कुमार, हिड्को के एमडी व सीईओ, श्री देबाशीष सेन और क्षेत्र प्रमुख, ग्रेटर कोलकाता, अमित कुमार सिन्हा द्वारा किया गया.

समाचार (पश्चिम)

आजादी का अमृत महोत्सव-आईकोनिक वीक (6-12 जून, 2022) के अंतर्गत दि. 08.06.2022 को लीड बैंकों द्वारा ऋण आउटरीच अभियान का आयोजन किया गया. जिसमें अग्रणी जिला बैंक के ईडी श्री आशीष पाण्डेय, श्री राजीब एल. पट्टनायक, क्षेत्र महाप्रबंधक, पुणे, उप अंचल प्रमुख, श्री एस. सुब्रमणियन, क्षेत्र प्रमुख, श्री नवनीत दत्ता एवं अन्य कार्यपालक गण तथा स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

दि. 21.06.22 को 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' के अवसर पर क्षे.का. अमरावती ने गांधी नगर महानगर पालिका गार्डन, अमरावती में योग दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें उप क्षेत्र प्रमुख, श्री प्रमोद ठाकुर एवं क्षेत्रीय कार्यालय के स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

दि. 02.06.22 को क्षेत्र महाप्रबंधक, अहमदाबाद, श्री विट्ठल बनशंकरी की अध्यक्षता में आणंद क्षेत्र में कारोबार समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र प्रमुख, श्री नीरज सिंह और उप क्षेत्र प्रमुख, श्री संजीव कुमार सिंह एवं शाखा प्रमुख तथा स्टाफ सदस्य मौजूद रहे.

दि. 06.06.22 को ब्लाइंड पीपल एसोसिएशन द्वारा यूनियन बैंक द्वारा लगाए गए पहले टाकिंग एटीएम के परिचालन को 10 वर्ष पूरे होने के अवसर को मनाया गया, जिसमें क्षे.म.प्र.का. अहमदाबाद, से श्री प्रदीप कुमार अवस्थी, उप अंचल प्रमुख, श्री हरिन्दर सिंह संधु क्षेत्र प्रमुख, अहमदाबाद तथा अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

दि. 03.06.22 को श्री नितेश रंजन, कार्यपालक निदेशक द्वारा रूपा रेजीनेंस, सानपाड़ा, नवी मुंबई में स्थित डीजी कनेक्ट प्रो आउटलेट का दौरा किया गया, जिसमें श्री राघवेंद्र जी, महाप्रबंधक डिजिटाजेशन; श्री कबीर भट्टाचार्य, क्षेत्र महाप्रबन्धक मुंबई; श्री अशोक कुमार दास, क्षेत्र प्रमुख वाशी एवं शाखा प्रमुख उपस्थित रहे.

आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत दिनांक 08.06.2022 को अग्रणी जिला बैंक (बैंक ऑफ महाराष्ट्र) ठाणे द्वारा जिलाधिकारी कार्यालय, ठाणे में ऋण संवितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें अग्रणी जिला बैंक के ईडी, श्री ए बी विजय कुमार, डीपीओ श्री सुनील यादव, क्षेत्र प्रमुख, श्रीमती रेणु नायर व विभिन्न बैंकों के अंचल/क्षेत्र प्रमुख शामिल थे.

दि. 01.06.22 को क्षे.का. अमरावती द्वारा होटल ग्रेस इन में कारोबार एवं समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य अतिथि, क्षेत्र महाप्रबंधक, पुणे श्री राजीब एल. पट्टनायक थे और बैठक में क्षेत्र प्रमुख, अमरावती श्री अनूप तराले, उप क्षेत्र प्रमुख, श्री प्रमोद ठाकुर, क्षेत्र के सभी शाखा प्रमुख एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

दि. 21.06.22 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर क्षे.म.प्र.का., पुणे एवं गेनबा सोपानराव मोझे कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, बालेवाडी द्वारा संयुक्त रूप से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र महाप्रबंधक पुणे, श्री राजीब एल. पट्टनायक, क्षेत्र प्रमुख, पुणे (पूर्व) श्री नवनीत दत्ता एवं क्षेत्र प्रमुख पुणे (पश्चिम), श्रीमती शारदा ए. मूर्ती, कॉलेज के प्रधानाचार्य, श्री रतन राज कुमार एवं अन्य कार्यपालक तथा कॉलेज के छात्र उपस्थित रहे.

दि. 21.06.22 को क्षे.म.प्र.का. मुंबई में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया जिसमें श्री मनोज कुमार, क्षेत्र महाप्रबंधक, मुंबई; श्री गोविंद कुमार झा, क्षेत्र प्रमुख, क्षे. का. मुंबई (दक्षिण) के साथ क्षे. म.प्र.का. मुंबई व क्षे.का. मुंबई (दक्षिण) के स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

दि. 25.05.22 को क्षेत्र महाप्रबन्धक मुंबई, श्री कबीर भट्टाचार्य द्वारा क्षे.का. मुंबई वाशी का दौरा किया गया, जिसमें सभी लक्ष्य प्राप्त करने वाले शाखा / कार्यालय प्रमुखों को सम्मानित किया गया.

दि. 16.06.22 को अर्श हुंडई, नमिनाथ मोटर्स प्रा. लि. चेंबूर, मुंबई में श्री गोविंद कुमार झा, क्षेत्र प्रमुख, क्षे. का. मुंबई (दक्षिण) के करकमलों से नई हुंडई वेन्यू कार को लॉन्च किया गया.

दि. 29.06.22 को आईआईएम नागपुर में आयोजित ऋण मेले में आईआईएम के विद्यार्थियों को कम ब्याज दर पर ऋण वितरित किए गए. इस मेले में शाखा प्रबंधक, ग्राहक अर्जन समूह विभाग के श्री प्रवीण खरे एवं क्षे.का. नागपुर से अधिकारी गण सम्मिलित हुए.

समाचार (दक्षिण)

दि. 03.06.2022 को सुश्री ए. मणिमेखलै ने क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, बेंगलूरु में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के एमडी एवं सीईओ के रूप में पदभार ग्रहण किया.

दि. 16.06.22 को सुश्री ए. मणिमेखलै, एमडी एवं सीईओ द्वारा क्षे.म.प्र.का. बेंगलूरु, चेन्नई व मंगलूरु की समीक्षा की गई, जिसमें इन अंचलो के अंचल प्रमुखों एवं अंचलाधीन क्षे.का. के क्षेत्र प्रमुखों के साथ केंद्रीय कार्यालय से श्री योगेंद्र सिंह, मुख्य महाप्रबंधक; श्री चन्द्र मोहन मिनोचा, मुख्य महाप्रबंधक एवं श्री अशोक चन्द्र, मुख्य महाप्रबंधक उपस्थित रहे.

दि. 18.06.22 को सुश्री ए. मणिमेखलै, एम डी एवं सीईओ द्वारा कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व के अंतर्गत मंटप ग्राम पंचायत, बनेरघट्टा रोड, बेंगलूरु के निवासियों को पानी टैंकर प्रदान किया गया. इस अवसर पर उनके साथ क्षेत्र महाप्रबंधक, बेंगलूरु श्री आलोक कुमार एवं प्राचार्य, स्टाफ महाविद्यालय श्री हृषीकेश मिश्र.

दि. 28.04.2022 को प्रबंध निदेशक एवं सीईओ श्री राजकिरण रै जी. ने स्टा. प्र. कें., हैदराबाद का दौरा किया. मुख्य महाप्रबंधक, श्री ए. के. विनोद व क्षेत्र महाप्रबन्धक, श्री कबीर भट्टाचार्य की उपस्थिति में पुष्प गुच्छ से स्वागत करते हुए श्री उदय कुमार खजाने, केंद्र प्रभारी.

दि. 15.05.22 को एमडी एवं सीईओ, श्री राजकिरण रै जी. द्वारा कें. का. एनेक्स, मंगलूरु और क्षे.म.प्र.का., मंगलूरु का दौरा किया. जिसमें मंगलूरु से अंचल प्रमुख, श्री एम. रवीन्द्र बाबू, ट्रैज़ैक्शन बैंकिंग के महाप्रबंधक, श्री आर. रथीश, मंगलूरु अंचलाधीन क्षेत्रीय कार्यालयों के क्षेत्र प्रमुख गण एवं अन्य वरिष्ठ कार्यपालक गण उपस्थित थे.

दि. 08.06.22 को ग्राहक संपर्क कार्यक्रम में अध्यक्षता करते हुए अपर कलेक्टर श्री राहुल शर्मा, एसएलबीसी के सदस्य सचिव, श्री कृषिकान्त शर्मा, एसबीआई के उप महाप्रबंधक, श्री बंगार राजू गारु, शाखा प्रमुख नलगोंडा श्री सत्य नारायण रेड्डी व शाखा प्रमुख नालगोंडा, श्री ए साइदुलु.

दि. 01.04.22 को श्री राजकिरण रै जी., एम डी एवं सीईओ का क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, बेंगलूरु का दौरा. कुल व्यवसाय 17 ट्रिलियन रुपए के लक्ष्य प्राप्ति के यादगार पल.

दि. 16.05.22 को कार्यपालक निदेशक, श्री नितेश रंजन द्वारा क्षे. म.प्र.का., बेंगलूरु का दौरा किया गया. जिसमें श्री आलोक कुमार, क्षेत्र महाप्रबंधक, बेंगलूरु; श्री सुनील कुमार यादव, उप अंचल प्रमुख, श्री टी नंजुडप्पा, क्षेत्र प्रमुख, बेंगलूरु दक्षिण एवं अन्य कार्यपालक एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

दि. 30.04.22 को श्री पी. एस. श्रीधरन पिल्लै, माननीय राज्यपाल, गोवा द्वारा नेल्लिकोड शाखा के नये परिसर का उद्घाटन किया गया, जिसमें श्री एम. वी. रवीन्द्र बाबू, क्षेत्र महाप्रबंधक, मंगलूरु; श्री टी. ए. नारायणन, क्षेत्र प्रमुख; एवं स्टाफ सदस्य तथा ग्राहक उपस्थित रहे.

दि. 04.06.22 को एर्णाकुलम में श्री अशोक चंद्र, मुख्य महाप्रबंधक, कें.का. द्वारा आस्ति वसूली शाखा का शुभारंभ किया गया, जिसमें श्री रवीन्द्र बाबू, क्षेत्र महाप्रबंधक, मंगलूरु; श्री देवराज आर., क्षेत्र प्रमुख, एर्णाकुलम (ग्रामीण); श्री टी. ए. नारायणन, क्षेत्र प्रमुख, कोषिक्कोड; श्री मंजुनाथस्वामी सी जे, क्षेत्र प्रमुख, एर्णाकुलम; श्री श्याम सुंदर, क्षेत्र प्रमुख, कोल्लम एवं अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

एर्णाकुलम क्षेत्र की ऊरमना शाखा के नए परिसर का उद्घाटन श्री एस. डी. शिबुलाल, सह-संस्थापक, इन्फोसिस द्वारा किया गया, जिसमें श्री ई. पी. जॉर्ज, राममंगलम, पंचायत अध्यक्ष; श्री रवीन्द्र बाबू, क्षेत्र महाप्रबंधक, मंगलूरु; श्री मंजुनाथस्वामी सी. जे., क्षेत्र प्रमुख, एर्णाकुलम तथा श्री एबिन कुरियचन, ऊरमना शाखा प्रमुख उपस्थित रहे.

दि. 21.06.22 को क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, हैदराबाद में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें श्री सुरेश चन्द्र तेली, क्षेत्र महाप्रबंधक तथा हैदराबाद स्थित विभिन्न कार्यालयों से क्षेत्र प्रमुख, एवं स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया.

दि. 21.06.22 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर क्षे.का. कोषिकोड द्वारा सहजा योग कार्यक्रम का उद्घाटन श्री टी. ए. नारायणन, क्षेत्र प्रमुख, कोषिक्कोड द्वारा किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि श्री संतोष पी. सी., संयोजक सदस्य, सहजा योग, केरल राज्य एवं श्री विशु कुमारा यू., उप क्षेत्र प्रमुख, स्टाफ तथा ग्राहक गण उपस्थित रहे.

दि. 31.05.22 को क्षे. का. मदुरै द्वारा रामेश्वरम् एवं सायलकुडी शाखा के स्वयं सहायता सेवा समूहों (SHG) हेतु लोन मेले का आयोजन किया गया. जिसमें श्री जी. श्रीनिवास राव, संयुक्त निदेशक (महालिर तित्तम) रामनाथपुरम् एवं सर्वोदया फ़ाउंडेशन के सीईओ, श्री पी. राजन, मुख्य अतिथि व क्षेत्र प्रमुख, श्री पी. रामनाथ दिवाकर उपस्थित रहे.

Branch Manager's review meet of Ernakulum Region was held at Ernakulum on 25.04.2022 in the presence of Shri Ravindra Babu, FGM, Mangaluru; Shri Manjunathaswamy C J, RH, Ernakulum and the Branch Managers.

दि. 21.06.22 को क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, विजयवाड़ा द्वारा श्री वी.ब्रह्मानंद रेड्डी, क्षेत्र महाप्रबन्धक, विजयवाड़ा की उपस्थिति में स्वर्ण भारती ट्रस्ट, अतकुर, गन्नवरम में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया, जिसमें लगभग 200 यूनियनाइट्स एवं स्वर्ण भारती ट्रस्ट के छात्रों ने सहभागिता दी.

दि. 30.04.22 को श्री एम. वी. रवीन्द्र बाबू, क्षेत्र महाप्रबंधक, मंगलूरु की उपस्थिति में क्षे.का. कोषिक्कोड में रणनीति बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें श्री टी. ए. नारायणन, क्षेत्र प्रमुख एवं श्री नरसिंह कुमार आर., उप क्षेत्र प्रमुख एवं शाखा प्रमुख गण उपस्थित रहे.

दि. 07-08 मई, 2022 को क्षे.का. पंजागुट्टा द्वारा 'लिपिकीय स्टाफ के लिए सॉफ्ट स्किल पर दो दिवसीय लोकेशनल प्रशिक्षण कार्यक्रम' का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता क्षे.प्र., श्री सी. वी. एन. भास्कर राव द्वारा की गयी व स्टा.प्र.कें., हैदराबाद के संकाय सदस्य द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया.

दि. 27.04.22 को क्षे. का. पंजागुट्टा के अधीन यूएलपी पंजागुट्टा शाखा के पुनर्निर्मित शाखा परिसर का उद्घाटन क्षेत्र महाप्रबन्धक, श्री कबीर भट्टाचार्य द्वारा किया गया, जिसमें क्षे.प्र., पंजागुट्टा श्री सी. वी. एन. भास्कर राव व यूएलपी पंजागुट्टा, शाखा प्रमुख, श्री हेमंत कुमार तथा अन्य स्टाफ सदस्य मौजूद रहे.

दि. 07.05.22 को क्षेत्र महाप्रबंधक, बंगलूरु, श्री आलोक कुमार ने क्षे.का. मैसूरु का दौरा किया, जिस दौरान उन्होंने क्षेत्र प्रमुख, श्री ज्योति कृष्णन सहित मैसूरु के स्टाफ सदस्यों के साथ विचार विमर्श किया.

दि. 22.05.22 को क्षेत्राधीन स्टाफ सदस्यों के लिए हासन में क्रिकेट टूर्नामेंट आयोजित किया गया. इसमें मैसूरु व हासन टीम ने भाग लिया, जिसका उद्घाटन क्षे.प्र., मैसूरू, श्री अनंत के. एस. ने किया. मैसूरु की विजेता टीम के खिलाड़ियों को कप प्रदान किया गया.

दि. 10.05.22 को क्षे.म.प्र. का. हैदराबाद द्वारा शुरू किए गए 'वी टू' केंपेन जो विशेषकर अवार्ड स्टाफ सदस्यों के एनपीए रिकवरी व कैश अपग्रेडेशन में सहभागिता के लिए शुरू किया गया था, के अंतर्गत क्षे.का. पंजागुट्टा हैदराबाद द्वारा 'वी टू' केंपेन के सर्वश्रेष्ठ 20 स्टाफ सदस्यों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया.

दि. 17.06.22 को मैसूरु में एमएसएमई आउटरीच कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें क्षेत्र प्रमुख, श्री अनंत के. एस. उप क्षेत्र प्रमुख, श्री सेल्वा कुमार तथा अन्य शाखा प्रमुख उपस्थित रहे.

दि. 08.06.22 को आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत आइकोनिक सप्ताह महोत्सव के दौरान ग्राहक संपर्क कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें भोंगीर शाखा, क्षे. का. महबूबनगर द्वारा बैंक के लगाए हुए स्टॉल का उद्घाटन, कलेक्टर, सुश्री पामेला सत्यपति ने किया.

दि. 02.06.22 को तेलंगाना दिवस के उपलक्ष्य में महबूबनगर शाखा क्षे.का. महबूबनगर ने स्वयं सहायता समूह को रु. 4 करोड़ के ऋण का संवितरण किया.

सुबह उठते ही सबसे पहले एक गिलास पानी में एक फ्रेश नींबू निचोड़ कर पिएं. इसमें विटामिन सी की अच्छी मात्रा पाई जाती है जो आपके शरीर में मौजूद टॉक्सिन की सफाई करती है और साथ ही आपकी इम्यूनिटी पावर को भी बढ़ाती है. आपको इस संदर्भ में विशेष ध्यान रखना है कि पानी बैठकर पीना है और इसे सिप बाई सिप चाय की तरह धीरे-धीरे पीना है. इससे आपका पेट पूरी तरह से साफ होता है, कब्ज की शिकायत दूर होती है और सबसे खास बात है कि इससे हार्ट अटैक की संभावना खत्म हो जाती है.

सुबह नाश्ते में आप भरपूर मात्रा में सलाद का सेवन करें जिसमें खीरा, ककड़ी, टमाटर, गाजर, चुकंदर इत्यादि शामिल हो. इसके साथ ही फल का भी सेवन कर सकते हैं.

इसके आधे घंटे के बाद आप अंकुरित मूंग, चना, मेथी का एक समान मात्रा में मिश्रण कर उसमें नींबू निचोड़ कर सेवन करें. इसमें आप सेब भी डाल सकते हैं. इसका सेवन एक उच्च स्तरीय ऊर्जा प्रदान करता है.

इसके बाद दलिया का सेवन करें. दलिया के साथ आप सब्जी मिला सकते हैं जैसे: बीन्स, साग इत्यादि. इसमें दाल, चावल, चपाती, बाजरा भी मिला सकते हैं और यह स्वादिष्ट भी होता है. यह हार्ट एवं डायबिटीज के मरीजों के लिए बेहद फायदेमंद होता है.

सबसे महत्वपूर्ण बात है खाने को अच्छी तरह से चबाकर खाना. यदि आप खाने को अच्छी तरह चबाकर खाते हैं तो आपके शरीर को ग्लूकोज, विटामिन्स एवं मिनरल्स की अच्छी मात्रा प्राप्त होती है. इसके विपरीत अगर आप जल्दी-जल्दी खाते हैं, अच्छी तरह से चबाते नहीं तो अपच एवं गैस की शिकायत होती है. इसलिए खाने को इस तरह से चबाइए कि खाना अच्छी तरह से घुलकर स्वत: ही पेट में चला जाए. अगर आप इस तरीके से स्वस्थ नाश्ते का सेवन करते हैं तो निश्चित रूप से आपका दिन स्वस्थ रहेगा.

वैदेही सावंत
क्षे.का. मुंबई (ठाणे)

हरियाणवी मीठे गुलगुले

हरियाणा के लोग खान-पान के बहुत शौक़ीन हैं. खासकर मीठा जैसे-घेवर, गुलगुले, सुहाली (मीठी मठरी), बाजरे की रोटी और सरसों के साग का कोई तोड़ नहीं. हरियाणा की खास मिठाई जो कि विशेष रूप से सावन माह में बेटियों को भेंट स्वरूप दी जाती है, वह है मीठे गुलगुले.

सामग्री :

पानी - 1 कप

गुड़ या चीनी- 1 कप

सौंफ - 1 चम्मच छोटी

आटा - 1½ कप

बेकिंग पाउडर - ½ चम्मच

घी/तेल - तलने के लिए

विधि:-

पानी को गरम करके उसमें चीनी मिलाकर रख लें. फिर उसमें धीरे-धीरे आटा डालें जिससे उसमें गुठलियाँ न पड़ें. घोल न ज्यादा पतला रखें न ज्यादा गाढ़ा. फिर इसमें सौंफ और बेकिंग पाउडर मिला लें. तेल गरम करके चम्मच की सहायता से धीरे-धीरे एक चम्मच डालें और धीमी आंच पर सुनहरा होने तक तलें. लीजिए हो गए गरमागरम गुलगुले तैयार.

मेघा लाम्बा
मॉडल टाउन शाखा, करनाल

यूनियन बैंक की तिमाही द्विभाषिक गृह पत्रिका 'यूनियन धारा', 'राजस्थान विशेषांक' प्राप्त हुआ. यूनियन धारा, राजस्थान विशेषांक में राजस्थान की भौगोलिकता, त्योहारों, व्यंजनों, राजाओं के इतिहास, लोक देवताओं, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, स्थापत्य कला, राजस्थानी कहावतों आदि के साथ-साथ राजस्थान में यूनियन बैंक के सफर के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई. पत्रिका में चित्रांकन बहुत ही चोखो (राजस्थानी शब्द-अच्छा) है. पत्रिका में बैंक के समाचारों एवं गतिविधियों के समावेशन से पत्रिका की शोभा बढ़ी है. पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन हेतु आपकी टीम को बहुत बहुत शुभकामनाएं.

- इन्द्रप्रीत गुलाटी
प्रशासनिक अधिकारी (राजभाषा)
भारतीय जीवन बीमा निगम, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका 'यूनियन धारा' का नवीनतम 46 वां अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद. हमें प्रसन्नता है कि दबावग्रस्त आस्ति प्रबंधन पर केन्द्रित यह अंक पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी होने के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी को अधिक सशक्त बनाने में सहायक है. आपका यह प्रयास सराहनीय एवं अनुकरणीय है.

पत्रिका में साहित्य, भारतीय अर्थव्यवस्था एवं बैंकिंग उद्योग से जुड़े महत्त्वपूर्ण एवं जटिल विषयों को सरल एवं सारगर्भित रूप में समाहित करने का सार्थक प्रयास किया गया है. काव्य धारा, सेवानिवृत्त जीवन से, यूनिवन, हेल्थ टिप्स / व्यंजन, आपकी पाती जैसे विषय पत्रिका को अधिक रोचक और आकर्षक बनाते हैं, इससे पाठक वर्ग में हिन्दी के प्रति चिंतन-मनन की प्रतिक्रिया और कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग का वातावरण उत्तरोत्तर बेहतर होगा. पत्रिका की संकल्पना, साज-सज्जा और सम्पूर्ण कलेवर बहुत आकर्षक एवं सुंदर है. पत्रिका के संपादक मंडल को साधुवाद. हमें आशा है कि भविष्य में भी हिन्दी को सशक्त बनाने में कलात्मकता एवं नवोन्मेषिता से परिपूर्ण आपका यह प्रयास जारी रहेगा. शुभकामनाओं सहित.

- काज़ी मु. ईसा
महाप्रबंधक, भारतीय रिजर्व बैंक, राजभाषा विभाग, कें.का. मुंबई

आपके द्वारा प्रेषित पत्र संदर्भ: राभा: यूधा: 2022, दिनांक 07.05.2022 के माध्यम से बैंक की तिमाही द्विभाषी हिन्दी गृह पत्रिका 'यूनियन धारा' का दिसम्बर 21 'दबावग्रस्त आस्ति प्रबंधन' अंक का अवलोकन किया. अधिकारियों के सृजनात्मक व बौद्धिक लेख और संपादन मंडल द्वारा सचित्र उल्लेखित अन्य गतिविधियां अत्यंत प्रशंसनीय एवं अनुसरणीय हैं. हार्दिक शुभकामनाएं.

- अभिलाषा मिश्रा
उप निदेशक (कार्यान्वयन)
भारत सरकार, गृह मंत्रालय, (राजभाषा विभाग) नई दिल्ली

हमें आपके बैंक की तिमाही गृहपत्रिका 'यूनियन धारा' की प्रति प्राप्त हुई धन्यवाद ! आपकी इस पत्रिका में प्रकाशित आलेख 'एनपीए की वसूली समाधान', 'सरफेसी अधिनियम' एवं अन्य रचनाएं पठनीय एवं ज्ञानवर्द्धक हैं. इसमें बैंक की गतिविधियों एवं अन्य खबरों का व्यवस्थित रूप से समावेश किया गया है. इसके प्रकाशन से जुड़ी टीम का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है. आशा है भविष्य में भी आप अपने स्तर पर हो रहे राजभाषा कार्यान्वयन व तत्संबंधी गतिविधियों से हमें अवगत कराएंगे.

- उमानाथ मिश्र
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
बैंक ऑफ बड़ौदा, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, मुंबई

यूनियन धारा 'राजस्थान विशेषांक' को पढ़ने का सौभाग्य मिला. इस अंक में राजस्थान की संस्कृति पर अत्यंत सूचनाप्रद और ज्ञानवर्धक सामग्री प्रकाशित की है. इस अंक में हम राजस्थान की भाषा, साहित्य, संस्कृति, लोक कला और लोक गीत आदि से परिचित हो गए. इस अंक में किए गए संकलन से संपादक और उनकी टीम की दूरदृष्टि का पता चलता है.

इस प्रकार की अध्ययन सामग्री प्रकाशित करने की आवश्यकता है. भारत विभिन्न कलाओं का देश है. भारतवर्ष का प्रत्येक प्रांत अपनी कला और धरोहर के लिए विश्व में विख्यात है. भारत के प्रत्येक प्रांत की धरोहर पर अनुसंधान की आज आवश्यकता है. भारतवर्ष में राजस्थान लोकगीत और लोकनृत्य का गढ़ है. जैसे बंजारा गीत और बंजारा नृत्य का आविष्कार राजस्थान से ही हुआ और भारतवर्ष के कोन-कोने में पहुंचा. आज कालबेलिया नृत्य का मंचन विश्व में हो रहा है. इस अंक के माध्यम से अच्छी जानकारी प्राप्त हुई. मैं आपका प्रत्येक अंक पढ़ता हूं.

संपादक महोदया, डॉ. सुलभा कोरे और उनकी टीम को हार्दिक बधाई.

- रतन जगन्नाथ गिरि
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
पंजाब नैशनल बैंक, अंचल कार्यालय, मुंबई

यहां सब हवा, आसमान, जल, भूमि का व्यवहार
घरों और ज़िंदगियों से सटा हुआ यहां का समंदर
और दूर-दूर आसमान तक फैला यह शहर
यहां प्रकृति के साथ खेलता जीवन का बवंडर

कविता : डॉ. सुलभा कोरे
यूनियन धारा, कें. का. मुंबई

विजिन्जम बीच, केरल
छायाचित्र : संदीप मल्लिक,
क्षे.का. पंजागुट्टा हैदराबाद

Union Dhara, R.N.27989/76

Printed and Published by Dr. Sulabha Shrikant Kore on behalf of Union Bank of India, Printed at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd., 65, Ideal Ind. Estate, Mathuradas Mill Compound, S. B. Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013, and Published from Union Bank of India, 239, Union Bank Bhawan, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021. Editor - Dr. Sulabha Kore.